आर.एन.आई. पंजीयन क्रमांक 45215/86

ज्योतिष ,स्वास्थ्य एवं सुसंस्कार की शिक्षाप्रद पत्रिका

जीवन वैभव

स्थापना वर्ष : 36 | वर्ष अंक : 4 | अक्टूबर से दिसम्बर 2022

इस अंक के आकर्षण

- ग्रहों का गोचर
- आईटी सॉफ्टवेयर इंजीनियर बनने के ग्रहयोग एवं कुछ कुंडली विवेचन
- जन्म कुंडली में राहु की अन्य ग्रहों से युति
- अष्टकवर्ग क्या है? इनके अंको का महत्वपूर्ण प्रभाव
- भाग्य, ज्योतिष और कर्म के आपसी सम्बन्धों का लाभ कैसे उठाएं।
- अखरोट सेवन करने के अनजाने लाभ
- दीर्घायु के ज्योतिषीय सूत्र
- जीवन के ऋण और उनका पर्यावरण से निवारण
- फलित ज्योतिष में सूर्य यंत्र और अंक ज्योतिष
- पांच दिवस की पर्व श्रृंखला दीपावली पर्व
- त्रैमासिक राशि भविष्य फल व्रतपर्व एवं शुभ मुहूर्त

मूल्य : 50 रु.

समृद्धिदायक है महालक्ष्मी अष्ट्क

नमस्तेस्तु महामाये श्री पीठे सुर पूजिते!
शंख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
नमस्तेतु गरुदारुढै कोलासुर भयंकरी!
सर्वपाप हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
सर्वज्ञे सर्व वरदे सर्व दुष्ट भयंकरी!
सर्वदुख हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
सिद्धि बुद्धि प्रदे देवी भक्ति मुक्ति प्रदायनी!
मंत्र मुर्ते सदा देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
आध्यंतरहीते देवी आद्य शक्ति महेश्वरी!
योगजे योग सम्भुते महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
स्थूल सुक्ष्मे महारोद्रे महाशक्ति महोदरे!
महापाप हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
पद्मासन स्थिते देवी परब्रह्म स्वरूपिणी!
परमेशी जगत माता महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
श्वेताम्भर धरे देवी नानालन्कार भुषिते!
जगत स्थिते जगंमाते महालक्ष्मी नमोस्तुते!!
महालक्ष्मी अष्टक स्तोत्रं य: पठेत भक्तिमान्नर:!
सर्वसिद्धि मवाप्नोती राज्यम् प्राप्नोति सर्वदा!!
एक कालम पठेनित्यम महापापविनाशनम!
द्विकालम य: पठेनित्यम धनधान्यम समन्वित:!!
त्रिकालम य: पठेनित्यम महाशत्रुविनाषम!
महालक्ष्मी भवेनित्यम प्रसंनाम वरदाम शुभाम!!

जीवन वैभव

परिवार की ओर से

संपादक
डॉ. पं. हेमचन्द्र पाण्डेय

नवरात्रि एवं दीपावली

पर्व की हार्दिक शुभकामनाएँ

जीवन वैभव

ज्योतिष, स्वास्थ्य एवं सुसंस्कार
की शिक्षाप्रद पत्रिका

स्थापना वर्ष : 36, अंक-4, अक्टूबर से दिसंबर 2022

●

संपादक
डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

●

सहायक संपादक
अरविन्द पाण्डेय
आशुतोष पाण्डेय

●

कानूनी सलाहकार
श्री अजय दुबे, श्री बी.एस. शुक्ला

●

सलाहकार मण्डल
श्रीमती पुष्पा चौहान, श्री मनोज अग्निहोत्री, सुनील भण्डारी (मुम्बई), सौरभ पुरोहित, विनोद जोशी, डॉ. अरविंद राय

●

प्रकाशन कार्यालय : 15-ए, प्रेस कॉम्पलेक्स
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल मोबा. : 9425008662

(सम्पादक मण्डल के सभी सदस्य मानसेवी हैं।)

सभी प्रकार के विवाद का न्याय-क्षेत्र भोपाल रहेगा।

मूल्य

एक प्रति - 50 रूपये
वार्षिक - 200 रूपये
त्रैवार्षिक - 500 रूपये
आजीवन - 5000 रूपये

अनुक्रमणिका

क्र.	विवरण	पृष्ठ क्र.
1.	वंदना	2
2.	सम्पादक की कलम से	3
3.	वैभव दर्शन	5
4	कैसे प्रकट हुईं महादुर्गा	6
5	ग्रहों का गोचर	7
6	आईटी साफ्टवेयर इंजीनियर बनने के ग्रहयोग एवं कुछ कुंडली विवेचन	9
7	जन्म कुंडली में राहु की अन्य ग्रहों से युति	11
8	अष्टकवर्ग क्या है? इनके अंकों का महत्वपूर्ण प्रभाव	13
9	भाग्य, ज्योतिष और कर्म के आपसी सम्बन्धों का लाभ कैसे उठाएं	15
10	अखरोट सेवन करने के अनजाने लाभ	21
11	वास्तु पुरुष की उत्पत्ति	22
12	दीर्घायु के ज्योतिषीय सूत्र	23
13	जीवन के ऋण और उनका पर्यावरण से निवारण	25
14	फलित ज्योतिष में सूर्य यंत्र और अंक ज्योतिष	27
15	पांच दिवस की पर्व श्रंखला दीपावली पर्व	33
16.	त्रैमासिक राशि भविष्य फल	35
17.	त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त	39
18.	आपके पत्र	42

सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा।

स्वामित्व, प्रकाशक, मुद्रक, श्रीमती प्रेमलता पाण्डेय, 15-ए, इंदिरा प्रेस कॉम्प्लेक्स, भोपाल से प्रकाशित एवं गेश प्रिंट्स, 105-ए, सेक्टर-एफ, गोविन्दपुरा, भोपाल-462011 (म.प्र.) से मुद्रित, संपादकः डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय।

संस्थापक-संपादकः स्वर्गीय श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय, स्वर्गीय श्री व्यंकटराव जी यादव

वन्दना

महालक्ष्म्यष्टकम्

नमस्तेस्तु महामाये श्री पीठे सुर पूजिते।
शंख चक्र गदा हस्ते महालक्ष्मी नमोस्तुते ।1।

नमस्ते गरुदा रुढ़ै कोलासुर भयंकरी।
सर्वपाप हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते ।2।

सर्वज्ञे सर्व वरदे सर्व दुष्ट भयंकरी।
सर्वदुख हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते ।3।

सिद्धि बुद्धि प्रदे देवी भुक्ति मुक्ति प्रदायनी।
मंत्र पूते सदा देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते ।4।

आद्यन्तरहीते देवी आद्य शक्ति महेश्वरी।
योगजे योग संभूते महालक्ष्मी नमोस्तुते ।5।

स्थूल सूक्ष्मे महा रौद्रे महाशक्ति महोदरे।
महापाप हरे देवी महालक्ष्मी नमोस्तुते ।6।

पद्मासन स्थिते देवी परब्रह्म स्वरूपिणी।
परमेशी जगत माता महालक्ष्मी नमोस्तुते ।7।

श्वेताम्भर धरे देवी नानालन्कार भूषिते।
जगत स्थिते जगन्तातर्महालक्ष्मी नमोस्तुते ।8।

इन्द्र बोले- श्रीपीठपर स्थित और देवताओंसे पूजित होनेवाली हे महामाये। तुम्हें नमस्कार है। हाथमें शंख, चक्र और गदा धारण करनेवाली हे महालक्ष्मि ! तुम्हें प्रणाम है ॥1॥ गरुड़ पर आरूढ़ हो कोलासुर को भय देने वाली और समस्त पापों को हरने वाली हे भगवति महालक्ष्मी ! तुम्हें प्रणाम है॥2॥ सब कुछ जानने वाली, सबको वर देने वाली, समस्त दुष्टों को भय देने वाली और सबके दुःखों को दूर करने वाली हे देवि महालक्ष्मी ! तुम्हें नमस्कार है॥3॥ सिद्धि, बुद्धि, भोग और मोक्ष देने वाली हे मन्त्रपूत भगवति महालक्ष्मी ! तुम्हें सदा प्रणाम है॥4॥ हे देवि ! हे आदि-अंतरहित आदिशक्ते ! हे महेश्वरि! हे योग से प्रकट हुई भगवति महालक्ष्मी ! तुम्हें नमस्कार है॥5॥ हे देवि ! तुम स्थूल, सूक्ष्म एवं महारौद्ररूपिणी हो, महाशक्ति हो, महोदरा हो और बड़े-बड़े पापों का नाश करने वाली हो। हे देवि महालक्ष्मी ! तुम्हें नमस्कार है॥6॥ हे कमल के आसन पर विराजमान परब्रह्म स्वरूपिणी देवि ! हे परमेश्वरि ! हे जगदम्ब ! हे महालक्ष्मी ! तुम्हें मेरा प्रणाम है॥7॥ हे देवि ! तुम श्वेत वस्त्र धारण करने वाली और नाना प्रकार के आभूषणों से विभूषिता हो। सम्पूर्ण जगत में व्याप्त एवं अखिल लोक को जन्म देने वाली हो। हे महालक्ष्मी ! तुम्हें मेरा प्रणाम है॥8॥

सम्पादक की कलम से...

सम्माननीय पाठक बन्धु

सहृदय हरिस्मरण

जीवन वैभव प्रकाशन विगत 36 वर्षों से आपको ज्ञानामृत प्रदाय करता आया है। आर्थिक कठिनाईयों के बाद भी नियमितता रखी गई है तथा विद्वान लेखकों से सम्पर्क करते हुए उनके उत्तम अमूल्य आलेख प्राप्त किए जाकर प्रस्तुत किए जाते रहे है इनमें प्रमुखतः हमारी प्राच्य संस्कृति, व्रत पर्व एवं संस्कार, दीर्घ जीवन के लिए सुस्वास्थ्य, नैतिकता और जीवन में शांति और सौहार्द के लिए जीवनोपयोगी जानकारी, फलित ज्योतिष, नैतिक और आध्यात्मिक ज्ञान के साथ पूरे परिवार के लिए पठनीय सामग्री प्रेषित की जाती रही है। जिसे सभी ने सराहा है।

कागज, छपाई, ट्रांसपोर्ट आदि के दाम की वृद्धि के कारण जीवन वैभव के दाम में विगत पांच वर्षों के मंथन के बाद इस अंक से मूल्य वृद्धि की गई है। आशा है जीवन वैभव की उपयोगिता को दृष्टिगत रखते हुए जीवन वैभव परिवार से जुड़े रहेगे जिससे जीवन पथ के अनेको उतार चढ़ाव को कुशलता से पार कर सके तथा सुसंस्कार, आध्यात्म, स्वास्थ्य परामर्श तथा ज्योतिष शास्त्र के फलित विज्ञान के दिशा दर्शन का लाभ उठाते रहेंगे और इस ज्ञान यज्ञ में सहभागी बने रहेंगे।

हमें विश्वास है कि आप इस परिवार की सदस्य संख्या भी बढ़ाते हुए सभी पाठक अपनी सदस्यता को नियमित रखेगें तथा इस ज्ञान को स्वयं एवं अपने परिवार को प्रदाय करते हुए अपनी प्रतिक्रिया से अवगत कराएंगे।

सभी पाठको को दीपावली पव की शुभ कामनाए

आपका सदैव शुभेच्छु
डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
संपादक

अमृत घट

1. दुनिया में इज्जत के साथ जीने का सबसे छोटा और सबसे कारगर उपाय यह है कि हम जो कुछ बाहर से दिखाना चाहते हैं, वैसे ही वास्तव में होगी। **- सुकरात**

2. केवल अपने मुंह से अपनी बढ़ाई करने से कोई मूर्ख संसार में प्रतिष्ठा नहीं पा सकता। **- महाभारत**

3. प्रेम ही स्वर्ग का मार्ग है, मनुष्यत्व का दूसरा नाम है, समस्त प्राणियों से प्रेम करना ही सच्ची मनुष्यता है। **- भगवान बुद्ध**

4. सच बोलने वाला कम बोलता है और अधिक बोलने वाला झूठ पर जो तोलकर बात नहीं करता उसे कठोर बातें सुननी पड़ती है। **- स्वेट मार्डन**

5. ज्यादा बोलने की आदत अच्छी नहीं होती, इससे आदमी हल्का समझा जाता है। इसलिए बहुत बोलने की बजाय बहुत सुनना कहीं अच्छा है। **- संत तुलसीदास**

6. बुद्धिमान मनुष्य एक पैर आगे बढ़ाता है लेकिन एक पैर पीछे जमा रहता है, जब तक वह दूसरे स्थान की भलीभांति परीक्षा नहीं कर लेता, तब तक पहले स्थान को नहीं छोड़ता। **- चाणक्य**

7. लोभ से बुद्धि नष्ट होती है, बुद्धि नष्ट होने से लज्जा, लज्जा नष्ट होने से धर्म तथा धर्म नष्ट होने से धन और सुख नष्ट हो जाता है। **- स्वामी विवेकानंद**

8. उत्साह अत्यंत बलवान है, उत्साह सरीखा दूसरा बल नहीं, उत्साही पुरुष को लोक में कुछ भी दुर्लभ नहीं है। **- स्वामी रामकृष्ण परम**

9. जो पुरुष चिंता कष्ट आ पढ़ने पर व्याकुल नहीं होते वास्तव में वे ही पुरुष धैर्यशील होते हैं। अर्थात धीर पुरुष आपत्ति में धीरज से काम लेते हैं घबराते नहीं। **- कवि कालिदास**

10. जो व्यक्ति काम करने में प्रसन्नता अनुभव करता है और उसे उत्साह और उल्लास के साथ करता है, वह बेकारी की दलदल में कभी नहीं पढ़ सकता। **- जेम्स एमने**

वैभव दर्शन

माता पिता बालक के प्रथम गुरु

स्व. श्री रामचन्द्र जी पाण्डेय
संस्थापक संपादक

समाज में अच्छे नागरिक बनाने का पहला दायित्व माता पिता का है। बचपन में जो संस्कार बालक को मिलते है उन्हीं संस्कारों से बालक बड़ा होकर अपना जीवन का मार्ग तय करता है। पत्रिका के संस्थापक सम्पादक ने समाज के माता पिता के लिए इस प्रकार शिक्षा दी है, पाठकों के लाभार्थ प्रस्तुत है। - सम्पादक

हमें अपने समाज सुधार के प्रति भी दायित्व जीवन में निर्वहन करना चाहिए। देश में अच्छे समाज का निर्माण करना परिवार के बड़े सदस्य तथा माता पिता पर निर्भर करता है। बालक को इच्छी शिक्षा के साथ-साथ समाज में अच्छे संस्कार की भावना बालक के मन में उत्पन्न करना, महापुरुषों के जीवन चरित्र से शिक्षा तथा अच्छी आदत डालना बच्चे के बचपन में ही होना चाहिए। बालक की अच्छे मित्रों से मित्रता तथा धनात्मक सोच का वातावरण देने से बालक में आत्मविश्वास की भावना बढ़ती है जोकि सफलता की प्रथम सीढ़ी होती है।

किसी बालक का चरित्र निर्माण उसके माता-पिता पर अधिक निर्भर करता है। क्योंकि बालकठ का चरित्र निर्माण उसकी आदतों एवं स्थाईभावों की मूल प्रवृत्तियों, स्वभाव एवं संकल्प शक्तियों पर आधारित होता है। इन आवश्यकताओं की बचपन से आदत डालना माता-पिता का दायित्व होता है। अच्छी आदतें स्थाई भावों का रूप ग्रहण कर प्रत्येक स्थिति में चरित्र निर्माण के सहायक बन सकती है। इस कारण माता-पिता को चाहिए कि अपने बालकों में अच्छी आदते डालें। बालक का चरित्र मिट्टी के कच्चे घड़े के समान होता है जिसे कुशल कुम्हार जिस प्रकार अपने हल्के हाथों से सम्भालते हुए सुडौल एवं सुन्दर बनाता है एवं परिपक्व करते हुए कार्य के लिए योग्य बनाता है । उसी प्रकार बालक के चरित्र को भी सुन्दर एवं उज्जवल बनाने का प्रथम दायित्व माता पिता का है। माताओं को चाहिए कि बालक को लाड़ प्यार के साथ कर्तव्य परायणता, सहनशीलता, निस्वार्थता तथा आपस में मिलजुलकर रहने की आदत बचपन में ही प्रदान करें, बालक को झूठी बातों से समझाना, निहीत स्वार्थों की पूर्ति के लिए बालक को किसी पास पड़ौसी या रिश्तेदार की बुराई करना एवं उनके बारे में जानकारी जुटाने में बालक को नहीं लगाना चाहिए अन्यथा बचपन से ही बालक विपरीत बुद्धि का होकर अनावश्यक रूप ईर्ष्या, द्वेष एवं बुराई करने की आदत सीख लेगा जो कि उसके भावी जीवन के लिए कष्टप्रद साबित होगा।

घर में बालक को नैतिक विचारधारा, गुण एवं सच्चरित्रता का पाठ सीखाना चाहिए। घर का वातावरण प्रसन्नता का रखना चाहिए। बालक का स्वथ्य मस्तिष्क रहे इसके लिए घर में बच्चों के साथ बैठकर प्रसन्नता से चर्चा करना और थोड़ा समय आपस में विचार विमर्श के लिए देना चाहिए ताकि बच्चा अपने आपको उपेक्षा का शिकार नहीं समझे।

स्वावलम्बन की प्रेरणा बालक को बचपन से ही देना चाहिए। जिससे आत्मनिर्भरता के प्रति बालक की रूचि जाग्रत हो सके। बालक अपने कार्य के प्रति आश्वस्त होकर उच्च भावना, सफलता की ओर आशान्वित होकर प्रगति की ओर अग्रसर हो सके एवं कभी भी हीन भावनाएं बालक में नही आ सकें। इसके लिए आवश्यक है बालक को स्वावलम्बन की प्रेरणा दी जाए।

नवरात्री विशेष

कैसे प्रकट हुईं महादुर्गा, किस देवता ने दिए उन्हें कौन से अस्त्र-शस्त्र

संकलन - आलोक श्रीवास्तव भोपाल

देवी भगवती ने असुरों का वध करने के लिए कई अवतार लिए। सर्वप्रथम महादुर्गा का अवतार लेकर देवी ने महिषासुर का वध किया था। दुर्गा सप्तशती में देवी के अवतार का स्पष्ट उल्लेख आता है, जिसके अनुसार- एक बार महिषासुर नामक असुरों के राजा ने अपने बल और पराक्रम से देवताओं से स्वर्ग छिन लिया। जब सारे देवता भगवान शंकर व विष्णु के पास सहायता के लिए गए। पूरी बात जानकर शंकर व विष्णु को क्रोध आया तब उनके तथा अन्य देवताओं के मुख से तेज प्रकट हुआ, जो नारी स्वरूप में परिवर्तित हो गया।

शिव के तेज से देवी का मुख, यमराज के तेज से केश, विष्णु के तेज से भुजाएं, चंद्रमा के तेज से वक्षस्थल, सूर्य के तेज से पैरों की अंगुलियां, कुबेर के तेज से नाक, प्रजापति के तेज से दांत, अग्नि के तेज से तीनों नेत्र, संध्या के तेज से भृकुटि और वायु के तेज से कानों की उत्पत्ति हुई।

इसके बाद देवी को शस्त्रों से सुशोभित भी देवों ने किया। देवताओं से शक्तियां प्राप्त कर महादुर्गा ने युद्ध में महिषासुर का वध कर देवताओं को पुनः स्वर्ग सौंप दिया। महिषासुर का वध करने के कारण उन्हें ही महादुर्गा को महिषासुरमर्दिनी भी कहा जाता है।

देवताओं ने दिए माता दुर्गा को शस्त्र

देवी भागवत के अनुसार, शक्ति को प्रसन्न करने के लिए देवताओं ने अपने प्रिय अस्त्र-शस्त्र सहित कई शक्तियां उन्हें प्रदान की। इन सभी शक्तियों को प्राप्त कर देवी मां ने महाशक्ति का रूप ले लिया-

1. भगवान शंकर ने मां शक्ति को त्रिशूल भेंट किया।
2. भगवान विष्णु ने सुदर्शन चक्र प्रदान दिया।
3. वरुण देव ने शंख भेंट किया।
4. अग्निदेव ने अपनी शक्ति प्रदान की।
5. पवनदेव ने धनुष और बाण भेंट किए।
6. इंद्रदेव ने वज्र और घंटा अर्पित किया।
7. यमराज ने कालदंड भेंट किया।
8. प्रजापति दक्ष ने स्फटिक माला दी।
9. भगवान ब्रह्मा ने कमंडल भेंट दिया।
10. सूर्य देव ने माता को तेज प्रदान किया।
11. समुद्र ने मां को उज्जवल हार, दो दिव्य वस्त्र, दिव्य चूड़ामणि, दो कुंडल, कड़े, अर्धचंद्र, सुंदर हंसली और अंगुलियों में पहनने के लिए रत्नों की अंगूठियां भेंट कीं।
12. सरोवरों ने उन्हें कभी न मुरझाने वाली कमल की माला अर्पित की।
13. पर्वतराज हिमालय ने मां दुर्गा को सवारी करने के लिए शक्तिशाली सिंह भेंट किया।
14. कुबेर देव ने मधु (शहद) से भरा पात्र मां को दिया।

इस आदिशक्ति मां भगवती की हम वंदना पूजन करते हैं।

ग्रहों का गोचर

गोचर का अर्थ एवं महत्व

डॉ. आर के पाठक मयंक

'गोचर' शब्द संस्कृत भाषा के दो शब्दों से मिलकर बना है : गो और चर। गो का अर्थ हैः आकाश तथा चर का अर्थ हैः विचरण करना। इस प्रकार शाब्दिक दृष्टिकोण से गोचर का अर्थ आकाश में विचरण करने वाले ग्रहों से संबंधित है।

पीयूष धारा पुस्तक के लेखक गोविंद के अनुसार जन्म राशि से प्रशस्त एवं निषिद्ध स्थानों पर स्थित भ्रमणरत ग्रहों का शुभ अशुभ फल कथन ही गोचर है।

फलित ज्योतिष में गोचर का महत्व- फलित ज्योतिष में गोचर का बहुत महत्व है। जन्म कुंडली, दशाएं, वर्ष कुंडली आदि से किया हुआ फल कथन गोचर के बिना अपूर्ण ही रहता है। ग्रहों का गोचर का महत्व इस प्रकार से समझा जा सकता है।

1) व्यक्ति के जीवन में जन्मकुंडली का विशेष महत्व होता है परंतु जन्म कुंडली भी जन्म के समय तात्कालिक ग्रहों के विभिन्न राशियों में गोचर के आधार पर ही बनाई जाती है। अर्थात वहां पर भी ग्रहों का तात्कालिक गोचर ही द्वादश भाव में स्थापित किया जाता है जिसका पूरे जीवन में उस जातक के लिए विशेष महत्व होता है।

2) महादशा, अंतर्दशा की दीर्घ अवधि होती है परंतु उस अवधि में कब कब और कौन सी घटनाएं स्पष्ट रूप से घटित होंगी, उनका सूक्ष्म समय ज्ञात करने के लिए संबंधित ग्रह की गोचर स्थिति का भी अध्ययन आवश्यक होता है।

3) प्रायः हम लोगों के पास ऐसे भी बहुत से लोग आते हैं जिनके पास में न तो जन्मपत्री है और ना ही जन्म का विवरण उपलब्ध है। यदि उनके प्रश्न का उत्तर देना है तो उनके जन्म नाम से ही जन्म राशि ज्ञात करके उनके जीवन में होने वाली शुभ-अशुभ घटनाओं की जानकारी केवल गोचर पद्धति या तात्कालिक प्रश्न कुंडली द्वारा ही देना संभव है, क्योंकि ऐसे लोगों के लिए महादशा पद्धति या वर्षफल पद्धति उपयोगी नहीं है।

4) शनि की साढ़ेसाती और ढैय्या का आंकलन भी शनि के गोचर के आधार पर ही होता है और उसके शुभता और अशुभता को हम गोचर के आधार पर और जन्म कुंडली में स्थिति के आधार पर बताते हैं।

5) प्रायः दैनिक समाचार पत्रों में या पत्र-पत्रिकाओं में, ज्योतिष के विभिन्न ऐप, प्रोग्राम में जो दैनिक, साप्ताहिक, मासिक और वार्षिक राशिफल बताया जाता है वह भी व्यक्ति के चंद्र राशि से गोचरस्थ चंद्र एवं अन्य ग्रहों की गोचर स्थिति के आधार पर ही दिया जाता है।

उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि भारतीय ज्योतिष में गोचर का विशेष महत्व है। प्राचीन समय में गोचर का अध्ययन संहिता ज्योतिष के एक भाग के रूप में किया जाता था परंतु मध्यकालीन युग के उपरांत इसे पृथक स्कंध के रूप में स्वीकार किया जाता है।

गोचरस्थ ग्रहों की गणना कहां से करें?

गोचरस्थ ग्रहों की गणना किस बिंदु से हो, इस संबंध में दो मत उपलब्ध हैं-

1) वैदिक ज्योतिषीय मत

2) पाश्चात्य ज्योतिषीय मत

हम वैदिक ज्योतिषीय मत पर अपना पक्ष प्रस्तुत करेंगे।

वैदिक ज्योतिषीय मत- वैदिक ज्योतिषीय मत जिसे भारतीय ज्योतिषीय गोचर पद्धति भी कहा जाता है। इस पद्धति के अंतर्गत गोचरस्थ ग्रहों की गणना के तीन बिंदु बताए गए हैं-

1) गोचरस्थ ग्रहों की गणना जन्म कालीन चंद्रमा से।

2) गोचरस्थ ग्रहों की गणना जन्म लग्न से।

3) ग्रह की जन्म कालिक राशि से।

अब प्रश्न उठता है कि तीनों में से कौन सा मत लिया जाए।

उपरोक्त तीनों मतों में सबसे अधिक प्रचलित गोचरस्थ ग्रहों की गणना जन्म कालीन चंद्रमा से होती है। इसके पीछे एक महत्वपूर्ण कारण है।

जैसा कि आप सभी जानते हैं चंद्रमा पृथ्वी के सबसे अधिक निकट का ग्रह है। यह सबसे तेज चलने वाला ग्रह है, जो सवा दो दिन में ही एक राशि को पार कर जाता है। इसका प्रभाव पृथ्वी वासियों पर अन्य ग्रहों की अपेक्षा अधिक पड़ता है। चंद्रमा को मन या चित्त का कारक भी माना गया है।

कहा गया है

चंद्रमा मनसो जातः

अर्थात मन और मस्तिष्क पर चंद्रमा का सबसे अधिक प्रभाव होता है। व्यक्ति की मन- स्थिति को चंद्रमा ही अभिव्यक्त करता है किसी जातक की भौतिक परिस्थितियां चाहे कितनी भी खराब क्यों ना हों, यदि उसका चंद्र अच्छा है अतः उसका मनोबल अच्छा है तो उस व्यक्ति को परिस्थितियां इतनी खराब

नहीं लगती हैं जितने की वास्तव में हैं। इसके विपरीत यदि मनोबल गिरा हुआ है तो थोड़ी सी विपरीत परिस्थितियों में भी वह घबरा जाता है और छोटी सी मुश्किल भी पहाड़ जैसी प्रतीत होती है।

भारतीय ज्योतिष में जन्म कालीन चंद्र राशि को विशेष महत्व दिया गया है। कुछ विद्वान उसे लग्न के समान महत्व देते हुए चंद्र कुंडली के आधार पर फल कथन के सिद्धांत भी बताते हैं। इसके अतिरिक्त जन्मराशि को नामकरण, मुहूर्त, मेलापक आदि क्षेत्रों में विशेष महत्व दिया गया है। जन्म कालीन नक्षत्र से ही विंशोत्तरी, अष्टोत्तरी, पंचोत्तरी, त्रिभागी आदि दशाओं का निर्धारण भी होता है जो कि जन्म कालिक नक्षत्र चंद्रमा की नक्षत्रीय स्थिति ही होती है।

मंत्रेश्वर जी का मत है- गोचरस्थ ग्रहों की गणना के लिए जन्म कालीन चंद्रमा की स्थिति से गणना ही सर्वश्रेष्ठ है। इसी से ग्रहों के गोचर की गणना करके फलादेश करना चाहिए। (फलदीपिका अध्याय 26/1)

जन्म कालीन चंद्रमा से ग्रहों की गोचरस्थ शुभ स्थिति

जन्म कालीन चंद्रमा अर्थात् जन्म राशि से ग्रहों की गोचरीय स्थिति की शुभता के संबंध में निम्नलिखित सिद्धांत हैं-

1) जन्म कुंडली में नौ ग्रहों की 12 भाव में स्थिति के आधार पर 108 (12 भाव म 9 ग्रह) परिस्थितियां बनती हैं, जिनमें से केवल 44 ही शुभ हैं। इस प्रकार ग्रहों का गोचर लगभग 40.74त्न ही औसत रूप से शुभ होता है।

2) लाभ भाव में स्थित समस्त ग्रह शुभ फल प्रदान करते हैं और त्रिषडाय भावों में समस्त पाप ग्रह शुभ फल प्रद होते हैं।

जन्म कालीन चंद्रमा से गोचररत ग्रहों के शुभ फलप्रद भावों की तालिका

सूर्य, राहु, केतु : 3, 6, 10,11
मंगल, शनि : 3, 6,11
चंद्रमा : 1, 3, 6, 7, 10, 11
बुध : 2, 4, 6, 8, 10, 11
गुरु : 2, 5, 7, 9, 11
शुक्र : 1, 2, 3, 4, 5, 8, 9, 11, 12

जन्म राशि से भावानुसार गोचर में शुभ फल प्रदान करने वाले ग्रहों की तालिका

भाव अनुसार शुभ फलदायक ग्रह

1 - चंद्र, शुक्र
2 - बुध, गुरु, शुक्र
3 - सूर्य, चंद्रमा, मंगल, शुक्र, शनि, राहु, केतु
4 - बुध, शुक्र
5 - गुरु, शुक्र
6 - सूर्य, चंद्रमा, मंगल, बुध, शनि, राहु, केतु
7 - चंद्र, गुरु
8 - बुध, शुक्र
9 - गुरु, शुक्र
10 - सूर्य, चंद्र, बुध, राहु, केतु
11 - सभी ग्रह
12 - शुक्र

वैदिक ज्योतिष का द्वितीय मत

कुछ विद्वान जन्म राशि के वजाय (स्थान पर) जन्म लग्न के सापेक्ष ग्रहों के गोचरीय स्थिति और उसके द्वारा फलादेश को अधिक प्रभावशाली मानते हैं। क्योंकि उनका मत है कि जन्म लग्न ही व्यक्ति की सबसे महत्वपूर्ण इकाई है, जिससे जातक के जीवन में ग्रहों का स्पष्ट प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।

उपरोक्त दोनों मतों के संबंध में अपने-अपने तर्क और अपनी-अपनी मान्यतायें हैं, परंतु आधुनिक समय में अधिकतर विद्वानों की यह मान्यता है कि जन्म कालीन चंद्रमा एवं जन्म लग्न दोनों में से जो अधिक बली हो उसी से गोचरस्थ ग्रहों की गणना करनी चाहिए।

इसके अतिरिक्त कुछ लोगों का यह मत है कि लग्न एवं चंद्रमा दोनों के सापेक्ष ही गोचरस्थ ग्रहों की गणना करनी चाहिए और दोनों से प्राप्त शुभ और अशुभ फल का समन्वय स्थापित करके फलादेश करना चाहिए।

आईटी साफ्टवेयर इंजीनियर बनने के ग्रहयोग एवं कुछ कुंडली विवेचन

डॉ. श्रीमती पुष्पा चौहान
(अध्यक्ष, आय.ए.एस.आय)

सूचनाओं का महत्व आदि काल से ही रहा है। इस बदलते परिवेश में अब सूचनाओं का महत्व सर्वोपरि हो गया है। इस प्रगतिशील संसार में यदि आपका अद्यतन ज्ञान अपटूडेट नहीं है, तो आप प्रगति की दौड़ में पिछड़ सकते हैं। प्रतिष्ठित व्यवसायिक संस्थानों द्वारा अब इस और विशेष ध्यान देकर इनफारमेशन टेक्नालॉजी विषयको पाठ्क्रमों में शामिल करते हुए इस कंप्यूटर युग में नये-नये शाफ्टवेयर बनाये जाने के हेतु पढ़ाई कराई जा रही है। अब सभी काम कंप्यूटर मशीन के माध्यम से बिना समय गवाऐ ज्ञान व सूचनाएँ हर एक के पास उपलब्ध हो रहीं है। यहां तक की ज्योतिष जैसे गूढ विषय को भी कंप्यूटर के माध्म से गणित व फलित किया जा रहा है। इसके लिए भी नये-नये शाफ्टवेयर डिजाइन किये जा रहे हैं। कोई भी क्षेत्र हो, बिना आईटी के सब अधूरे नजर आते हैं। ई-बैंकिंग, ई-फाइनेसिंग, ई-मेनेजमेन्ट आदि-आदि तेजी से बढ़ते नजर आ रहे हैं। अब सभी व्यापारिक संस्थान, कार्यालय, शिक्षण संस्थाओं में आईटी अपने पैर जमा चुका है।

रोजगार के नये अवसरों, विदेशों में कार्य करने के अवसर, पद एवं प्रतिष्ठा के कारण आज प्रत्येक युवक का सपना आईटी सेक्टर में ज्ञान अर्जितः कर माहिरी हासिल करना हो गया है। हमारे महर्षि ऋषियों द्वारा इस तरह के क्षेत्र को ज्योतिषीय विवेचन कर कहीं भी नहीं दिया गया है, परंतु आज के इस युग में शोधपूरक ज्योतिष के माध्यम से कुछ ग्रह, भावेशों, ग्रहसंबंधों, ग्रह दृष्टि संबंधों, ग्रह नक्षत्रों, ग्रहगोचरों को ध्यान में रखते हुए इस सूचना प्रौद्योगिक क्षेत्र का विवेचन किया गया है। इन्हीं सब को ध्यान को रखते हुए सर्वप्रथम हमने इस आईटी सेक्टर से जुड़े घटकों जैसे कंप्यूटर, इलेक्ट्रानिक, इलेक्ट्रानिक उपकरण एवं सेटेलाइट संबंधी कारकत्वों पर विशेष ध्यान दिया है। इस तरह पाया गया कि शुक्र ग्रह कंप्यूटर एवं टेलीवीजन का कारक होने के कारण मंगल विद्युत एव सिविल इंजीनियरिंग (अग्नेय पदार्थों तथा भूमि के कारण), बुध ग्रह शिल्प, तर्क, विश्लेषणा-त्मक विज्ञान, सांख्यकी, कंप्यूटर का कारक होने के कारण, शनि तकनीकी कार्यों एवं अभ्यास, यंत्रों का ज्ञान तथा उनका निर्माण इंजीनीरिंग का कारक होने के कारण आईटी सेक्टर के लिए, महत्वपूर्ण कारक ग्रह माने जा रहे हैं। सूर्य ग्रह स्वतंत्र रूप से तो तकनीकी का कारक नहीं है, परन्तु मंगल के साथ युति या दृष्टि संबंध करने से इंजीनीयर ज्ञान बनाने में सहयोग कारक होता है। अतः उक्त तत्थों को ध्यान में रखते हुए कुछ इन्हीं से संबंधित ग्रह योग, ग्रह संबंध, ग्रह दृष्टि संबंध, नक्षत्रों, दशाएँ एवं ग्रह गोचरों को समाहित कर कुछ योग निम्नानुसार दिये जा रहे हैं। इन्हें देखकर कोई भी जातक आईटी सेक्टर में अपना कार्य व्यवसाय बाबत भविष्य ज्ञान कर सकता है। साथ ही कुछ चुनिन्दा आईटी सेक्टर में कार्यरत इंजीनियरों की कुंडली का विवेचन भी दिया जा रहा है, जिसे पाठक देखकर स्वयं विश्लेषणात्मक ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं

1. यदि कुंडली में मार्ग प्रशस्त करने वाला सूर्य के साथ मंगल की युति या दृष्टि संबंध हो या मंगल व बुध की परस्पर दृष्टि या युति संबंध हो अथवा सूर्य तथा शुक्र का संबंध किसी रूप में होकर मंगल से दृष्ट हो रहा हो या फिर मंगल का शनि से किसी भी रूप में युति या दृष्टि संबंध बन रहा हो और बुद्धिमत्ता का कारक ग्रह गुरु कुंडली में अच्छी स्थिति में हो, तो जातक आईटी सेक्टर में अपना कर्म क्षेत्र बना कर सफल होता है।

2. आईटी सेक्टर में जाने के लिए आवश्यक शिक्षा उच्चस्तर की तकनीकी ज्ञान वाली होना आवश्यक है। यदि कुंडली में भाव 2, भाव 5, भाग्यभाव, लग्न और दशम भाव में गुरु, मंगल, बुध, सूर्य, शनि व शुक्र जैसे ग्रह आपस में संबंधित हो रहे हों, तो जातक उच्च शिक्षा तकनीकी ज्ञान के साथ करने में सक्षम होता है।

3. जातक की कुंडली में जितने अधिक बली भाव होंगे और उन बली भावों में जितने अधिक बली ग्रह होंगे जातक उतना ही आईटी सेक्टर में सफल होगा। निर्बल ग्रह या नीच के ग्रह निर्बल भावों में योग बानावें तो ज्यादा से ज्यादा जातक आपरेटर या प्रोग्रामर बन सकता है।

4. यदि पंचम भाव शुभग्रह की राशि का हो और शुभ ग्रह द्वारा दृष्ट या पंचमेश की युति हो या शिक्षा व बुद्धिमत्ता का कारक गुरु बुद्धि के कारक ग्रह बुध व साहस व दृढ़ इच्छा शक्ति का कारक मंगल के साथ युत या दृष्टि संबंध करे और कंप्यूटर जैसे सौम्य यंत्र का कारक शुक्र का संबंध शनि जैसे यांत्रिक कारक के साथ हो, तो ऐसा जातक उच्च तकनीकी ज्ञान अर्जित कर बुद्धिमत्ता व तार्किक ज्ञान के बल पर कंप्यूटर से संबंधित आइटी कार्य में उन्नति करता है।

5. विलक्षण स्मरण शक्ति का कारक गुरु व बुध की युति यदि शुक्र या मंगल के साथ किन्हीं शुभ घरों में हो और शनि भी कहीं कुंडली में अच्छे अंशों पर राहू जैसे वायू कारक ग्रह के साथ युति या दृष्ट संबंध में हो, तो ऐसा जातक अति मेघावी आईटी सेक्टर में प्रवीणता हासिल करता है।

6. यदि कुंडली में गुरु चंद्र का गजकेशरी योग केन्द्र त्रिकोण में हो, भाग्येश और धनेश होकर मंगल पंचम में हो, सूर्य के साथ शुक्र और बुध गुरु की राशि में हों और केतू जैसा बारीकी देने वाला ग्रह यदि गुरु की राशि केन्द्र में हो, तो ऐसा जातक अति मेधावी विलक्षण पतिभा वाला तर्कशक्ति कंप्यूटर पर कार्य करता है।

7. यदि कुंडली में सिंह का बुध पराक्रम भाव में, सूर्य पंचमेश शुक्र के साथ बुद्धि भाव 2 मे स्वगृही व कारक गुरु कर पंचम दृष्टि पर हो, उच्च का राहू धनेश चंद्र के साथ

युति कर लग्न में केन्द्रगत हो, गुरु व मंगल का आपसी संबंध केन्द्र में हो एवं यांत्रिक कारक शनि स्वगृही होकर अपनी तीसरी दृष्टि से शिक्षा कारक गुरु पर दशम में एवं सप्तम दृष्टि पंचमेश शुक्र व उसके पंचम भाव में तुला राशि पर दशम उच्च

जन्म कुण्डली 19 जनवरी 1980 06:40:00

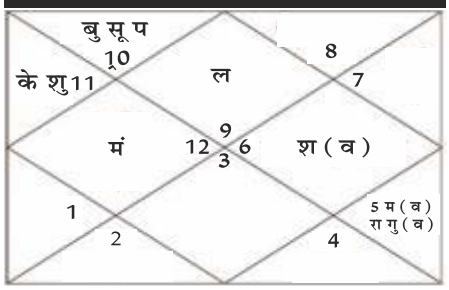

दृष्टि हो, तो जातक उच्च आईआईटी जैसे संस्थान से इंजीनियरिंग पढ़ाई कर विदेश में आईटी सेक्टर में कार्यरत होता है।

8. मीन लग्न की कुंडली में यदि विद्या के भाव पंचम का स्वामी भाग्येश एवं मंगल के साथ लग्न में युति करे एवं केन्द्र में तकनीकी ग्रह शनि सूर्य एवं बुध जैसे हों तथा गुरु शुक्र पराक्रम एवं नवंम भाव में क्रमशः बैठकर दृष्टि संबंध रखते हों, तो ऐसा जातक खनन क्षेत्र की इंजीनियरिंग में दक्षता प्राप्त करने हेतु आईआईटी जैसे संस्थान से शिक्षा प्राप्त करने में सक्षम होता है।

9. मिथुन लग्न के विद्या भाव में स्वगृही शुक्र, उच्च राशिस्थ भाग्येश शनि व पराक्रमेश सूर्य की युति हो, दशमेश गुरु मित्र राशिस्थ पराक्रम भाव में, आयेश एवं प्रतियोगिता के घर छठे का स्वामी मंगल लग्नेश उच्च के बुध के साथ चतुर्थ में दशमस्थ धनेश चंद्र से दृष्ट हो तथा राहु प्रतियोगिता के घर छठे में जातक आईटी सेक्टर में प्रवीण, धनाढ्य व प्रतिष्ठित होता है।

जन्म कुण्डली 21 सितंबर 1984 06:00:00

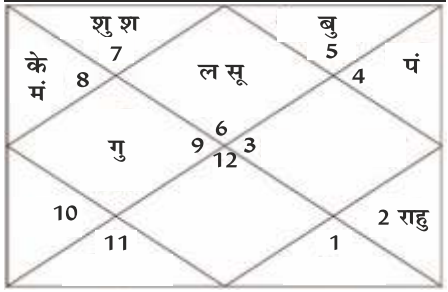

10. वृश्चिक लग्न की कुंडली में पंचमेश एवं बुद्धि भाव का स्वामी में होकर अष्टमस्थ उच्च राहू से दृष्ट हो, भाग्येश चंद्रमा दशम में गुरु व्यय सूर्य लाभेश बुध की युति से दृष्ट हो व लग्नेश मंगल पराक्रमेश शनि लाभ भाव में हो और सप्तमेश शुक्र पराक्रम

नवांश जीवन साथी कुण्डली नं.6

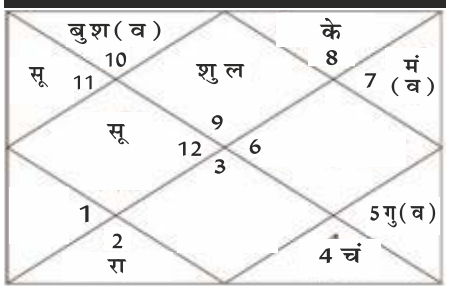

भाव में हो, तो ऐसा जातक उच्च तकनीकी कंप्यूटर शिक्षा कर आईटी सेक्टर में साफ्टवेयर इंजीनियर बनता है।

11. वृष लग्न की कुंडली में यदि बुद्धि कारक बुध धनेश व पंचमेश होकर की मूल त्रिकोण राशि कुंभ में केतू के साथ स्थित हो, तकनीकी ग्रह मंगल एवं शनि यदि राहू व गुरु के साथ सुख भाव चतुर्थ में बैठकर दशम भाव पर दृष्टि देते हो एवं पराक्रमेश चंद्र धन भाव में एवं शुक्र अपने प्रिय स्थान बारहवे में हो व सुखेश सूर्य आय भाव में स्थित हो, तो ऐसा जातक कंप्यूटर इंजीनियरिंग के क्षेत्र में उच्च शिक्षण संस्थान से शिक्षा प्राप्त कर स्वतंत्र रूप से साफ्टवेयर आदि के क्षेत्र में व्यवसाय करने में भी सफल हो सकता है।

12. यदि शुक्र राशि की लग्न में उच्च का राहू होकर लग्नेश शुक्र स दृष्ट हो पंचमेश एवं बुद्धि भाव का स्वामी बुध शिक्षा कारक गुरु के साथ गूढविद्या के। स्थान अष्टम में पंचमस्थ मंगल से दृष्ट हो, पराक्रमेश चंद्र यदि योग कारक उच्च शनि के साथ प्रतियोगिता के घर छठे में हो एवं

नवांश जीवन साथी कुण्डली नं.7

कम्प्यूटर कारक शुरु यांत्रिक कारक मंगल की राशि वृश्चिक में सातवें घर में होकर वायु कारक राह से दृष्ट हो, तो ऐसा जातक तकनीकी विषय में शिक्षा प्राप्त कर साफ्टवेयर इंजीनियरिंग के कार्य करने में सफल हो सकता है

13. पंचमेश शुक्र की स्वगृही दृष्टि पंचम भाव एवं पंचमस्थ राहू पर हो, मका लग्न में ही चंद्रमा बैठकर अपनी ही राशि सप्तम को देखे, पचंम का कारक गुरु लाभेश तकनीकी ग्रह मंगल के साथ व्यय भाव में हो, भाग्येश बुध व लग्नेश शनि दशम में हो एवं दशमेश शुक्र लाभ भाव में वायु कारक पंचमस्थ राहू से दृष्ट हो एवं शनि की तीसरी दृष्टि मंगल के साथ बैठे विद्याकारक गुरु पर होने से जातक निश्चित ही उच्च तकनीकी शिक्षित साफ्टवेयर जैसी इंजीनियरिंग के क्षेत्र में कर्मक्षेत्र बना सकता है।

उक्त कु. 6 में साफ्ट्वेयर इंजीनियरिंग की शिक्षा दिलाने में महत्वपूर्ण सभी ग्रहों की भूमिका स्पष्ट दिखाई दे रही है। इस क्षेत्र में तार्किक ग्रह बुध को सूर्य व चंद्र के साथ धन स्थान में युति जातक का इसी क्षेत्र में भाग्य उदय कराने में सहायक है। तकनीकी ग्रह मंगल की नवम भाव में शिक्षा कारक गुरु के साथ युति, इस युति का प्रेरक ग्रह राहू के साथ पराक्रम भाव में बैठे शुक्र व केतु से दृष्टि संबंध तथा द्वितीय तकनीकी एवं लाभेश शनि का कर्म भाव में बैठना निश्चित ही जातक को तार्किक शक्ति के तकनीकी साफ्टवेयर के क्षेत्र में उसका कर्मक्षेत्र निश्चित करती है।

उक्त कु. 7 एक साफ्टवेयर इंजीनियर की है, जिसमें तकनीकी ग्रह मंगल की पराक्रम भाव में केतु के साथ युति कर प्रेरक राहू से दृष्टि संबंध महत्वपूर्ण है। द्वितीय तकनीकी ग्रह शनि धन स्थान में उच्च के होकर स्वगृही शुक्र के साथ स्थित है, जो विद्या कारक गुरु पर अपनी तृतीय दृष्टि दे रहे हैं। साथ ही शनि का स्वयं पंचमेश होना भी एक महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान कर रहा है। लग्न में तार्किक ग्रह बुध की राशि में सूर्य का होना व बुध का सूर्य की राशि सिंह में होकर परस्पर स्थान परिवर्तन जातक के अंदर असीम तर्कशक्ति प्रदान करने में सहायक है। साफ्टवेयर के लिए आवश्यक तकनीक एवं अद्भुत तर्कशक्ति ही जातक को इस

जन्म कुंडली में राहु की अन्य ग्रहों से युति

श्री एस.एस. लाल, आई.पी.एस
से.नि डायरेक्टर जनरल पुलिस

*प्रस्तुत लेख में हमारे विद्वान लेखक ने राहु के साथ ग्रहों की युति का शुभ अशुभ फलों का वर्णन किया है राहु छाया ग्रह है यह जिस राशि में होता है उसके स्वामी शुभ/अशुभ फल की वृद्धि करता है यहां राहु के साथ युति का फलित उल्लेख किया जा रहा है जोकि फलित करने में सहायक सिद्ध होगा। **(सम्पादक)***

राहु की अन्य ग्रहों से युति-राहु-सूर्य युति- ये दोनों आपस में शत्रु हैं इसलिए यह युति सूर्य-शनि से भी बुरी है। इसमें उत्पन्न जातक कोई न कोई कष्ट भोगता है। भाव 1 व 8 में यह युति होने पर स्वास्थ्य की हानि होकर दीर्घ रोग होता है। भाव 2 में नेत्र ज्योति क्षीण, विद्या और धन हानि, कुटुम्ब से विछोह, भाव 4 में जीवन में प्राप्त होने वाले सुखों की हानि, माता के प्रेम, पैतृक सम्पत्ति और घर, जमीन, जायदाद से वंचित, भाव 5 में विद्या या गर्भ हानि, अयोग्य सन्तान, भाव 7 में दाम्पत्य जीवन के कलह, भाव 9 में भाग्य और पितृ सुख व प्रेम की हानि, भाव 10 में दुष्टग्रह प्रभाव हो तो रोजगार, यश, पितृ प्रतिष्ठा की हानि होती है। भाव 1,3,5, 10, 12 में शुभ रशि और शुभ ग्रह प्रभाव हो तो यश, धन सम्पत्ति, शौर्य, पराक्रम, राजनीति में दक्षता प्राप्त होती है। भाव 5 में यह युति चन्द्रमा से दृष्ट होने पर सन्यास विरक्त् योग देती है। यहां सूर्य ग्रहण की स्थिति हैं व सूर्य के बल की हानि होती है। अतः सूर्य अपने शुभ फल देने की बजाय बुरे फलों में वृद्धि कर लेता है।

राहु-चंद्र युति- यह सूर्य राहु की भांति अशुभ फल देती है। इसका सबसे अधिक प्रभाव मानसिक वृत्तियों पर पड़ता है। ऐसे व्यक्ति रुढ़िवादी व संघर्षरत होते है, परिवर्तन को सहर्ष स्वीकार नहीं कर पाते, मानसिक डिप्रेसन से ग्रस्त रहते हैं, इसलिए उत्साहहीन, एकान्तप्रिय स्वभाव होता है। इनकी नेत्र ज्योति क्षीण होती है। यह चन्द्र ग्रहण है जो पूर्णिमा के दिन होता है, जब चन्द्रमा और राहु लगभग 7 अंश के अन्तर पर हों। त्रिक स्थानों में, केन्द्र या त्रिकोण में शनि की युति या दृष्टि हो या पाप मध्यत्व में हो तो यह युति बाल अरिष्टकारी होती है। ऐसे व्यक्ति जीवन में रोगी, ऋणी, भीरु और असफल होते हैं।

चन्द्रमा मन है इसके संग राहु व्याकुलता, परेशानी और अशांति व वैराग्य देता है। व्यक्ति घर-संसार, मोह-माया से विमुख होकर ईश्वर आराधना में आस्था रखता है। किन्ही दुष्ट प्रभावों के कारण मानसिक विकृति भी होती है।

राहु-मंगल युति- इन दोनों में शत्रुता है मगर सूर्य और चन्द्रमा से कम। राहु से सूर्य और चन्द्रमा पीड़ित होते हैं मगर मंगल पीड़ित नहीं होता। क्योकि राहु अगर सर्प है तो मंगल नेवला । इन दोनों में शत्रुता है मगर दोनों बलवान और दुष्ट हैं। ये केन्द्र और त्रिकोण में बुरे फल देते हैं जिस भाव में स्थित होते हैं उसके फलों का नाश कर देते हैं, मगर भाव 1,3,6,10,11 में अनेक लाभ देते हैं। मंगल योगकारी हो, केन्द्र या त्रिकोण का स्वामी हो, शुभ ग्रहों से दृष्ट हो तो राहु के संग शौर्य, पराक्रम, उत्साह, उमंग, कार्यतत्परता देता है। भाव 8 में यह युति रोग देती है। अशुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होने पर यश, धन, स्वास्थ्य, परिवार सुख हानि और मुकदमों में पराजय होती है, लग्न में यह युति हो तो व्यक्ति में चोरी, हिंसा, व्याभिचार जैसे बुरे विचार जन्म लेते हैं। शुभ ग्रह दृष्टि हो तो उन्हें क्रियान्वित नहीं करता अन्यथा क्रियान्वित कर सकता है। प्रायः बड़े भाई नहीं होते और जीवन साथी रोगी होता है।

राहु-बुध युति- बुध बुद्धि है और राहु चतुर, चंचल, राजनीतिज्ञ, कूटनीतिज्ञ दोनों मित्र है, इसलिए इन दोनों की युति शुभ भाव 1,3,5,9,10,11 में और शुभ ग्रह से दृष्ट हो तो जातक कुशाग्र बुद्धि, तर्कशील, सूक्ष्म विश्लेषण क्षमता से युक्त होता है। इस युति पर दुष्ट ग्रह की युति या दृष्टि हो या यह दुष्ट भावों में हो तो व्यक्ति मानसिक विकारों से युक्त होता है, उसमें अहं, ईर्ष्या, द्वेष की भावना होती है, अधिक दुष्ट प्रभाव हो तो मानसिक रोग से ग्रस्त होता है।

राहु-गुरु युति - वृहस्पति ज्ञान, विवेक, अध्यात्म व ब्राम्हण है और राहु

चतुर, चंचल, मक्कार, नीतिज्ञ, प्रचण्ड, प्रलयकारी, नैतिकवादी, चाण्डाल है। इसलिए इन दोनों मे विपरीत स्वभाव के कारण बैर भाव है। इनकी युति को गुरु-चाण्डाल योग कहते हैं। वृहस्पति ग्रह सौम्य और साधु है। इसलिए इसके संग राहु का प्रलयकारी चाण्डाल स्वभाव मृदु और शांत होकर वृहस्पति के गुणों की वृद्धि करता है। शुभ भाव 1,5,9,10 में इस युति का व्यक्ति यश, धन, विद्या, सन्तान, स्त्री से सुखी और शासन में भागीदार होता है। दुष्ट ग्रह प्रभाव से राहु का चाण्डाल रूप प्रकट होने लगता है जिससे बृहस्पति असहाय होकर अपने शुभ फल नहीं दे पाता इस प्रकार यह युति दुष्ट फलकारी होकर मन, तन, धन और विद्या का अरिष्ट करती है। भाव 3,6,8,12 में यह युति संघर्षशील है।

राहु-शुक्र युति- ये दोनों मित्र हैं, दोनों भौतिकवादी, सांसारिक, भोग-विलास, चंचल, चतुर, चालाक है। भाव 7 व 12 में इस युति से जातक अनेक स्त्रीरत होता है और उसके चक्करों में धन नष्ट करता है। भाव 3,6,8 में यह रोग कारक है। इससे विवाह शीघ्र होता है या स्त्री विषयानन्द शीघ्र प्राप्त होते हैं। भाव 4,7,10 में यह पैतृक सम्पत्ति और व्यवसाय में बाधा देती है।

राहु-शनि युति- दोनों का नीच और मलिन स्वभाव, दुष्ट प्रवृत्ति, ईर्ष्या-द्वेष के कारक हैं, दोनों में मित्रता है इसलिए दोनों की युति चतुर, चालाक और अश्लील है। दूसरे को मूर्ख मानते हैं इसलिए उनका धन, माल, हडपने की योजना बनाते रहते हैं। शुभ ग्रहों की युति या दृष्टि प्रभाव हो तो इनके शुभ गुण उभर कर व्यक्ति को कर्तव्य, परोपकार, अध्यात्म की शिक्षा देते हैं, व्यक्ति अपने आत्मविश्वास, परिश्रम, परिपक्व बुद्धि और व्यवहार कुशल स्वभाव से अपने पद और व्यवसाय को उन्नति करता है। भाव 2,4,7 में यह युति जातक के सुख छीन लेती है तथा भाव 8 में दीर्घ रोग देती है।

विभिन्न भावों में राहु शुभ फल

1. तृतीय राहु वाला जातक बलशाली व हिम्मती होता है। राहु छल, कपट, झूठ का कारक है और कलयुग में राजनीति में सफलता के लिए झूठ, कपट आदि का कारक राहु शत्रुओं का नाश करता है और विजय दिलाता है साथ ही बलवान राहु यदि शुभ स्थान में हों तो राजनीति में सफलता देता है।

2. लग्न में राहु के साथ यदि पंचमेश गुरु, मित्र राशि में या शुभ ग्रह युक्त होने पर जातक धार्मिक विचारों वाला प्रभावशील व तीक्ष्ण बुद्धिवाला होता है। लग्न के गुरु के साथ यदि राहु हो तो अत्यधिक फलदायी होता है।

3. भाव 4 में राहु होने से भी सफलता देता है। भाव 6 में बैठा राहु शत्रुओं पर विजय दिलाता है । भाव 7 में बैठा राहु पृथकताजनक गुण देता है।

4. राहु-केतु यदि केन्द्र में किसी त्रिकोणेश के साथ अथवा त्रिकोण में किसी केन्द्रेश के साथ अथवा त्रिकोण में त्रिकोण के साथ बैठा हो तो योग कारक राहु हो जाता है और राज योग कारक होकर अच्छा फल देता है ।

5. यदि केन्द्र में केन्द्रेश के साथ राहु बैठा हो तो मिश्रित फल प्राप्त होते हैं और यदि केन्द्रेश पापी हो तो योग कारक नहीं होगा । यद्यपि राहु-केतु जिस भाव में है उसी प्रकार का फल देते हैं और प्रायः जिस भाव में बैठते हैं उसको किसी न किसी रूप में बिगाड़ते है। दोनों नैसर्गिक पाप ग्रह है किन्तु केन्द्र के स्वामी के साथ या त्रिकोण के स्वामी के साथ केन्द्र में बैठने से यह शुभ फलदायक भी हो जाते हैं। राहु का प्रभाव आकस्मिक होता है जिसमें सम्हलने का मौका नहीं मिलता। राह-केतु दोनों वक्री ग्रह हैं और शुक्र, शनि, बुध राहु के मित्र ग्रह व गुरु सम है । राहु शनि के समान तथा केतु मंगल के समान फल देने वाला होता है। राहु एक राशि में 18 माह रहते है।

एकादश यानी भाव 11 में स्थित राहु का फल

ज्योतिष का सर्वमान्य सिद्धांत है कि अशुभ या पापी ग्रह जिस भाव या स्थान में बैठते है उस भाव मे भाव के फलों की कमी कर देते हैं। परन्तु कुंडली के त्रिक भावों, 6, 8, 12 में पापी ग्रह अपना अशुभ प्रभाव कम करते हैं। इसी क्रम में भाव 3,6 और 11 भी अशुभ स्थान माने जाते हैं और इनमें पाप ग्रहों के बैठने से इनका अशुभ प्रभाव कम हो जाता है। एकादश भाव से बड़ा भाई, आर्थिक लाभ, सम्पत्ति, ऐश्वर्य, विद्या प्राप्ति, प्रशंसा, शुभ विचार, बायां कान, हाथ, आय के स्त्रोत, वाद-विवाद आदि का विचार किया जाता है। यदि इस एकादश यानी भाव 11 में राहु बैठा हो जो कि पापी ग्रह है तो निम्नानुसार फल कहे जा सकते है-

1. भाव 11 में स्थित राहु कुंडली के भाव 3,5,7 पर दृष्टि डालने के कारण इन भावों से संबंधित परिणाम को प्रभावित करता है जिससे कान के रोग, संतान पक्ष से चिन्ता, संतति बाधा, पितृ पक्ष से चिन्ता, यात्राऐं आदि फल हो सकते हैं ।

2. यदि स्त्री राशि में राहु हो तो पहले कन्याऐं अधिक होती हैं।

3. भाव 5 व 7 को प्रेम एवं रोमांस का भाव भी कहते हैं। और राहु भाव 11 में बैठकर इन दोनों भावों को प्रभावित करने से प्रेम संबंधों में असफलता या प्रेम के कारण सम्मान को ठेस पहुंचती है।

4. इस भाव 11 का राहु निम्नवर्गों का नेता भी बनाता है ।

5. इस घर मे राहु व्यक्ति को वक्ता बनाकर धन प्राप्त कराता है और धूर्तों से मित्रता कर दूसरों का धन हडप कराता है।

6. इस घर का राहु रेस, जुआ, लाटरी, सटटे व नीच लोगों से लाभ कराता है ।

7. अलग-अलग विद्वानों ने भाव 11 स्थित राहु के अलग-अलग अनुभव आधारित फल कहे हैं परन्तु मोटे तौर पर उपरोक्त वर्णित फल सभी विद्वानों को मान्य रहे हैं।

8. राहु को स्त्री ग्रह माना गया है और यदि यह स्त्री राशि में हो तो शुभ फल देते हैं और यदि पुरुष राशि में हो कष्टप्रद फल होते हैं। स्त्री भी लाभ में माध्यम बनती है।

9. अक्सर अनुभव में देखा गया है कि यदि राहु भाव 11 में किसी भी राशि में बैठा हो तो जातक को अनायास, अनैतिक माध्यम से, लाभ कमाने को प्रेरित करता है।

10. इस एकादश स्थित राहु की दशा व महादशा में व अपने मित्रों की दशा और संबंधकर्ता ग्रह की दशा में जातक को लाभ देता है।

अष्टकवर्ग क्या है? इनके अंकों का महत्वपूर्ण प्रभाव

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय

अष्टक वर्ग फलित ज्योतिष का एक अभिन्न भाग है फलित की सार्थकता मे अत्यंत महत्वपूर्ण है। हम किसी भी जातक का फलादेश करते हैं तो बिना अष्टक वर्ग विवेचन के हम कभी भी जातक का सटीक फलादेश नहीं कर पाते हैं। अष्टक वर्ग सात ग्रहों तथा लग्न को जोड़ कर आठ समुदाय से प्राप्त अंकों का योग है जिसे हम समुदाय अष्टक वर्ग भी कहते हैं। अष्टक वर्ग गणना करते वक्त राहु और केतु को नहीं लिया जाता है।

अष्टक वर्ग की गणना 7 ग्रह तथा लग्न अपने स्थान से निश्चित भावों को बिंदु प्रदान करते हैं जिससे इन 8 समुदायों से प्राप्त बिंदु प्रत्येक 12 भावों को मिलते हैं इन्हीं सब प्राप्त बिंदुओं से हमें प्रत्येक भावों के लिए अलग-अलग अंक प्राप्त होते हैं।

अष्टक वर्ग में निहित अंकों का विश्लेषण करते समय हम जानेंगे कि भावमे कितना अंक तक को अच्छा माना जाता है तथा कितने अंकों तक को भावमे सबसे कमजोर।

(1) अष्टक वर्ग में 25 से 28 अंकों को औसत माना गया है तथा 24 से कम अंकों का होना अच्छा नहीं माना गया है।

(2) अष्टक वर्ग में 30 से अधिक अंकों का होना श्रेष्ठ माना गया है।

अष्टक वर्ग में प्रत्येक भाव की राशि को अंक प्राप्त होते हैं जो भावों से संबंधित निर्धारित फल को ज्यादा तथा कम प्रदाय करना दर्शाते हैं।

यदि किसी जातक को अष्टक वर्ग में दशम भाव को 38 अंक प्राप्त है तथा एकादश भाव को 27अंक प्राप्त है तो हम यहां से फलादेश करते वक्त कहेंगे कि जातक जीवन में मेहनत अधिक करेगा लेकिन उसे अपने किए गए कार्य से जितना मिलना चाहिए था वह नहीं मिलेगा और जातक को ज्यादा धनलाभ हेतुसंघर्ष करना पड़ेगा जातक को हमेशा कम ही फल प्राप्त होगा। ऐसे ही अगर किसी जातक को दशम भाव से कम और एकादश भाव में अधिक अंक प्राप्त होंगे तो वह जातक जो भी करेगा उसको हमेशा उससे ज्यादा ही लाभ की प्राप्त होगा।

अष्टक वर्ग में कुछ महत्वपूर्ण सूत्र

(1) अष्टक वर्ग में यदि लग्न नवम, दशम तथा एकादश भाव को 30 से अधिक अंक प्राप्त हो तो इसको अत्यंत श्रेष्ठ माना गया है।ऐसे जातक हमेशा तरक्की करने वाला, इच्छा पूर्ति करने वाला तथा उसका जीवन अत्यंत सुखमय होना कहा गया है।

(2) अष्टक वर्ग में यदि लग्न से ज्यादा अंक 6, 8,12 भावों में हो तो इसको अच्छा नहीं माना गया है। अधिक कठिनाईयां जीवन में रहेगी

(3) अष्टक वर्ग में 6,8,12 भाव में जितना कम अंक होंगे उतना ही श्रेष्ठ माना गया है यहां पर अधिक अंकों का होना जीवन मे ज्यादा कष्टप्रद हो जाता है।

(4) अष्टक वर्ग में 12वे भाव का अंक लग्न तथा एकादश भाव से यदि ज्यादा होंगे तो भी इसको अच्छा नहीं माना गया है ऐसा जातक आय से अधिक खर्च करने वाला होता है तथा कभी धन संचय नहीं कर पाएगा साथ में उसका खर्च करने में कभी नियंत्रण नहीं रहेगा।

(5) यदि दशम भाव से ज्यादा अंक द्वितीय भाव मेंहै तथा एकादश भाव में होंगे तो यह परिवार और धन की दृष्टि से अत्यंत श्रेष्ठ माना गया है ऐसे जातक के पास धन हमेशा रहेगा,जितना कार्य करेगा उससे ज्यादा प्राप्त होगा अपनी कही गई बात की अच्छीअहमियत रखेगा तथा संघर्ष ज्यादा नहीं करनी पड़ेगा।

(6) अष्टक वर्ग में चतुर्थ भाव को यदि 30 से ज्यादा अंक प्राप्त हो साथ में द्वितीय तथा लग्न को भी 30 से ज्यादा अंक प्राप्त हो तो इसको जमीन जायदाद तथा वाहन सुख अत्यंत श्रेष्ठ माना गया है ऐसे जातक आत्मबल वाले , निर्णय के धनी, रिश्तो से मजबूत, सुख को भोगने वाला तथा उसको सुखों की कमी कभी नहीं रहेगी।

(7) अष्टक वर्ग में यदि नवम भाव को 28 से ज्यादा अंक प्राप्त हो तो ऐसा जातक का भाग्य हमेशा साथ देगा तथा इससे अधिक अंक होने पर जातक भाग्यशाली और भाग्य से हमेशा बलवान रहेगा तथा अच्छे अवसर प्राप्त होते रहने वाला श्रेष्ठ पुरुष कहा गया है।

(8) अष्टक वर्ग में शुभ भावों पर अंको का अधिक होना श्रेष्ठ माना गया है।

(9) 3,6,8,12 भावों से अधिक अंक यदि अन्य कोई भाव पर भी हो तो इसको अच्छा माना गया है।

(10) 1,2,4,5,9,10,11 इन भावों पर 24 से कम अंक प्राप्त हो तो इन भावों से संबंधित फल में कमी और उन भावों से सम्बधित अत्यंत कम सुख मिलेगा।

प्रत्येक दिन के कार्य को करने में उस दिन के चंद्रमा के प्राप्त अंकों और तारा बल दोनों को देखकर शुभ अशुभ दिन की गणना करना चाहिए ताकि किसी प्रकार की कार्य में परेशानी उपस्थित ना हो और प्रत्येक कार्य में शुभ फल प्राप्त होता रहै ।

पूजन पाठ में हवन सामग्री

पूजनपाठ के साथ हवन आदि किया जाने का प्रावधान हमारे कर्मकाण्ड पद्धति में है इसमे होने वाले यथा शक्ति स्थापित मण्डल देवता के निर्धारित हवन के लिए हवन सामग्री का परिमाण भी हमारे धर्मशास्त्रों मे वर्णित किया गया है और उसी अनुरूप ही शाकल्य (अर्थात हवन सामग्री)का निर्माण करना चाहिए जिस से कि वांछित लाभ प्राप्त हो सकें।

शाकल्य परिमाण कितना होना चाहिए यह हमारे पाठकों के लाभ हेतु वर्णित किया जारहा है। हवन सामग्री के लिए यह श्लोक निम्नानुसार है

तिलार्धं तण्डुला देया
स्तण्डुलार्धं यवास्तथा ।
यवार्धं शर्कराः प्रोक्ताः
सर्वार्धं च घृतं स्मृतम्।।

भावार्थ- तिल का आधा चावल - और चावल का आधा जौ लेना चाहिए - जौ से आधा शक्कर कही गई है और सबसे आधा घृत कहा गया है -

(एक हिस्सा गुगलादि और यथा शक्ति मेवा)।

हवन सामग्री में अधिक लेने के लाभ हानि निम्नानुसार है

तिलाधिक्ये भवेल्लक्ष्मी
र्यवाधिक्ये दरिद्रता ।
धृताधिक्ये भवेन्मुक्तिः
सर्वसिद्धिस्तु शर्करा ।।

तिल की अधिकता से लक्ष्मी की प्राप्ति होती है और यव की अधिकता से दरिद्रता की प्राप्ति होती है -- घृत की अधिकता से मुक्ति तथा शर्करा की अधिकता से सर्वसिद्धि होती है ।

आयुःक्षयं यवाधिक्यं
यवसाम्यं धनक्षयम् ।
सर्वकामसमृद्ध्यर्थं
तिलाधिक्यं सदैव हि ।।

तिल से जौ कीअधिकता होने पर आयु का नाश होता है -- तिल के बराबर यव रहने पर धन का नाश होता है - अतः हवन सामग्री मे सर्वदा तिल की अधिकता ही उचित कही गई है जिससे कि सम्पूर्ण कार्यों में सिद्धि और सफलता प्राप्त होती है ।

यज्ञ/हवन में तिल की इतनी उपयोगिता क्यों हैं ?

यज्ञ भगवान् विष्णु का स्वरूप है

यज्ञो वे विष्णुः
(तैत्तिरीय ब्राह्मण 1:2:5:40)
विष्णुर्वै यज्ञः
(ऐतरेय ब्राह्मण 1:15)
यो वै विष्णुः स यज्ञः
(शतपथ ब्राह्मण 5:2:3:6)
त्वमेव यज्ञो यष्टा च यज्वनां परमेश्वर।।

हे परमेश्वर ! आप ही यज्ञ करने वालों के यष्टा और यज्ञ स्वरूप हैं ।

तिलाः पुण्याः पवित्राश्च
सर्वपापहराः स्मृताः।
शुक्लाश्चैव तथा कृष्णा
विष्णुगात्रसमुद्भवाः।।

तिल अत्यंत पवित्र है और पुण्यप्रद है तथा वह समस्त प्रकार के पापों को दूर करने वाला है -- वह तिल सफेद और काला दो प्रकार का भगवान् श्री विष्णु के शरीर से उत्पन्न हुआ है ।।

इसी कारण हवन यज्ञादि कार्यो में शाकल्य की मात्रा उपरोक्त वर्णित अनुपात में ही लेना सर्वधा हितकर है।

भाग्य, ज्योतिष और कर्म के आपसी सम्बन्धों का लाभ कैसे उठाएं

पं. के.आर.उपाध्याय, भोपाल

उन्नति के शिखर पर कैसे पहुंचे ..?

जब ज्योतिष की बात होती है.... तब कोई ''कर्मों'' पर आधारित द्रष्टिकोण को प्रमाणित करने लगता है... तो कोई सिर्फ ''भाग्य'' या ईश्वरवाद को ही प्रमाणित करने पर आधारित हो जाता है।

परंतु जैसे- पतंग, माँझा (धागा), और हवा तीनों के सुमेल से ही ऊँचाई प्राप्त कर सकती है.... वैसे ही मनुष्य भी भाग्य, कर्म और समय(ज्योतिष) तीनों को समझकर ही सरलता से लक्ष्य प्राप्त कर सकता है। इन तीनों के समग्र संतुलन को समझने का प्रयास करते हैं...

बड़ा ही अदभुत संयोग होता है भाग्य, कर्म और ज्योतिष का ये तीनों ही धागे मिलकर जीवन रूपी गाडी को खीचने के लिऐ मजबूत रस्सी बनकर एक साथ क्रियावान रहते है और मनुष्य को विभिन्न फल प्रदान करते है.... सही मार्गदर्शन इन कर्म फलों को भोगने के तरीकों में कितना और कैसे परिवर्तन ला सकता है।

अगर सिर्फ यह मान लें कि जो भाग्य में लिखा है वही मिलेगा तो जीवन ज्यादा जटिल हो जाएगा। हमारा स्वभाव स्वयं का भाग्य बनाने का होना चाहिए ना कि यह मान लेने का कि जो किस्मत में होगा वह तो मिलेगा ही। कई बार लोग इस विश्वास में कर्म और प्रयासों से मुंह मोड़ लेते हैं। फिर हाथ में आती है सिर्फ असफलता। भाग्य को मानने वालों को कर्म में विश्वास होना चाहिए। भाग्य के दरवाजे का रास्ता कर्म से ही होकर गुजरता है । कोई कितना भी किस्मतवाला क्यों ना हो, कर्म के सहारे की आवश्यकता उसे पड़ती ही है। बिना कर्म के यह संभव ही नहीं है कि हम किस्मत से ही सबकुछ पा जाएं। हां, यह तय है कि अगर कर्म बहुत अच्छे हों तो भाग्य को बदला जा सकता है। बिना कर्म कोई ज्योतिष काम नहीं करेगा। परंतु योग्य ज्योतिषी ही ये बता सकता है कि कब कौन सा कर्म करना उचित और लाभकारी हो सकता है जैसे.... हम अक्सर सड़कों से गुजरते हुए ट्राफिक सिग्नल देखते हैं। वे हमें रुकने और चलने का सही समय बताते हैं। ज्योतिष या भाग्य भी बस इसी ट्राफिक सिग्नल की तरह होता है।

भाग्यानुसार कर्म तो आपको हर हाल में करना ही पड़ेगा। ज्योतिष आपको यह संकेत कर सकता है कि हमें कब कर्म की गति बढ़ानी है, कब, कैसे और क्या करना है।

सत्यवान सावित्री की कथा देखिए

सावित्री राजकुमारी थी, पिता ने कहा अपनी पसंद का वर चुन लो। पूरे भारत में घूमने के बाद उसने जंगल में रहने वाले निर्वासित राजकुमार सत्यवान को जीवनसाथी के रूप में पसंद किया। राजा ने समझाया, नारद भी आए और बताया कि सत्यवान की आयु एक वर्ष ही शेष बची है। उससे विवाह करना, यानी शेष जीवन वैधव्य भोगना तय है। लेकिन सावित्री नहीं मानी। सत्यवान से विवाह किया। उसने एक वर्ष पहले ही तप, पूजा, उपवास शुरू कर दिए जिस दिन सत्यवान की मौत होनी थी, वो पूरे दिन उसके साथ रही। यमराज उसके प्राण हरने आए। उसने यमराज से अपने पति के प्राणों के बदले में ससुर का स्वास्थ्य, उनका खोया राज और अपने लिए पुत्र मांग लिए। बिना सत्यवान के पुत्र होना संभव नहीं था। भाग्य का लिखा बदल गया। नारद की भविष्यवाणी को सावित्री ने भाग्य का निर्णय ना मानकर उसे भविष्य की प्रेरणा के रूप में समझा और तदानुसार अपना कर्म वेग बढ़ाया और पति के प्राण बचा लिए। आवश्यकता होती है नारद जैसे ज्योतिषी और सावित्री जैसे यजमान की फिर निश्चित ही भाग्य को बदला जा सकता है।

ज्योतिष विज्ञान की आधार शैली

आकाश मंडल में ग्रहों की चाल और गति का मानव जीवन पर सूक्ष्म प्रभाव पड़ता है। इस प्रभाव का अध्ययन जिस विधि से किया जाता है उसे फलित ज्योतिष कहते हैं। भारतीय ज्योतिष वेद

का एक भाग है। वेद के छ अंगों में इसे आंख यानी नेत्र कहा गया है जो भूत, भविष्य और वर्तमान को देखने की क्षमता रखता है। वेदों में ज्योतिष को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। वैदिक पद्धति पर आधारित भारतीय ज्योतिष फल प्राप्ति के विषय में जानकारी देता है साथ ही अशुभ फलों और प्रभावो से बचाव का मार्ग भी देता है लेकिन पाश्चात्य ज्योतिष सिर्फ दृष्ट फलों की बात करता है। आप का भाग्य तभी साथ देगा जब आप का कर्म ठीक होगा, और जब कर्म ठीक होगा तभी ज्योतिष के उपाय भी काम करेगे वो भी तब जब आप उसमे पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ करेंगे तथा ज्योतिष के संकेतों को प्रेरणा मानेंगे, नहीं तो चाहे कितना भी बड़ा ज्योतिषी आ जाये वो कुछ नहीं कर सकता है (ऐसे मानें कि ज्योतिष आपकी पतंग को ऊपर उडाने का समय और हवा की गति का वेग ही बता सकता है बाकी सब आपको करना हैं।

कर्म की विवेचना

क्योंकि कर्म भी 3 प्रकार के होते है। 1.अदृढ़ कर्म 2. दृढ़ कर्म 3. दृढ़ अदृढ़ कर्म

दृढ़ कर्म- कर्म की इस श्रेणी में उन कर्मों को रखा गया है जिनको प्रकृति के नियमानुसार माफ नहीं किया जा सकता! जैसे- क़त्ल, गरीबों को उनकी मजदूरी न देना, बूढ़े माँ - बाप को खाना न देना आदि ये सब कुछ ऐसे कर्म हैं जिनको माफ नहीं किया जा सकता !ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में चाहे रोज शांति के उपाय करे लेकिन उसका कोई भी प्रत्युत्तर उन्हें देखना ही पड़ता है। इनको प्रवल प्रायश्चित विधानों से थोडा परिवर्तित किया जा सकता है।

दृढ़ अदृढ़ कर्म- कर्म की इस श्रेणी में जो कर्म आते है उनकी शांति उपायों के द्वारा की जा सकती है अर्थात ये माफ किये जाने योग्य कर्म होते हैं । इनको सहज उपायों से बदला जा सकता है।

अदृढ़ कर्म (नगण्य अपराध)- ये वे कर्म होते हैं जो एक बुरे विचार के रूप में शुरू होते हैं और कार्य रूप में परिणत होने से पूर्व ही विचार के रूप में स्वतः खत्म हो जाते हैं !अतः ये नगण्य अपराध की श्रेणी में आते हैं और थोड़े बहुत साधारण शांति - कर्मों के द्वारा इनकी शांति हो जाती है ! ऐसे व्यक्ति ज्योतिष के विरोध में तो नहीं दिखते लेकिन ज्यादा पक्षधर भी नहीं होते !

सभी को अपनी दिनचर्या में साधारण पूजन कार्य और मंदिर तीर्थ आदि जाने को अवश्य शामिल करना चाहिए क्योंकि ये आदत पता नहीं कितने ही अदृढ़ कर्मों से जाने - अनजाने में छुटकारा दिला देती है ! आप सभी जानते हें और वेदों में भी लिखा है

''भाग्यं फलति सर्वत्र न विधा न च पौरूषमशुराग कृत विद्याश्चः, वने तिष्ठंति मे सुताः।'' पांडवों की माता कुन्ती श्रीकृष्ण से कहती है कि मेरा पुत्र महापराक्रमी एवं विद्वान है किन्तु हम लोग फिर भी वनों में भटकते हुए जीवन गुजार रहे हैं, क्यों कि भाग्य सर्वत्र फल देता है।

भाग्यहीन व्यक्ति की विद्या और उसका पुरूषार्थ निरर्थक है। वैसे देखा जाए तो भाग्य एवं पुरूषार्थ दोनों का ही अपना-अपना महत्व है, लेकिन इतिहास पर दृष्टि डाली जाए तो सामने आएगा कि जीवन में पुरूषार्थ की भूमिका भाग्य से कहीं अधिक महत्व पूर्ण है। भाग्य की कुंजी सदैव हमारे कर्म के हाथ में होती है, अर्थात कर्म करेंगे तो ही भाग्योदय होगा। जब कि पुरूषार्थ इस विषय में पूर्णतः स्वतंत्र है। माना कि पुरूषार्थ सर्वोपरी है किन्तु इतना कहने मात्र से भाग्य की महत्ता तो कम नहीं हो जाती। आप देख सकते हैं कि दुनिया में ऐसे मनुष्यों की कोई कमी नहीं है जो कि दिन रात मेहनत करते हैं, लेकिन फिर भी उनका सारा जीवन अभावों में ही व्यतीत हो जाता है। अब इसे आप क्या कहेंगें ? उन लोगों नें पुरूषार्थ करने में तो कोई कमी नहीं की फिर उन लोगों को वो सब सुख सुविधाएं क्यों नहीं मिल पाई जो कि आप और हम भोग रहे हैं। एक इन्सान इन्जीनियरिंग/डाक्टरी/मैनेजमेन्ट की पढाई करके भी नौकरी के लिए मारा मारा फिर रहा है, लेकिन उसे कोई चपरासी रखने को भी तैयार नहीं, वहीं दूसरी ओर एक कम पढा लिखा इन्सान किसी काम धन्धे में लगकर बडे मजे से अपने परिवार का पेट पाल रहा है । अब इसे आप क्या कहेंगें एक मजदूर जो दिन भर भरी दुपहर में पत्थर तोडने का काम करता है- क्या वो कम पुरूषार्थ कर रहा है? अब कुछ लोग कहेंगें कि उसका वातावरण, उसके हालात, उसकी समझबूझ इसके लिए दोषी है ओर या कि उसमें इस तरह की कोई प्रतिभा नहीं है कि वो अपने जीवन स्तर को सुधार सके अथवा उसे जीवन में ऐसा कोई उचित अवसर नहीं मिल पाया कि वो जीवन में आगे बढ सके या फिर उसमें शिक्षा की कमी है आदि आदिज से सैकड़ों प्रकार के तर्क हो सकते हैं । मैं मानता हूँ कि इस के पीछे जरूर उसके हालात, वातावरण, शिक्षा दीक्षा, उसकी प्रतिभा इत्यादि कोई भी कारण हो सकता है लेकिन ये सवाल फिर भी अनुत्तरित रह जाता है कि क्या ये सब उसके अपने हाथ में था ? यदि नहीं तो फिर कौन सा ऐसा कारण है कि उसने किसी समृद्ध और कुलीन के घर जन्म न लेकर एक गरीब के घर में जन्म लिया है। किसी तर्कवादी के पास इस बात का उत्तर ये निर्भर करता है इन्सान के भाग्य पर यह ठीक है कि इन्सान द्वारा किए गए कर्मों से ही उसके भाग्य का निर्माण होता है ।

लेकिन कौन सा कर्म, कैसा कर्म और किस दिशा में कर्म करने से मनुष्य अपने भाग्य का सही निर्माण कर सकता है— में एक सूत्र सुनता आया हूँ कि परिश्रम ही सफलता की कुंजी है। ये सिर्फ कर्म वाद है....

अब इस सूत्र में ज्योतिष का समावेष करता हूँ तब ये सूत्र होगा... सही समय और दिशा में किया गया.. परिश्रम ही सफलता की कुंजी है। और गलत समय

या दिशा में किया गया पुर्सार्थ (कर्म) असफलता की गारंटी है। यहीं ज्योतिष की आवस्यता शुरू हो जाती है।

कैसे- सही दिशा और समय जानने का जो माध्यम है, उसी का नाम ज्योतिष है । जैसा की श्रीमद भागवत में भी लिखा हें--भाग्य को बदला नहीं जा सकता। हाँ कर्म बदले जा सकते हैं । कर्म बदलने से भाग्य भी बदल जाता है । इसीलिये कहा जाता है कि भाग्य मनुष्य की मुट्ठी में होता है । चूँकि कर्मों का कर्त्ता मनुष्य ही हैं और कर्म ही परिस्थितियों से मिल कर भाग्य बनाते हैं अतः भाग्य का कर्त्ता भी मनुष्य ही है । कोई मनुष्य सीधे भाग्य को नहीं बदल सकता, उसे पहले कर्म बदलने पडेगें। और इसी बदलाव की गति दे सकता है ज्योतिष।

परिस्थितियाँ प्रायः मनुष्य के वश में नहीं हैं क्योंकि भले ही वे किसी भी कारण से बनी हों, बनने के बाद बदली नहीं जा सकतीं और न नष्ट ही की जा सकती हैं। अतः कह सकते हैं कि मनुष्य का अधिकार केवल कर्मों में ही है, परिस्थिति या फल में नहीं। इसीलिये गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है.... कर्मण्येवा-धिकारस्ते मा फलेषु कदाचन । तेरा अधिकार कर्मों में ही हैं; फलों में तो कभी नहीं।..... गीता के दूसरे अध्याय के (47) श्लोक में श्री कृष्ण कहते हैं, कि हे मनुष्य! तेरा केवल कर्म करने में ही अधिकार है कर्म के फलों में तेरा कोई हस्तक्षेप नहीं है!

होइहि सोई जो राम रचि राखा,
को करि तरक बडावहि साखा ।।

ये रामचरितमानस में तुलसी दास भी कहते है, कि होता वही है, जो राम अर्थात ईश्वर ने निर्धारित कर दिया है,इसलिए हमें व्यर्थ ही तर्क नहीं करना चाहिए !

महर्षि वेदव्यास और तुलसीदास के इन दोनों कथनों कि तुलना करे तो यही प्रतीत होता है , कि मनुष्य के जीवन पर भाग्य का ही प्रभाव होता है ! तो क्या ये सही है मनुष्य के द्वारा किये गए कर्मो का कोई औचित्य नहीं है और यदि है तो फिर इन दो महापुरुषों के कथनों में केवल भाग्यवादिता का ही उल्लेख क्यों हुआ है । इसी परिप्रेक्ष्य में यदि बात करे तो रामचरितमानस में ही तुलसीदास जी ने ही कहा है कि कर्म की भी जीवन में उतनी ही उपयोगिता है जितनी भाग्य की!

कर्म प्रधान विश्वकरि राखा !
जो जस करिय सो तस फल चाखा!

अर्थात जो जैसा कर्म करेगा उसे वैसा ही फल प्राप्त होगा! अब यदि जीवन के साथ अध्यात्म की तुलना कि जाये तो प्रतीत होता है कि योग्य कर्म ही भाग्य को बदलने में सहायक होता है।

बहुत बार ऐसा होता है कि जीवन की दूर की घटनाओं को देखना संभव नहीं हो पाता है और बहुत कुशल ज्योतिषी भी भविष्य की घटनाओं को पढने में सक्षम नहीं हो पाते किन्तु इसका अर्थ यह नहीं होता की ज्योतिषी के ज्ञान में कमी है. कई बार प्रश्नकर्ता के पाप (अशुभ) कर्मों का भार इतना अधिक होता है की वह अच्छे से अच्छे ज्ञानी के विवेक और अंतर्दृष्टि के आगे एक दीवार बना देता है जिससे की ग्रहों को समझ पाना और अन्य गणनाएं करना मुश्किल हो जाता है. ज्योतिषी अगर साधना के उच्च स्तर पर है, जो वह कुछ हद तक उस सीमा को पार कर समस्या का समाधान ढूंढने में सक्षम हो जाता है. इसका तात्पर्य यह है की प्रश्नकर्ता को यह भी समझना चाहिए की ज्योतिष को एक विज्ञान की तरह लें।

उदाहरण के लिए चिकित्सा क्षेत्र में बहुत उन्नति होने के बाद भी कहीं न कहीं कुछ सीमा होती है और चिकित्सक को सारी जांच के परिणामों को अपनी बुद्धि के साथ रोग की पहचान करनी पड़ती है..... ज्योतिष में भी ग्रह स्थिति और अन्य योगों के द्वारा समस्याओं का कारण ढूंढा जाता है किन्तु ज्योतिष विज्ञान

की भी अपनी सीमाएं हैं. ये सीमायें है - ज्योतिषी के ज्ञान में कमी, साधना के क्षेत्र में लगन का ना होना , प्रश्नकर्ता का अविश्वास और उसके बुरे कर्मों की तीव्रता।

ज्योतिषी उपायों के द्वारा अपने कर्मों का अँधेरा कम करना चाहिए. जैसे जैसे हमारे पिछले कर्मों का भार कम होता जाता है, भविष्य की चीज़ें स्पष्ट दिखने लगती हैं. इसी कारण सर्वप्रथम प्राथमिक उपाय करते रहें और समय समय पर मार्ग दर्शन अवश्य लेकर आगे के दिव्य उपायों की ओर कदम बढायें. भाग्य कौन बदल सकता है? अत्यंत गुणी, आत्म साधक ज्योतिष ही भविष्य की सही दिशा जानकर उसमें बदलाव के उपाय कर सकता हैं. समय को सही तरीके से सिर्फ साधना की उच्चतम स्थिति में ही देखा जा सकता है. कई अल्प ज्योतिष वेक्ता एकाग्रता के कारण समय को सही तरीके से नहीं देख पाते है। साधना की उच्चता और ध्यान की गहनता में ही भाग्य (कर्मफल) को मनोवांछित दिशा देने का प्रायोजन हो सकता है, और नवीन भाग्य का निर्माण संभव है ।

क्योंकि भाग्य-परिवर्तन के लिऐ त्रिकाल मंथन (यानि -भूत, वर्तमान और भविष्य को एक ही समय में विलोपित करके एक नवीन पुरुषार्थ का उपक्रम उपाय निश्चित करना होता है, जो अथाह ज्योतिषीय ज्ञान, पूर्ण एकाग्रता और प्रवल इष्टवल के कदापि संभव नहीं है।)

ज्योतिषीय सूत्र तो पुस्तकों, संचार साधनों, शिक्षण या अन्य साधनों के द्वारा भी सीखी जा सकती है, परन्तु भविष्य का सही ज्ञान, और भाग्य-निरूपण करने की क्षमता सिर्फ दीर्धकालीन इष्ट-साधना, और एकाग्रचित्त काल-साधना में ही संभव है।

क्योंकि फलित के लिए नियम - हमारी कुंडली में केवल ग्रह हैं जो गोचरवश बदलते रहते हैं और उनका प्रभाव हमारे जीवन पर पड़ता है. और ज्योतिष में यही ऐसे कारक हैं जिन तक पहुंचना और कुछ हद तक समझ पाना हमारे लिए संभव है एवं इन्ही की योगादि तथा भोगादि दशानुसार ... भाग्य-परिवर्तन हेतु कर्म का उचित काल और कर्म की श्रेणी(उपायों) का निर्धारण किया जाता है।

इसी को सरल भाषा मे ये कह सकते हैं कि..... ग्रहों के शुभ-अशुभ काल का निर्धारण करके हमारे वैदिक महिर्षियों ने अपने सूक्ष्मज्ञान से ज्योतिष, तंत्रादि, एवं कर्मकांड जैसी अतिसूक्ष्म वैदिक विज्ञान के उपायों के माध्यम से अपने प्रारब्ध कर्मों (ग्रह-फल) को बदलने की अद्भुत चमत्कारी शैली प्रदान की है।

परंतु इन उपायों के सफल होने के लिये आवश्यक अंग हैं ज्योतिष पर पूर्ण श्रद्धा, विश्वास, समर्पण भाव और प्रारब्ध को बदले की प्रवल इच्छाशक्ति ।।

नए भविष्य निर्माण के लिए पहला कदम है अपनी कमियों को समझकर उन्हें दूर करने का पूर्ण प्रयास करना। जो भी उपाय करें..उसके लिए हमें शान्तचित्त, संयमित, और समर्पित होना चाहिए। साथ ही अपने कर्मों का सजग रह कर विश्लेषण और संशोधन भी करना चाहिए। यदि कमियों को स्वार्थ व अहंम के वशीभूत होकर हमेशा सही ही साबित करेंगे। तो कभी भी उन्नति नहीं कर पायेंगे और न ही भविष्य को बदल पायेंगे। ये निश्चित है कि...हमारे पूर्व के बुरे कर्मों ने ही वर्तमान को विषम परिस्थितियों में डाला है और हमारे अन्दर नकारात्मक कर्मों की प्रवृत्ति भी पैदा की है। यदि हम लोभी, स्वार्थी और सब कुछ सहज पाने की नीच प्रवृत्ति में ही लिप्त रह जायेंगे तो भविष्य बिगड़ता ही जाएगा । अतः सबसे महत्त्वपूर्ण है अपनी कमियों को समझना और दूर करना।।

एक बात और किसी भी प्रारब्ध पाप कर्म के प्रभाव को निष्क्रिय करने के लिए वर्तमान में हमें उसके परिमाण, तीव्रता और गुणात्मकता से अधिक पुण्यकर्म या प्रायश्चित कर्म करने पड़ते है , तब कहीं एक साधारण परिवर्तन प्राप्त किया सकता है।

यही कर्म का अटल सिद्धांत है

अतः यह हमेशा ध्यान रखें कि समस्या जितनी बड़ी होगी उसी के अनुसार मंत्र जाप , दान, अनुष्ठान , और वैदिक तंत्रादि अन्य बडे उपायों की जरुरत पड़ती है. यह समझना एक भूल होती है कि बड़ी बड़ी समस्याएँ केवल एक छोटे से ही उपाय से शीघ्र संभव हो जायेगी , हाँ उस समस्या का वेग व तीव्रता कुछ सीमा तक कम नजर आ सकती है परन्तु परिस्थितियों में बदलाव नहीं ला सकते. पूर्व जन्म के कर्मों को निष्फल करने के लिए बहुत सघन प्रयासों की ज़रूरत होती है. कई बार इसमें पूरा जन्म भी लग जाता है.कर्मों की प्रबलता और उपायों में लगने वाला समय -कर्म फल की तीव्रता को 3 भागों में विभाजित किया गया है-1- दृधा कर्म 2- दृधाअदृधा कर्म 3- अदृधा कर्म।

जो दृधा कर्म होते हैं उनको किसी भी उपाय से आसानी से नहीं बदला नहीं जा सकता और ऐसे कर्मो के फल बहुत हद तक भोगने ही पड़ते है या विशाल पुण्य कर्मों से कुछ कम किऐ जा सकते हैं । कुंडली में जब एक ही परिस्थिति के होने के लिए कई ग्रह उत्तरदायी हो तो वह कठिन दृधा कर्मों को बताते हैं. ऐसी परिस्थिति में परिवर्तन लाना बहुत कठिन होता है . यह परिस्थिति और भी विकट हो जाती है जब लग्न, चन्द्र लग्नऔर सूर्य लग्न में भी वही परिस्थितियाँ घटित हो रही हो. यह कर्म केवल ईश्वर और गुरु की कृपा से ही बदलना संभव है।।

दृधा-अदृधा कर्म - कर्मों की एक मिश्रित परिस्थिति होती है जिसमे कर्मों को निष्प्रभावी को किया जा सकताहै किन्तु अति कठोर प्रयासों की जरुरत होती है . इसमे समय भी अधिक लगता है और अदम्य इच्छा शक्ति व योग्य मार्गदर्शक की भी आवश्यकता होती है ।

अदृधा कर्म - इन कर्मों के प्रभावों को छोटे-छोटे ज्योतिषीय उपायों से सहज व कम समय में परिवर्तित किये जा सकता है।।

इसलिए यह याद रखें कि जो कर्म

जितना अधिक प्रबल होगा उसको सही करने में समस्याए भी उतनी ही आती है. समय कठिन परीक्षा लेता है और कई बार ऐसी परिस्थितिया उत्पन्न होंगी कि उपाय करने मन ही बदल जाये।।

भाग्य कैसे बदलता है

हम जो भी मानसिक, शारीरिक व भौतिक कर्म करते हैं, वह हमारे मानस पर संस्कार के रूप में अंकित हो जाते हैं और भविष्य में फलित होते हैं। उदाहरण- यदि हम जिस फलदार वृक्ष का बीज बोते हैं, तो हमें वही फल प्राप्त होता हैं. उस वृक्ष से हम अन्य फल नहीं पा सकते. किन्तु वह वृक्ष का बीज उचित मात्रा- रूप से फल दे इसके लिए बाह्य परिस्थितियाँ भी उत्तरदायी होती हैं, जैसे की ज़मीन, खाद, ऋतु और पानी ।

उदाहरण में बीज कारण हैं बदला नहीं जा सकता..... और और अन्य सभी कारक हैं जिनकी मात्रा-समय आदि परिवर्तित किये जा सकते हैं । इससे यह सिद्ध हो गया कि किसी भी कारण (बीज) को फलित होने के लिए उपयुक्त कारक (परिस्थितियाँ) चाहिए। अब हम मान लें कि हमने अच्छा बीज, अच्छी ज़मीन और उचित समय पर बो दिया और समय पर खाद-पानी भी दिया..... फिर भी फल पाने के लिए हमें पौधे के वृक्ष बनने और फल पकने के लिए निश्चित ऋतु तक प्रतीक्षा करनी पड़ती है, इसी तरह, जब हम कर्म रुपी बीज बोते हैं या उपाय करते हैं, तो उसके फल के लिए हमें धैर्य रखना चाहिए और समय की प्रतीक्षा करनी चाहिए ।। इसी बात को अब हम बुरे कर्मों के लिए समझते हैं. अगर हमने पिछले जन्म में कोई बुरा कर्म रुपी बीज बो रखा है, अगर हम उसे सही परिस्थितियाँ उपलब्ध न कराएं तो उसका फल हमें नहीं मिलेगा. यही भविष्य निरूपण/ परिवर्तनकी कुंजी है।।

और ज्योतिष विज्ञान -हमारे कर्मो का ढांचा बताता है, यही हमारे भूत वर्तमान और भविष्य में एक कड़ी बनता है।

इसी आधार भूत सिद्धांत पर विद्वान, ज्योतिषी, तत्व-ज्ञानी और तंत्रज्ञ भाग्य परिवर्तन के वैदिक उपायों जैसे तंत्र-मंत्र-यंत्र, कर्मकांड, व्रत, दान आदि अनुष्ठान निर्धारित करते हैं।।

ज्योतिष विज्ञानं हमारे कर्मो का आकलन बताता है . यह हमारे भूत वर्तमान और भविष्य में एक कड़ी बनता है. कर्म चार प्रकार के होते है-1- संचित 2- प्रारब्ध 3- क्रियमाण 4- आगम संचित-

1. संचित कर्म - समस्त पूर्व जन्म के कर्मो का संगृहीत रूप है ।जो भी कर्म पिछले सारे जन्मों में जानकर या अनजान रूप से किये होते है वह सभी हमारे कर्म खाते में संचित हो जाते है.

वो जैसे-2 परिपक्व होते जाते है हम उसे हर जन्म में भोगते है. जैसे किसी भी वृक्ष के फल एक साथ नहीं पकते, बल्कि फल प्राप्ति के महीने में अलग - अलग दिनों में ही पकते है।

2. प्रारब्ध - प्रारब्ध कर्म , संचित कर्म का वह भाग होता है जिसका भोग वर्तमान जन्म में करने वाले है . इसी को भाग्य भी कहते है. समस्त संचित कर्मों को एक साथ नहीं भोगा जा सकता। वह कर्म जो परिपाक हो गया है यही समय दशा अन्तर्दशा के अनुसार जाना जाता है।।

3. क्रियमाण- क्रियमाण कर्म वह कर्म है जो हम वर्तमान में करते है किन्तु इसकी स्वतंत्रता हमारे पिछले जन्म के कर्मो पर निर्भर करती है ये कर्म ईश्वर प्रदत्त वह संकल्प शक्ति है, जो हमारे कई पूर्व जन्म के कर्मो के दुष्प्रभावों को समाप्त करने में सहायता करती है. उदाहरण के लिए वर्तमान जन्म में माना कि क्रोध अधिक आता है. यह क्रोध कि प्रवृत्ति

पिछले कई जन्मों के कर्मों के कारण बन गयी है. यह तो सर्व विदित है कि क्रोध में कितने गलत कार्य हो जाते है. अगर कोई ध्यान और अन्य उपायों के द्वारा क्रोध को सजग रहकर नियंत्रित करे तो शनै-शनै प्रयासों के द्वारा क्रोध पर संयम पाया जा सकता है और भविष्य में कई बुरे कर्मों और समस्याओ जैसे कि रिश्तों में तनाव इत्यादि को दूर किया जा सकता है.

4. आगम - आगम कर्म वह नए करम है जो की हम भविष्य में करने वाले हैं. यह कर्म केवल ईश्वर व गुरु कृपा से ही संभव है.जैसे की भविष्य में होने वाली घटनाओं का पूर्वाभास और उस समस्या के समाधान के लिए विद्वानों के द्वारा दिशा निर्देश. जैसे- जैसे हमारे पाप कर्मों का क्षरण होता जाता है, उच्च शक्तियों की सत्संग मिलने लगता है और हम पुण्य कर्म करके अपना भविष्य अपने विचारों, शब्दों और कर्मो के द्वारा बनाते है. कर्म दो प्रकार के होते है - शुभ और अशुभ. दूषित कर्म जीवन में दुःख लाते है . हमारे पूर्व जन्म के कर्म मन को प्रभावित करते है . अगर हम नकारात्मक विचारों को, जो मन को निर्वल बनाते है, ध्यान और उपायों के द्वारा दूर करें तो यही मन सकारात्मक विचारों की उर्जा से हमारे कर्मो को शुद्ध कर देता है जिससे एक नए भविष्य का निर्माण संभव हो जाता है। वैदिक उपायों से पुराने कर्मो को संतुलित कर देते है तो मन के ऊपर से उनकी बाधा हट जाती है. भविष्य उसी तरह से परिवर्तित होता है जब चेतना अथवा मन परिवर्तित होता है . किसी भी समस्या से मुक्ति मिल सकती है केवल सहज रूप से सही दिशा जानकर उस दिशा में प्रयास करने की आवश्यकता होती है।।

ग्रह हैं कर्म-निर्धारण का वैदिक विज्ञान....

ग्रह हमारे कर्मों का प्रतिनिधित्व करते हैं. उनकी गति यह निर्धारित करती है की कब किस समय की उर्जा हमारे लिए शुभ या अशुभ है।

काल की एक निश्चित्त प्रवृति होंने के कारण एक साधक ज्योतिषी उसकी लय-ताल को जानकर भूत, वर्तमान और भविष्य में होने वाली घटनाओं का विश्लेषण कर सकता है.एक ही ग्रह अपने चार स्वरूपों को प्रदर्शित करता है. अपने निम्नतम स्वरुप में अपने अशुभ स्वभाव/राक्षस प्रवृत्ति को दर्शाते हैं।। अपने निम्न स्वरुप में अस्थिर और स्वेच्छाचारी स्वभाव को बताते हैं।। अपने अच्छे स्वरुप में अच्छी प्रवृत्तियों, ज्ञान, बुद्धि और अच्छी रुचियों के विषय में बताते हैं।। अपनीउच्च स्थिति में दिव्य गुणों को प्रदर्शित करते हैं, और उच्चतम स्थिति में चेतना को परम सत्य से अवगत कराते हैं।।

उदाहरण के लिए मंगल ग्रह साधारण रूप में लाल रंग की ऊर्जा का प्रतिनिधित्व करता है. अपनी निम्नतम स्थिति में वह अत्याधिक उपद्रवी बनाता है. निम्न स्थिति में व्यर्थ के झगड़े कराता है. अपनी सही स्थिति में यही मंगल ऐसी शक्ति प्रदान करता है की निर्माण की असंभव संभावनाएं भी संभव बना देता है.ज्योतिष विज्ञान के माध्यम से जब हमें समस्याओं का कारण ग्रहों के माध्यम से पता चलता है, तो उन्ही की उर्जा को नकारात्मकता से हटाकर पूजा, दान, मंत्र, इत्यादि विधानों से सकारात्मक रूप में बदल देते हैं. क्योंकि ऊर्जा का कभी क्षय नहीं होता किन्तु उसका स्वरुप परिवर्तित किया जा सकता है.यही सूक्ष्म परिवर्तन भाग्य को परिवर्तित करने में बड़ा सहायक होता है।।

ग्रह केवल बंधन का कारण ही नहीं वरन उन समस्याओं से मुक्ति का मार्ग भी दिखाते हैं। ज्योतिष को उचित ढंग से प्रयोग किया जाए तो हमें और विश्व चेतना से सामंजस्य स्थापित कराता है और ग्रहों की भौतिक सीमाओं से भी ऊपर निकलने की शक्ति दे सकता है,जो कि परमगति तक जाने के लिए आवश्यक है।

भाग्य कैसे बनता है - हर व्यक्ति का भाग्य उसके पूर्व जन्म के कर्मों के अनुसार निर्धारित होता है और उन्ही कर्मों की वजह से वर्तमान जन्म में एक विशेष तरीके से व्यवहार करने के लिए बाध्य होता है. सुख-दुःख, धन-गरीबी, क्रोध, अहंकार आदि स्वभाव एवं गुण जो भी हम जीवन में पाते हैं वह सब पूर्व निर्धारित होता है लेकिन कुछ नवीन कर्मों से प्रारब्ध कर्मफल में परिवर्तन संभव है ।।

कोई भी व्यक्ति भाग्य को परिवर्तित नहीं कर सकता हैं और ना ही भाग्य के विषय में आसानी से जाना जा सकता है। ज्योतिष केवल घटनाएं जानने का विज्ञान नहीं है, वह हमें हमारा भूत और भविष्य भी बताता है. किन्तु इसके लिए साधनारत योग्य समाज सेवा मे रतज्योतिषी की आवश्यकता होती है. समय क्या है और कैसे बनता है -समय ही एक सबसे बड़ी शक्ति है जो की पूरे ब्रह्माण्ड को नियंत्रित करती है . समय की निश्चित गति होती है. ग्रहों की अलग अलग गति हमारे जीवन में भिन्न भिन्न प्रवर्तिंया लाती है. उदहारण के लिए धरती का अपनी धुरी पर घूमना दिन और रात बनाता है, चन्द्रमा की पृथ्वी के चारों ओर नक्षत्र दिन/मास और सूर्य के केंद्र में धरती की परिक्रमा वर्ष निर्धारित करती है. समय के हर पल की गतिमें एक विशेष गुण होता है. जब भी हमारे जीवन में कुछ विशेष समय होता है, वह सृष्टि के समय की तरंगों के समानांतर होता है. उदाहरण के लिए हमारे जीवन में विवाह अथवा व्यवसाय शुरू करने का समय, अन्तरिक्ष के समयचक्र में भी उर्जा की अधिकता से पूर्ण होता हैं।

जैसे उचित समय पर वोया गया बीज ही पौधा बनकर फल दे सकता है... इसी तरह सही विद्वान सही समय पर ही ज्योतिषी द्वारा ली गयी कर्म प्रेरणा भी कर्म परिवर्तन में सहायक होकर ...कर्मफल के असर में परिवर्तन ला सकती है

शक्ती-उपासक
पं.कृपाराम उपाध्याय
(ज्योतिर्विद एवं तंत्रज्ञ)
भोपाल म.प्र.

अखरोट सेवन करने के अनजाने लाभ

शैलेन्द्र सिंघला पलवल
(हरियाणा)

1) पौष्टिकता से भरा अखरोट

अखरोट में वसा की मात्रा मानी जाती है और इसलिए इन्हें वजन बढ़ाने वाला माना जाता है। लेकिन, हकीकत इससे जरा अलग है। अखरोट भी ऐसा ही 'नट' है। इसमें कई पौष्टिक तत्व होते हैं। आइए जानें क्या हैं अखरोट के फायदे-

2) वजन कम करे

अखरोट वजन कम करने में मदद करता है। एक औंस यानी करीब 28 ग्राम अखरोट में 2.5 ग्राम ओमेगा थ्री फैटी एसिड, 4 ग्राम प्रोटीन और 2 ग्राम फाइबर होता है जिससे लंबे समय तक तृप्ती की भावना बनी रहती है। वजन कम करने के लिए जरूरी है कि आपका पेट भरा रहे। तो अगर आप वजन कम करना चाहते हैं, तो आपको अखरोट को अपने आहार में जरूर शामिल करना चाहिए।

3) नींद दिलाये

नट्स आपकी नींद सुधार सकते हैं, इनमें मेलाटोनिन हॉरमोन होता है, जो नींद के लिए प्रेरित करना और नींद को नियंत्रित करता है। अगर आप शाम को या सोने से पहले अखरोट खायें तो इससे आपकी नींद में सुधार आए।

4) बालों के लिए फायदेमंद

अखरोट आपके बालों के लिए भी फायदेमंद होता है। अखरोट में मौजूद विटामिन बी7 होता है जो आपके बालों को मजबूत बनाने का काम करता है। विटामिन बी7 बालों का गिरना रोककर उन्हें बढ़ाने में मदद करता है।

5) दिल की बीमारियों से बचाए

अखरोट में एंटी-ऑक्सीडेंट्स और ओमेगा थ्री फैटी एसिड भरपूर मात्रा में होता है, जो इसे दिल की बीमारियों से लड़ने में काफी असरदार बनाता है। इसके साथ ही यह बुरे कोलेस्ट्रॉल को कम करने और अच्छे कोलेस्ट्रॉल में इजाफा करने का भी काम करता है, जो इसे आपके दिल के लिए और भी उपयोगी बनाता है।

6) डायबिटीज से बचाये

एक शोध के मुताबिक जो महिलायें सप्ताह में दो बार 28 ग्राम अखरोट खाती हैं, उन्हें टाइप टू डायबिटीज होने का खतरा 24 फीसदी कम होता है। जर्नल ऑफ न्यूट्रीशन में प्रकाशित इस शोध में यह भी कहा गया कि हालांकि यह शोध महिलाओं पर किया गया था, लेकिन विशेषज्ञों का यह मानना है कि पुरुषों को भी अखरोट के इसी प्रकार के लाभ मिलने की उम्मीद है।

7) शुक्राणु की गुणवत्ता बढ़ाये

रोजाना 2.5 औंस यानी करीब 75 ग्राम अखरोट रोजाना खाने से स्वस्थ युवा पुरुषों के शुक्राणुओं की गुणवत्ता में सुधार होता है। यूसीएल के शोधकर्ताओं का कहना है रोजाना अखरोट का पर्याप्त सेवन करने से 21 से 35 वर्ष की आयु के पुरुषों के शुक्राणुओं में अधिक जीवनशक्ति और गतिशीलता आती है।

8) त्वचा चमकाये

अखरोट में बी-विटामिन और एंटी-ऑक्सीडेंट्स भरपूर मात्रा में होते हैं, जो आपकी त्वचा को फ्री-रेडिकल्स से बचाते हैं। इससे आपकी त्वचा को उम्र के निशान और झुर्रियों के प्रभाव से भी बचाया जा सकता है। तो अगर आप मिडिल एज में चमकदार त्वचा पाना चाहते हैं तो अखरोट का सेवन कीजिए।

9) डिमेंशिया को रखे दूर

रोजाना अखरोट का सेवन आपको डिमेंशिया से दूर रखने में मदद करता है। शोध के मुताबिक अखरोट में मौजूद विटामिन ई और फ्लेवनॉयड डिमेंशि?या उत्पन्न करने वाले हानिकारक फ्री-रेडिकल्स को नष्ट करने में मदद करते हैं। इसके साथ ही अखरोट समझने और सीखने की क्षमता को भी बढ़ाता है।

10) गर्भवती महिलाओं के लिए फायदेमंद

गर्भवती महिलायें जो अखरोट जैसे फैटी एसिड युक्त आहार का सेवन करती हैं, उनके बच्चों को फूड एलर्जी होने की आशंका बहुत कम होती है। शोधकर्ताओं का कहना है कि मांओं के आहार में पॉलीअनसेचुरेटेड फैटी एसिड (पूफा) होता है उनके बच्चे का विकास अच्छी तरह होता है। पूफा रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाली कोशिकाओं को मजबूत बनाता है।

11) स्तन कैंसर का खतरा घटाये

मार्शल यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने पाया रोजाना दो औंस यानी करीब 56 ग्राम अखरोट का सेवन स्तन कैंसर से बचाने में मदद करता है। रोजाना अखरोट का सेवन करने वालों को स्तन कैंसर का काफी कम होता है।

12) तनाव दूर भगाये

अगर रोजमर्रा का तनाव आपकी सेहत को नुकसान पहुंचा रहा है, तो अब वक्त आ गया है कि आप अखरोट का सेवन शुरू कर दें। एक शोध के मुताबिक अखरोट अथवा उसके तेल को आहार में शामिल करने से तनाव के लिए जिम्मेदार रक्तचाप को दूर करने में मदद मिलती है। अखरोट में फाइबर, एंटी-ऑक्सीडेंट्स और असंतृप्त फैटी एसिड विशेषकर अल्फा लिनोलेनिक एसिड और ओमेगा थ्री फैटी एसिड मौजूद होते हैं।

नारायण सेवा ज्योतिष संस्थान
ज्यो.शैलेन्द्र सिंगला पलवल हरियाणा

वास्तु पुरुष की उत्पत्ति

बीना देसाई, मुम्बई

पौराणिक मान्यता के अनुसार शिव के पसीने से एक पुरुष का आकार बना, जिसे ब्रम्हा जी ने मानस पुत्र माना, और उसको वास्तु पुरुष नाम दिया, साथ उसकी आकृति देवता के सामने रखकर कहा, जो देवता जो दिशा को चुनेगा उस आधरित अगर भवन, मकान का निर्माण होगा उसका घर सदैव सुख,शांति,समृद्धि एवं वैभव से परिपूर्ण होगा।

जैसे पूर्व दिशा मे सूर्य देव साथ विराजमान इंद्र हुए अब सूर्य के कारकतत्व अनुसार ये दिशा मे जहाँ से सकारात्मक ऊर्जा का वहन हेतु यहाँ मुख्यद्वार (मेनगेट) साथ खिड़की हो तो पोसिटिव ऊर्जा मिलती है

पश्चिम- यहाँ आये वरुण देव साथ शनि देव यहाँ टॉयलेट या शनि के कारकतत्व से जुड़ी चीजे़ रख सकते है।

उत्तर - यहाँ बुध और कुबेर देव विराजमान हुए यहाँ खिड़की होना, साथ तिजोरी इस बाजू खोलना संपत्ति के लिए शुभ है।

दक्षिण - यहाँ मंगल देव साथ यम दिशा है यहाँ बिजली उपकरण साथ भारी सामान रखने से नेगेटिव प्रभाव कम होगा।

नॉर्थ ईस्ट- ये दिशा भगवान शिव और देवो के गुरु बृहस्पति की है यानी यहाँ मंदिर होना शुभ होगा।

नार्थ वेस्ट- दिशा चंद्रदेव और वरुणदेव की है वायत्य कोण होने से वायु की अधिकता होनी चाहिए साथ ही यहाँ पानी,और जल से जुड़ी चीजो रखनी चाहिए।

साउथ-ईस्ट - शुक देव के साथ अग्नी देव का स्थान होने से रसोई घर हो तो शुभ होगा

साउथ वेस्ट - ये राहु-केतु से जुड़ा है तोह घर से गंदगी से जुड़ी चीज़ों को यहाँ से निकाल करने को योग्य है

सभी दिशा पर अलग अलग ग्रह का प्रभाव है, अगर वह ग्रह के कारकतत्व अनुसार घर की रचना रखना ही वास्तु दोष को दूर करता है

वास्तु दोष दूर करने हेतु

1-स्टोरेज कम करे

2-पुरानी, ना काम आने वाली चीज़ों को निकाल दो

3-स्वछता साथ घर मे पाठ पूजा करो जो नेगेटिविटी को दूर करे वैसे।

ये विषय बहुत बड़ा है लेकिन संक्षिप्त जानकारी ज्ञानार्जन हेतु बताया आपको।

ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श
ग्रहों के अरिष्ठ प्रभाव के निवारण हेतु
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्श के लिए

डॉ. हेमचन्द्र पाण्डेय
बी–14, सुरेन्द्र गार्डन, होशंगाबाद रोड, भोपाल
फोन : 0755–2418908, मो.: 9425008662
समय प्रात: 9:30 बजे से 11:30 बजे तक
ईमेल : hcp2002@gmail.com
परामर्श के लिए
पूर्व समय लेना आवश्यक :

स्वस्थ्य एवं दीर्घायु के ज्योतिषीय सूत्र

सुप्रिया चौधरी
अहमदाबाद (गुजरात)

ज्योतिष शास्त्र के अध्ययन के द्वारा जातक के दीर्घायु होने की पुष्टि प्राचीन ग्रंथों के द्वारा प्राप्त हुई है। कुंडली का प्रथम स्थान उसके जन्म को बताता है, तथा अष्टम भाव आयु तथा मृत्यु की जानकारी देता है। गुरु एवं शुक्र क्रमशः देवताओं के गुरु तथा दानवों के गुरु इन दोनों का संबंध संजीवनी योग का निर्माण करता है, यह योग जिनकी कुंडली में स्थित होता है, प्रायः देखा गया है कि वे दीर्घायु 75वर्ष से अधिक आयु प्राप्त करते हैं। यदि दूसरी तरह से भी देखें तो लग्न के द्वितीय भाव में शुक्र की राशि तथा बारहवें भाव में गुरु की राशि होती है, इसी तरह अष्टम भाव के भी दूसरे भाव में गुरु की राशि तथा बारहवें भाव में शुक्र की राशि होती है, इसीलिए यह दोनों की युति संजीवनी योग का निर्माण करती है। इसके अलावा शनि जो कि आयु कारक ग्रह हैं, उसकी स्थिति भी जातक के आयु के निर्धारण में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान करती है। प्राचीन कई ग्रंथों में जातक के आयु से संबंधित कई सारे रोचक तथ्य उपलब्ध हैं, जिनमें हम आज दीर्घायु योग की बात कर रहे हैं। जन्म से मृत्यु तक का समय आयु कहलाता है। इस आयु को हमारे ऋषि-मुनियों ने अरिष्टायु, अल्पायु, मध्य आयु, दीर्घायु तथा परमायु आदि में बांटा है। आयुर्वेद कहता है प्रकृति हमें 120 वर्ष जीने का मौका देती हैं। इसी को पाराशर ऋषि द्वारा फलित ज्योतिष में विशोंतरी महादशा में 120 वर्ष निर्धारित की गई है।

जन्म कुंडली में देखें तो दीर्घ जीवन के कुछ सूत्र इस प्रकार हैं -

1) लग्न पंचम एवं नवम भाव का स्वामी बलवान हो तथा गुरु ग्रह की स्थिति भी शुभत्व वाली हो क्योंकि गुरु ग्रह के शुभत्व के अनुसार भी आयु का निर्धारण होता है गुरु ग्रह अच्छी स्थिति में है तो आयु भी अच्छी होगी अतः गुरु ग्रह को बलवान करने के लिए शुद्ध सात्विक शाकाहारी बने रहकर गुरुवार, एकादशी और पूर्णिमा का व्रत करना चाहिए, जिससे गुरु ग्रह प्रसन्न होकर हमें दीर्घायु का आशीर्वाद देते हैं।

2) कुंडली में अष्टम भाव तथा अष्टमेश बलवान हो, अपनी स्वराशिगत हों, मित्र क्षेत्रीय हों यह अपनी उच्च राशि में हों तो दीर्घायु होते हैं।

3) कुंडली में अष्टमेश, लग्नेश तथा दशमेश तीनों केंद्र त्रिकोण या लाभ भाव में हो तो भी जातक दीर्घायु होते हैं।

4) शनि स्वराशिगत, उच्च राशिगत उपचयस्थान अथवा अष्टम में हो इसके अलावा अष्टमेश बनकर शनि पंचम भाव में हो तो भी जातक दीर्घायु होते हैं।

5) कुंडली में अष्टमेश, लग्नेश अष्टम भाव में हो अथवा अष्टमेश लग्नेश लाभ भाव में हो तो भी दीर्घायु योग बनता है।

6) कुंडली में षष्ठ भाव के स्वामी तथा व्यय भाव के स्वामी लग्न में हों, दशम भाव के स्वामी केंद्र में हों या लग्नेश केंद्र में हो तो भी जातक दीर्घायु होते हैं।

7) कुंडली में दशमेश उच्च राशिगत होकर पंचम में हों, अष्टमेश केंद्र में हों, केंद्र में शुभ ग्रह हों तो जातक दीर्घायु होते हैं।

8) कुंडली में दशमेश अष्टमेश तथा लग्नेश तीनों शनि से युत होकर केंद्र में हो तो भी दीर्घायु योग बनता है।

9) कुंडली में यदि सभी पाप ग्रह तीसरे, छठवें तथा ग्यारहवें भाव में बैठे हों तथा सभी शुभ ग्रह केंद्र में हों तो भी जातक दीर्घायु होगा।

10) लग्न में स्थित अष्टमेश गुरु शुक्र से दृष्ट हो तो भी जातक दीर्घायु होंगे।

11) सभी शुभ ग्रह छठवें, सातवें या आठवें और पाप ग्रह तीसरे तथा ग्यारहवें हो तो भी जातक दीर्घायु प्राप्त करते हैं।

12) सभी शुभ ग्रह केंद्र त्रिकोण में हो कर पाप ग्रह पारावतांश में हो तो भी जातक दीर्घायु होते हैं।

13) लग्नेश बलवान स्थिति में हो केंद्र में स्थित हों, शुभ ग्रह से दृष्ट हों, तो भी जातक दीर्घायु होंगे।

14) सभी ग्रह तीसरे चौथे आठवें भाव में स्थित हों जाएं तो भी दीर्घायु योग का निर्माण हो जाता है।

15) कुंडली में पंचम भाव में चंद्रमा, नवम भाव में गुरु, दशम भाव में मंगल स्थित हों तो भी जातक दीर्घायु होते हैं।

16) चंद्र और गुरु बारहवें भाव में स्थित होने से जातक को दीर्घायु प्रदान करते हैं।

17) कुंडली के दसवें भाव में शनि तथा दूसरे भाव में स्त्री ग्रह हो या ग्यारहवें भाव में सूर्य एवं राहु साथ हों तो जातक दीर्घायु होगा।

18) लाल किताब के अनुसार आयु का विचार चंद्र से करते हैं, चंद्र की भाव स्थिति तथा चंद्र का गुरु या शुक्र से संबंध होने से कहा गया है कि जातक की आयु लगभग 85 वर्ष होगी।

19) शनि का संबंध आयु से होता है, यदि शनि लग्नेश अष्टमेश या दशमेश होकर केंद्र या त्रिकोण में या एकादश भाव में स्थित हों जाएं तो व्यक्ति दीर्घायु होता है वह सभी सुखों से युक्त होकर, पूर्ण आयु को प्राप्त करता है।

20) छठे भाव में बैठे राहु जातक को दीर्घायु बनाते हैं, इसके साथ ही साथ अत्यधिक साहस, उदार हृदय, निरोगी काया और अनिष्टों का निवारण भी करते हैं।

21) गुरु ग्रह दीर्घायु, वंशज तथा न्याय प्रदाता होते हैं। यदि गुरु ग्रह अपने मित्र राशि में, अपनी स्वराशि में या फिर अपनी उच्च राशि में स्थित होने से, बचपन हर प्रकार से उत्तम होता है। जातक धनी, यशस्वी तथा दीर्घायु भी प्राप्त करते हैं।

22) लग्नेश बलवान होकर यदि दशम भाव में बैठ जाएं या दशम भाव में सभी शुभ ग्रह हों, और दशमेश भी बली होकर अपनी या अपने मित्र क्षेत्रीय या केंद्र त्रिकोण में स्थित हों तो जातक दीर्घायु होते हैं।

23) कुंडली में अष्टम भाव तथा लग्न का बली होना अथवा लग्न या अष्टम भाव में प्रबल ग्रहों की स्थिति अथवा शुभ या योग कारक ग्रहों की दृष्टि अथवा लग्नेश का लग्नगत हो कर बैठना या अष्टमेश का अष्टम भावगत हो कर बैठना दीर्घायु प्रदान करता है।

24) कुंडली में यदि द्वितीय भाव के स्वामी शुभ स्थिति में, अपने स्थान से द्वितीय स्थान को देखें अर्थात अपने ही भाव को देखें। इसके अलावा गुरु की दृष्टि सप्तम भाव या द्वितीय भाव में हो तथा शनि द्वितीय भाव में स्थित हो यह सभी योग जीवन साथी को दीर्घायु बनाते हैं।

25) यदि लग्न चर राशि में हो तथा चंद्रमा भी चर राशि में हो अथवा लग्न स्थिर राशि में हो और चंद्रमा द्वि - स्वभाव राशि में हो अथवा लग्न भी द्विस्वभाव राशि में हो और चंद्रमा स्थिर राशि में हो तो भी दीर्घायु योग का निर्माण होता है।

अब मैं आप सभी के साथ कुछ उपाय भी साझा करूंगी जिससे दीर्घायु प्राप्त हो -

1) ब्राह्मणों को देखकर श्रद्धा पूर्ण अभिवादन एवं यथोचित दान अवश्य करें ब्राह्मण द्वारा 'दीर्घायु भव' शब्द के आशीर्वचन से जातक चिरंजीवी एवं दीर्घायु अवश्य होता है, इसलिए कहा गया है कि ब्राह्मण विद्वान की पूजा से दीर्घायु कीर्तिवान एवं धन की वृद्धि अवश्य होती है।

2) अश्विनी नक्षत्र में अश्विनी कुमारों की पूजा करने से मनुष्य दीर्घायु एवं व्याधि मुक्त हो जाते हैं।

3) जातक को अपनी माता से चांदी एवं चावल लेकर सफेद कपड़े में बांधकर अपने पास रखने से भी जातक दीर्घायु होते हैं।

4) व्यक्ति को मिताहार अर्थात सीमित आहार का सेवन करना चाहिए जितना भोजन लेने की क्षमता है उससे कुछ कम ही भोजन लेना स्वास्थ्य को बल देता है। भोजन करते समय ईश्वर का भी आभार प्रकट करना चाहिए इस प्रकार के मिताहार से योगाभ्यास में स्फूर्ति बनी रहती है तथा जातक दीर्घायु प्राप्त करता है।

5) व्यायाम शरीर के लिए अति उत्तम क्रिया है, व्यायाम से स्वास्थ्य, दीर्घायु ताकत एवं सुख की प्राप्ति होती है। निरोगी होना परम आनंद एवं भाग्य है और स्वास्थ्य शरीर से अन्य सभी कार्य सिद्ध होते हैं। व्यायाम ही आपको दीर्घायु प्रदान करने में सक्षम है। इसीलिए कहा गया है-

व्यायामात् लभते स्वास्थ्यं दीर्घायुष्यं बलं सुखं। आरोग्यं परमं भाग्यं स्वास्थ्यं सर्वार्थसाधनम्॥

जीवन के ऋण और उनका पर्यावरण से निवारण

संतोष श्रीवास्तव, भोपाल

धर्म शास्त्रों में पांच प्रकार के जीवन के ऋण बताए गए हैं देव ऋण, पितृ ऋण, ऋण ऋण, भूत ऋण और लोक ऋण। इनमें से प्रथम चार ऋण तो मनुष्य के इस जन्म के कर्म के आधार पर अगले जन्म में पीछा करते हैं। इनमें से पांचवां ऋण यानी लोक ऋण अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। प्रथम चारों ऋण तो मनुष्य पर जीवित अवस्था में चढ़ते हैं, जबकि लोक ऋण मृत्यु के पश्चात चढ़ता है।

जब मनुष्य की मृत्यु होती है तो उसके दाह संस्कार में जो लकड़ियां, कंडे, घी, लाख, घास सब प्रकृतिजन्य ही है एवं यही उपयोग की जाती हैं । वास्तव में यही सबसे अंतिम ऋण होता है। यह ऋण लेकर जब मनुष्य नए जन्म में पहुंचता है तो उसे प्रकृति से जुड़े अनेक प्रकार के कष्टों का भोग करना पड़ता है। इसका ऋण पर्यावरण रक्षा के लिए पूजनीय वृक्षो को अपने जीवन काल में लगाने और उनका संरक्षण करने से होता है यदि यह नही किया गया तो ऐसे मानव को प्रकृति से पर्याप्त पोषण और संरक्षण नहीं मिलता है और प्रकृति संरक्षण नही मिल पाने से वह गंभीर रोगों का शिकार होता है।

मनुष्य की मृत्यु के बाद सुनाए जाने वाले गरूड़ पुराण में भी स्पष्ट कहा गया है कि जिस मनुष्य पर लोक ऋण बाकी रहता है उसकी अगले जन्म में मृत्यु भी प्रकृति जनित रोगों और प्राकृतिक आपदाओं, वाहन आदि कई प्रकारकी दुर्घटना ओ से होती है। कभी यह भी देखा गया है कि ऐसे मनुष्य जहरीले जीव-जंतुओं के काटे जाने से मृत्यु हो जाती है।

अतः लोक ऋण इस जन्म में ही उतारते रहना चाहिए, इस ऋण के उतारने का सरलतम तरीका इस प्रकार है -

शास्त्रों में कहा गया है कि लोक ऋण उतारने का एकमात्र साधन है प्रकृति का संरक्षण करना, इसमें वृक्ष को बोना उनकी देखभाल करना , गौ माता जो दूध देती है ऐसे दुधारू जानवरो का पालन पोषण करना अथवा समाज मेंकराना , कृषि संवर्द्धन करना ताकि पृथ्वी माता से धनधान्य की उपज समाज के लिए होसके अतः खेत का संवर्धन करनाआदि शामिल हैं। चूंकि मनुष्य पर अंतिम ऋण चिता की लकड़ी का होता है, इसलिए अपने जीवनकाल में प्रत्येक मनुष्य को अपनी संचित आयु की दशांश मात्रा में वृक्ष रोपण और संवर्धन अनिवार्य रूप से करना चाहिए।

शास्त्रों के अनुसार कलयुग में मनुष्य की आयु सौ वर्ष मानी गई है। इसका दशांश यानी 10 छायादार, फलदार पेड़ प्रत्येक मनुष्य को अपने जीवनकाल में लगाना ही चाहिए ।

गौ माता चूंकि दूधारू पशु है इसके संवर्द्धन के लिए घर में हाथ से बनी बनी रोटी अथवा हरी घास खिलानी चाहिए।

गौ के गोबर, मूत्र आदि को फेंकने या नष्ट होने के बजाए उनका औषधि एवं खाद पंचगव्य आदि अन्य कार्यों हेतु उपयोग करना चाहिए।

आजकल दाहसंस्कार में लकड़ी के स्थान पर गोबर की बनी लकड़ी का उपयोग शुरू हो गया है और उपलब्ध हैं अतः श्मशान घाट पर इन्हीं का उपयोग करना चाहिए।

इससे वृक्षों का संरक्षण होगा और अंतिम ऋण से हम बचेंगे।

मानव जीवन अमूल्य है, यह हमारे पूर्व जन्म के सत्कार्य का परिणाम है, जब मानव जीवन प्राप्त होता है। ईश्वर ने मानव जीवन दे कर ईश्वर आराधना, सत्कार्य , परमार्थ का मौका दिया है, जिसका लाभ हर मानव को उठाना चाहिए। भारतीय पुराण, संस्कृति में हर पहलू का सूक्ष्म अध्ययन किया गया है , इसी आधार पर मानव पर धारित ऋणों का विचार किया है। यह मानव की जिम्मेदारी है, कि वह अपने इसी जीवन में ऋण मुक्त हो, इसके लिए शास्त्र सम्मत तरीकों से उपाय किये जाये। इसी क्रम में श्राद्ध पक्ष में विधि-विधान से अपने पूज्य पितरों का तर्पण किया जाये। तर्पण के माध्यम से हम अपने सभी ऋणों के निवारण पर भी विचार करते है और तर्पण के माध्यम से उनका आवाह्न करते हुए, ऋण मुक्ति और अपना परिवार, समाज और देश की सुख, समृद्धि की कामना करते है, पितरों से आषीश प्राप्त करते है।

भौतिक जीवन मे मृत्यु एक सत्य है। सुसंस्कारो का पालन करते हुए सभी अपना जीवन आनन्द से जियो। वसुधैव कुटुम्बकम समझकर कि दुनिया के सब प्राणी अपने है , ऐसा करने से हम ईश्वर के करीब पहुंचते है । तब मृत्यु से भय नहीं होगा और जब हम सद्मार्ग पर जीवन बिताएंगे ऐसी स्थिति में अपने समस्त ऋण का निपटारा इसी जीवन काल में हीं करेंगे जिससे आगामी जीवन के लिए कोई ऋण शेष नहीं रहेगा और इस जीवन के बाद का जीवन भी स्वस्थ्य और सुख पूर्वक जी सकेंगे।

शरीर को स्वस्थ्य रखने के लिए पैदल चलिए..

(जीवन वैभव के ज्योतिष विद्यार्थियो की युवा टीम के द्वारा परस्पर मंथन के उपरान्त दिएगए बिन्दुओ का संकलन- संपादक)

प्रत्येक व्यक्ति की शरीर की हड्डियों और मॉसपेशियों का 50 प्रतिशत दोनों पैरों में होता है। इसलिए पैदल चल कर इन हड्डियो और मांसपेशियो को सशक्त रखना चाहिए।

मानव शरीर की हड्डियों का सबसे बड़ा और सबसे मज़बूत जोड़ पैरों में होता है। इसलिए प्रतिदिन 7 से 10 हज़ार कदम पैदल चलना चाहिए।

मज़बूत हड्डियाँ, मज़बूत मॉसपेशियाँ और लचकदार जोड़ों का लौह त्रिकोण पैरों में होता है, जो पूरे शरीर का बोझ ढो लेता हैं।

मनुष्य द्वारा अपने जीवन में 70 प्रतिशत गतिविधियाँ और शरीर में उत्पन्न (केलोरी) ऊर्जा का क्षय दोनों पैरों द्वारा पैदल चलकर किया जाता है।

जवान मनुष्य की जाँघें इतनी मज़बूत होती हैं कि भारी से भारी वजन उठाने की क्षमता भी युवा व्यक्ति रखता है

शरीर के संचालन करने के लिए इंजन का कार्य करने का केन्द्र पैर में होता है।

दोनों पैरों में मिलाकर पूरे मानव के शरीर के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नाड़ियाँ होती हैं। उनमें होकर 50 प्रतिशत रक्त कोशिकाएँ और 50 प्रतिशत रक्त बहता है।

रक्त प्रवाह का सबसे बड़ा नेटवर्क पैदल चलना होता है। इसलिए प्रतिदिन पैदल चलते रहना चाहिए।

यदि पैर स्वस्थ होंगे, तो रक्त का प्रवाह भी सामान्य रहता है। तथा जिनके पैरों की मॉसपेशियाँ मज़बूत हैं, उनका हृदय भी मज़बूत होगा। इसलिए पैदल चलिए।

वृद्धावस्था पैरों से ऊपर की ओर शुरू होती है। उम्र बढ़ने पर मस्तिष्क से पैरों को आने वाले निर्देशों की शुद्धता और गति कम होती जाती है। युवाओं में ऐसा नहीं होता। इसलिए पैदल चलिए। ताकि पौष्टिक आहार का हाजमा हो सके और शरीर को स्फूर्ति भी मिल सके।

उम्र बढ़ने पर हड्डियों की कैल्शियम की मात्रा कम होती जाती है, जिससे हड्डियों में टूटन होने की संभावना बढ़ जाती है। इसलिए पैदल चलिए।

हड्डिया कमजोर होने पर हड्डियों में टूटन आदि अनेक शिकायतों का सिलसिला शुरू हो जाता है। अतः केल्शियम के लिए चुना थोड़ी मात्रामें पान के साथ खाते रहना चाहिए । हड्डियां कमजोर होने पर विशेष रूप से घातक बीमारियाँ जैसे ब्रेन थॉम्बोसिस आदि होसकती हैं।

पैरों के व्यायाम करने में कभी देरी नहीं होती। 60 वर्ष की उम्र के बाद भी पैरो का व्यायाम शुरू किया जा सकता हैं। यद्यपि हमारे पैर समय के साथ वृद्ध तो होंगे, लेकिन इनका व्यायाम जीवन भर करते रहना चाहिए। प्रतिदिन आठ से दस हज़ार कदम पैदल चलिए।

पैरों को लगातार मज़बूत करके ही कोई बुढ़ापे की वृद्धावस्था की गति कम कर सकता है। इसलिए साल में 365 दिन रोजाना पैदल चलना ही चाहिए।

क्या आप जानते हैं कि वृद्ध रोगियों में 15 प्रतिशत की मृत्यु जाँघ की हड्डी में टूटन होने पर कुछ वर्ष के अन्दर हो जाती है? इसलिए बिना चूके प्रतिदिन पैदल चलिए।

अपने पैरों के पर्याप्त व्यायाम के लिए और पैरों की मॉसपेशियों को स्वस्थ रखने के लिए प्रतिदिन कम से कम 30-40 मिनट पैदल चलिए।

फलित ज्योतिष में सूर्य यंत्र और अंक ज्योतिष

ज्योतिषाचार्य नरेश शर्मा

वास्तव में अंक ज्योतिष की यह विधा लो शु ग्रिड चीन में विकसित हुई थी किंतु यह विधा विशुद्ध सनातन विधा है,

यह हमारे सूर्य यंत्र जिसे सामान्य भाषा में पन्द्रहिया यंत्र कहा जाता है पर विधा है। प्राचीन भारतीय तंत्र शास्त्र में ज्योतिष शास्त्र में इसका भरपूर उपयोग किया जाता था दीपावली इत्यादि शुभ मुहूर्त पर इस यंत्र को घर के दरवाजे पर लिखा जाता था व्यापारी वर्ग इस यंत्र को अपने रोकड और वही खाते में लिखते हैं। इसी सूर्य यंत्र के माध्यम से फलित करने की विधा को विद्वानों ने आगे बढ़ाया चाइना के विद्वान लो सू ने इसे अपना नाम दिया और यह बिधा भारतीय होते हुए भी चाइना की हो गई इसके लिए आप एक यंत्र तैयार कीजिए जिसमें 9 खाने हों यदि आप देखेंगे इसको किसी भी तरीके से जोड़ा जाए खडी पंक्ति में या आडी पंक्ति में या सब तरफ से योग 15 आता है। इस यंत्र के माध्यम से किसी भी व्यक्ति के विषय में काफी महत्वपूर्ण सूचनाएं प्राप्त की जा सकती हैं व्यक्ति की शक्ति तथा उसकी कमजोरी के बारे में बताया जा सकता है।

इस यात्रा के माध्यम से कमजोरियों का समाधान भी प्राप्त होता है उन कमजोरियों को थोड़े बहुत उपाय करके ठीक किया जा सकता है इस यंत्र के माध्यम से घर के वास्तु को सुधारा जा सकता है और सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह हो हम अपने निवास स्थान में ला सकते हैं अंक और अंक के स्वामियों के बारे में चर्चा करते हैं।

अंक 1 इसका स्वामी सूर्य है
अंक 2 इसका स्वामी चंद्रमा है
अंक 3 का स्वामी गुरु है
अंक 4 का स्वामी राहु है
अंक 5 इसका स्वामी बुध है
अंक 6 का स्वामी शुक्र है
अंक 7 इसका स्वामी केतु है
अंक 8 इसका स्वामी शनि
अंक 9 का स्वामी मंगल है

इस यंत्र को बनाने के लिए आप की डेट ऑफ बर्थ के अंकों के अलावा कुछ हमको और इसमें शामिल किए जाते हैं जिन्हें इस प्रकार प्राप्त किया जाता है,

ड्राइवर नंबर- आपकी जन्म दिनांक के अंको के योग का एकल अंक आपका ड्राइवर नंबर कहलाता है, माना कि आपका जन्म किसी भी महीने की 24 तारीख को हुआ है तो

2+4=6 : 6 नंबर आपका ड्राइवर नंबर होगा।

कंडक्टर नंबर- आप की संपूर्ण जन्मतिथि के अंकों के योग का एकल नंबर आपका कंडक्टर नंबर होगा। माना कि आपका जन्म दिनांक 24 दिसंबर 1962 है तो आपका कंडक्टर

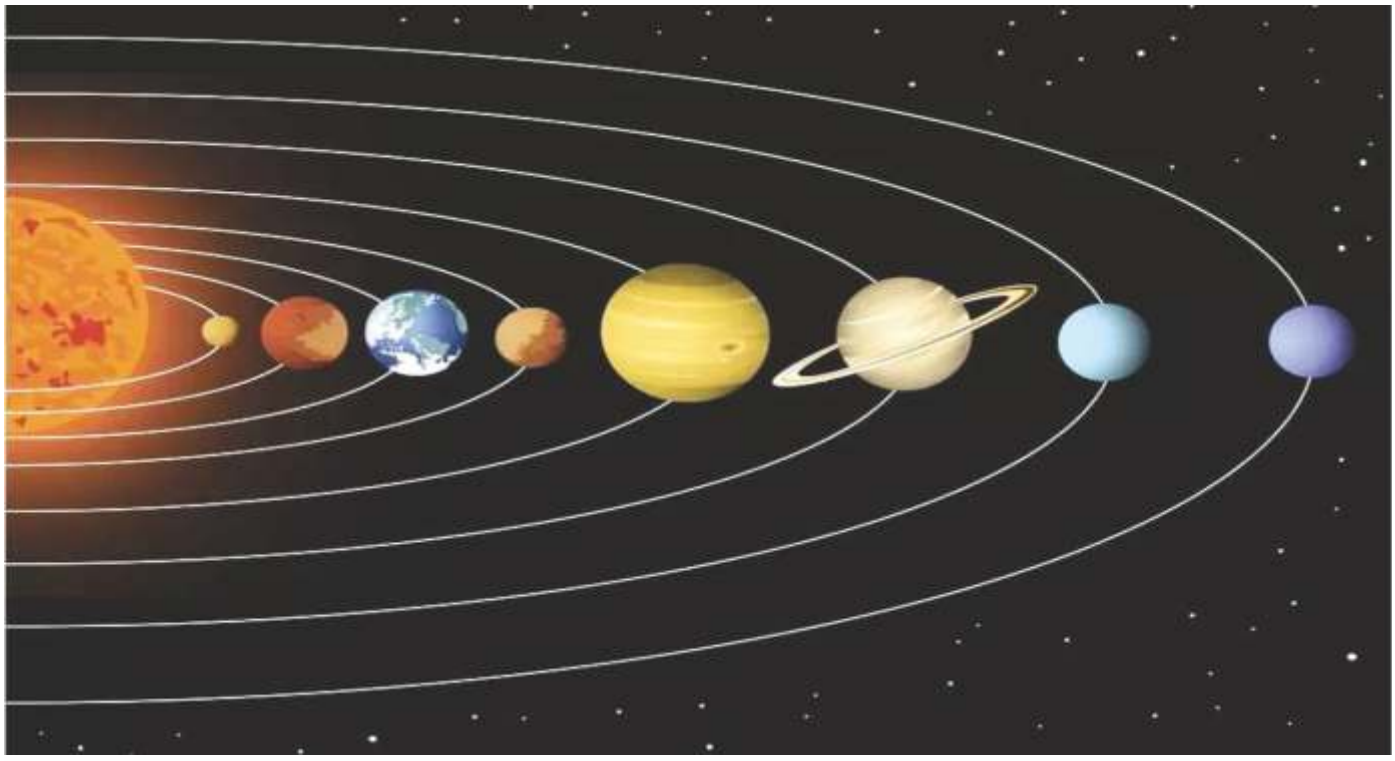

नंबर इस प्रकार निकाला जाएगा

24/12/1962

2+4+1+2+1+9+6+2=27

2+7=9

तो आपका कंडक्टर नंबर 9 होगा।

कुआं नंबर - यह नंबर ईश्वर की तरफ से दिया गया आपके लिए एंजल नंबर है यह आपको बहुत सारी परेशानियों से और मुसीबतों से छुटकारा दिला सकता है कई समस्याओं के समाधान में यह महत्वपूर्ण नंबर काम में लिया जा सकता है,

इसे ब्रह्मांडीय शक्ति के अंक के रूप में देखा जाता है, इसे निकालने के लिए आपको जन्म सन् योग को एकल अंक तक करते हैं, यदि जातक पुरुष है तो उसके एकल अंक को 11 में से ऋण कर देते हैं, यदि जातक महिला है तो उस एकल अंक में 4 जोड़ देते हैं प्राप्त अंक कुआ नंबर कहलाता है,

उदाहरण - 1962

1+9+6+2=18=1+8=9

यदि जातक पुरुष है तो

11-9=2 कुंवा नंबर होगा,

यदि जातक महिला है तो

9+4=13

1+3=4 कुआ नंबर होगा।

अंक 1 जन्म दिनांक में होता है तो ऐसे जातक घर का कोई सदस्य शासकीय सेवा में बड़ी कंपनियों में कार्यरत होता है उसका नेम एंड फेम होता है वह अच्छा बड़ा व्यवसाय करता है।

अंक 2 जिनके डेट ऑफ बर्थ में दो नंबर आता है वह मोटिवेशनल होगा शिक्षक इमोशनल छोटी सी बात पर आंसू बहाने वाला होगा

अंक 3 जिसकी डेट ऑफ बर्थ में तीन नंबर होता है 32 साल से पहले कामयाबी हासिल कर लेते हैं वैवाहिक जीवन को बचाने के लिए तीन नंबर और दो नंबर का सहारा लेना चाहिए

अंक 4 जिन व्यक्तियों की डेट ऑफ बर्थ में चार नंबर होता है वह मैनु प्ले कर वाले परिस्थितियों के अनुरूप अपने आप को डालने वाले तेज दिमाग जुगाड़ वाज होते हैं किसी टीम के एक हिस्से को तोड़कर अपनी टीम में मिला लेना इनका विशेष गुण होता है, राजनीति के लिए यह नंबर बहुत महत्वपूर्ण होता है।

अंक 5 इसको यदि संक्षिप्त में कहा जाए तो कहा जा सकता है (Don"t Fence Me In) व्यक्तियों के चार्ट में पांच नंबर होता है वह जरूरत से ज्यादा चालाक जीवन भर पढ़ने वाले पढ़ाकू अति आत्मविश्वास ही होते हैं इस कारण कई बार मात खाना पड़ती है यह पांच

नंबर शिक्षा के लिए बहुत शुभ होता है यह बहुत अच्छे सलाहकार होते हैं जीवन में बैलेंस बना करके रखना इनकी विशेषता होती है।

अंक 6 चार्ट में अंकित छे होने पर जातक अपने परिवार का ही पूर्व जन्म का सदस्य हो सकता है वैवाहिक सुख और लग्जरी लाइफ का सुख प्राप्त होता है। इस नंबर की महिलाओं का मैनेजमेंट बहुत अच्छा होता है।

अंक 7 जिन व्यक्तियों के चार्ट में सात नंबर आता है तो व्यक्ति झंडा भरतार बनने की कोशिश करता है यह वकील का प्रतीक है।

अंक 8 जब चार्ट में आठ नंबर आता है तो सोच समझकर निर्णय लेने वाले कभी-कभी जल्दबाजी करने वाले होते हैं, चार्ट में आठ नंबर और चार नंबर होने पर वैवाहिक जीवन खराब करते हैं।

अंक 9 जब ग्रिड में नौ नंबर आता है तो ऐसे व्यक्ति आक्रामक तेज विरोधी होते हैं दूसरों की रक्षा में कोई भी जोखिम उठा लेते हैं. ऐसा व्यक्ति जब अपनी पर आते हैं तो अपना कवच और कुंडल भी दान कर देते हैं और जब लेने पर आते हैं तो उसका सर्वस्व हरण कर लेते हैं।

सूर्य यंत्र में इस प्रकार 8 योग बनते हैं तीन योग खडी लाइनों के, तीन योग आडी लाइनों के, दो योग विकर्णों के।

परम योग 7)- 4 3 8- इस योग को थॉट प्लेन कहा जाता है। जिन लोगो की जन्मतिथि में ये योग होता है उनमें सोचने की क्षमता खूब होती है।जहॉ लोग सोचना बंद करते है वंहा से ये सोचना शुरू करते है। पॉलिटिक्स के लिए ये योग अच्छा होता है। जो होना होता है उसका अनुमान ये पहले ही लगा लेते है। सीधे नही होते, टेढ़ा सोचते है और टेढ़ा करने से भी परहेज नही करते।

9 5 1 जब जन्मतिथि में 9 5 1 ये तीनो अंक होते है तो ये तीनो अंक मिल कर परम योग बनाते है जिसे विल प्लेन या इच्छा शक्ति का प्लेन भी कहते है।इन लोगों मे इच्छा शक्ति अद्भभुत होती है। इनके जीवन मे कैसे भी हालत हो ये हारते नही है। अपने हालात से जूझने की क्षमता इनमे अद्भभुत होती है।

परम योग6 - 4 9 2 इस योग को मेंटल प्लेन कहा जाता है। जिन लोगो की जन्मतिथि में ये योग होता है वह गॉड गिफ्टेड ब्रेन के मालिक होते है ओर उनकी मैमोरी पावर बहुत अच्छी होती है। पुरानी से पुरानी घटनाएं इन्हें याद रहती है। विद्यार्थी जो कुछ भी एक बार पढ़ लेते है उन्हें याद हो जाता है।

3 5 7 इस योग को इमोशनल प्लेन कहा जाता है। ये लोग बहुत ही भावुक होते है और फैसले दिमाग से नही दिल से करते है। दिल के राजा होते है और दिल पर चोट खाते है।यदि कोई इंसान इनसे 2 बार पैसे ले कर धोखा दे दे और तीसरी बार फिर पैसे लेने जाए तो ये जानते हुए भी कि इस इंसान ने मुझे 2 बार धोखा दिया है ये दया करके उसे पैसे दे देते है। दयालु स्वभाव के होते है, भावनाओं से जुड़े होते है और अपनी भावनाओं पर काबू नही रख पाते,दुसरो की हमेशा मदद करते है। इन लोगो को चाहिए कि अपने फैसले सोच - समझ कर ले।

8 1 6 - प्रैक्टिकल प्लेन किसी की भी जन्मतिथि में 8, 1 और 6 तीनों अंक का होना एक परम योग बनाता है जिसे प्रैक्टिकल प्लेन कहा जाता है।ऐसे लोग जब भी कोई काम करते है ठोक बजा के,उसकी रचना को अच्छे से समझ के ही कोई फैसला लेते है। ये लोग ख्याली पुलाव नही पकाते। ये योग इंसान को इतना प्रैक्टिकल बना देता है कि इंसान कदम फूंक-फूंक कर रखता है।ऐसे लोग कोई भी कार्य करने से पहले उसके गुण, दोष,लाभ और हानि सबका विश्लेषण करते है फिर फैसला लेते है जल्दबाजी में कोई फैसला नही लेते। योग सफलता धीरे - धीरे देता है।

4 5 6 जब किसी की जन्मतिथि में ये तीनो अंक होते है तो इस योग को राज योग कहा जाता है।इन लोगो में रंक से राजा बनने की क्षमता होती है। ये लोग आसमान की बुलंदी छूने की ताकत रखते है। ये योग सभी योगो में सबसे अच्छा माना जाता है।

2 5 8 किसी की जन्मतिथि में ये तीनो अंक मिलकर जो योग बनाते है उसे सक्सेस प्लेन कहा जाता है।ये लोग अपने सपनों को अपनी आंखों से ओझल नही होने देते और सही वक्त पर सही फैसला करते है।ये योग अपने आप मे सफलता का बहुत बड़ा प्रतीक है।इन लोगो के लिए प्रॉपर्टी से संबंधित काम ,रियल एस्टेट, प्रॉपर्टी खरीदना या बेचना या भूमि से संबंधित कोई भी काम अच्छा रहेगा।

दीपावली पर्व पर विशेष

लक्ष्मी माता को प्रसन्न करने के लिए श्रीसूक्त

दीपावली पर्व से आरंभ करके प्रतिदिन श्री सूक्त का पाठ करना प्रत्येक परिवार की लक्ष्मी, सम्पति, समृद्धि और पारिवारिक सुख की वृद्धि करता है। पाठकों के लाभार्थ श्रीसूक्त अर्थ सहित निम्नानुसार दिया जारहा है।

ॐ हिरण्यवरर्णां हरणीं सुवर्ण रजतस्त्रजाम।
चंद्राम् हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह।।1।।

हे जात वेदा अग्नि देव आप बीते हुए सभी बृत्तांतो को जानने वाले तथा बतला ने वाले हैं अतः सुवर्ण के समान पीत वर्ण वाला तथा हरित वर्ण वाली हरिणी रूप धारिणी सुवर्ण मिश्रित रजत की माला धारण करने वाली चांदी के समान धवल पुष्पों की माला धारण करने वाली चंद्रमा के सदृश प्रकाशमान तथा चंद्रमा की तरह संसार को प्रसन्न करने वाली चंचला के समान रूप वाली हिरण्यमय ही जिसका शरीर है ,ऐसे गुणों से युक्त लक्ष्मी को मेरे लिए बुलाओ।

ताम आ वह जातवेदो लक्ष्मी मनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम्।।2।।

हे जातवेदा अग्नि देव आप उन जगत प्रसिद्ध लक्ष्मी जी को मेरे लिए बुलाओ जिनके आवाहन करने पर मैं सुवर्ण गौ,अश्व और पुत्र पौत्रादि को प्राप्त करूं।।2।।

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रमोदिनीम्,
श्रियं देवीमुप ह्वयेश्रीर्मा देवी जुषताम्।।3।।

जिस देवी के आगे घोड़े और मध्य में रथ है अथवा जिसके सम्मुख घोड़े रथ में जुते हुए हैं ऐसे रथ में बैठी हुई ,हाथियों के निनाद से संसार को प्रफुल्लित करने वाली देदीप्यमान एवं समस्त जनों को आश्रय देने वाली लक्ष्मी को मैं अपने सम्मुख बुलाता हूं दीप्यमान तथा सबकी आश्रय दाता वह लक्ष्मी मेरे घर में सर्वदा निवास करें।।3।।

कां सोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ,
ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम्,
पद्मेस्थितां पद्मवर्णां तामिहोप ह्वये श्रियम् ॥ 4 ॥

जिसका स्वरूप वाणी और मन का विषय ना होने के कारण अवर्णनीय है तथा जो मंदहास्ययुक्ता है ,जो चारों और सुवर्ण से ओतप्रोत है एवं दया से आर्द्र हृदय वाली या समुद्र से प्रादुर्भाव होने के कारण आर्द्र शरीर होती हुई भी देदीप्यमान है स्वयं पूर्ण काम होने के

कारण भक्तों के नाना प्रकार के मनोरथों को पूर्ण करने वाली, कमल के ऊपर विराजमान ,कमल के सदृश्य गृह में निवास करने वाली संसार प्रसिद्ध लक्ष्मी को मैं अपने पास बुलाता हूं।

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्ती,
श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम्।
तां पद्मीनीमीं शरणं प्रपद्ये,
अलक्ष्मीमें नश्यतां त्वां वृणोमि।।5 ।।

चंद्रमा के समान प्रकाशमान कांति वाली कीर्ति से प्रकाशित स्वर्ग में देवताओं द्वारा सेवित अत्यंत उदार हृदया, कमलवत आकार वाली लक्ष्मी को में शरण में आश्रय पाने के लिए एवं अपनी दरिद्रता को दूर करने के लिए आपको स्वीकार करते हुए आश्रय लेता हुं॥ 5।।

आदित्यवर्णे तपसो ऽधिजातो
वनस्पतिस्तव वृक्षो ऽथ बिल्व
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु,
अन्तरा याश्च बाह्याऽ अलक्ष्मी।।68।।

हे सूर्य के समान कांति वाली आपके तेजोमय प्रकाश से बिना पुष्प के फल देने वाला एक वृक्ष विशेष उत्पन्न हुआ तद् अंतर आपके हाथ से बिल्व का वृक्ष उत्पन्न हुआ ।उस बिल्व का वृक्ष का फल मेरे बाह्यऔर आभ्यंतर की दरिद्रता को नष्ट करें।6।।

उपेतु मां देवसखः कीर्तिश्च
मणिना सह।
प्रादुर्भुतो ऽस्मि राष्ट्रे ऽस्मिन्
कीर्तिमृद्धिं ददातु मे।।7 ॥

हे लक्ष्मी महादेव के सखा कुबेर ,इंद्र आदि देवताओं की अग्नि एवं मणि के साथ अर्थात चिंतामणी के साथ कुबेर के मित्र मणिभद्र के साथ या रत्नों के साथ,कीर्ति अर्थात दक्ष कन्या कुबेर की कोषशाला अथवा यश आदि मुझे प्राप्त हो मैं इस (भारत) देश में उत्पन्न हूं अतः मुझे ऐश्वर्यऔर यश दे।

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं
नाशयाम्यहम्।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां
निर्णुद मे गृहात् ॥ 8 ॥

लक्ष्मी की जेष्ठ भगिनी अलक्ष्मी जो भूख और प्यास से मलीन तथा क्षीण रहती है उसका मैं नाश चाहता हूं हे देवी मेरे घर से असमृद्धि और अनैश्वर्य को दूर करो।।8 ॥

गन्ध द्वारा दुराधर्षा नित्यपुष्टां
करीषिणीम्,
ईश्वरी सर्वभूतानां ,
तामिहोपह्वये श्रियम् ।।9।।

सुगंधित पुष्पों को समर्पित करने पर उनसे प्राप्त करने योग्य किसी के वश में रहने वाली धन-धान्य आदि से परिपूर्ण गो अश्व आदि पशुओं की समृद्धि को देने वाली सभी प्राणियों की ईश्वरी आधारभूत पृथ्वी रूपी लक्ष्मी का मैं आवाहन करता हूं।9।।

मनसः काममाकूतिं वाचः
सत्यमशीमहि।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि
श्रीः श्रयतां यशः।10 ॥

हे लक्ष्मी मैं आप के प्रभाव से मानसिक इच्छा एवं संकल्प, वाणी की सत्यता, गो आदि पशुओं के रूप एवं अन्नो के रूप (भक्ष्य,भोज्य,चोष्य,लेह्य चतुर्विध भोज्य पदार्थ)इन सभी पदार्थों को प्राप्त करूं संपत्ति और यश मुझ में आश्रय लें अर्थात में लक्ष्मी वान एवम कीर्तिमान बनूं ॥10॥।

कर्दमेन प्रजाभूता मयि संभव कर्दम।
श्रियं वासय मे कुले मातरं,
पद्म मालिनीम् ॥ 11 ॥

कर्दम नामक ऋषि पुत्र से लक्ष्मी प्रकृष्ट पुत्र वाली हुई है। हे कर्दम !तुम मुझ में अच्छी प्रकार से निवास करो अर्थात कर्दम ऋषि की कृपा होने पर लक्ष्मी को मेरे यहां रहना ही होगा हे कर्दम! मेरे घर में लक्ष्मी निवास करें ,केवल इतनी ही प्रार्थना नहीं है, अपितु कमल की माला धारण करने वाली संपूर्ण संसार की माता लक्ष्मी को मेरे वंश में निवास कराओ।।11।।

आपः सृजन्तु स्निग्धानि
चिक्लीत वस में गृहे।.
नि च देवीं मातरं श्रियं
वासय मे कुले ।।12।।

वरूण देवता स्निग्ध अर्थात मनोहर पदार्थों कोउत्पन्न करे स्नेह युक्त पदार्थो को उत्पन्न कराकर ,हे चिक्लित ! लक्ष्मी पुत्र आप मेरे घर में माता लक्ष्मी देवी सहित वास करो।

आर्दां पुष्कारिणीं पुष्टिं
पिगलां पद्ममालिनिम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं ,
जातवेदो म आ वह ।।13।।

हे अग्निदेव! तुम मेरे घर में पुष्करणी अर्थात दिग्गज हाथियों के शुण्डाग्र से अभिषिच्यमाना पुष्टि को देने वाली अथवा पुष्टि रूपा रक्त और पीत वर्ण वाली कमल की माला धारण करने वाली, संसार को प्रकाशित करने वाली, प्रकाश स्वरूपा लक्ष्मी को बुलाओ।

आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं,
सुवर्णां हेम मालिनीम्।
सूर्यां हिरण्यमयीं लक्ष्मीं,
जातवेदो म आ वह ।14।।

हेअग्नि देव! तुम मेरे घर में भक्तों पर सदा दयार्द्रचित्त अथवा समस्त भुवन जिसकी याचना करते हैं ,दुष्टों को दंड देने वाली अथवा अथवा यष्टिवत् अवलम्बनीया, सुंदर वर्ण वाली एवं सुवर्ण की माला वाली सूर्य रूपा ,प्रकाश स्वरूपा लक्ष्मी को बुलाओ।

ताम आ वह जात वेदो
लक्ष्मी मनपगामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो,
दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥15॥

हे अग्निदेव !तुम मेरे यहां उन जगत विख्यात लक्ष्मी जी को जो मुझे छोड़ कर अन्यत्र ना जाने वाली हो उन्हें बुलाओ। जिन लक्ष्मी जी के द्वारा मैं सुवर्ण, उत्तम ऐश्वर्य ,गो, दासी, घोड़े और पुत्र पौत्र आदि को प्राप्त करूं अर्थात स्थिर लक्ष्मी को प्राप्त करूं।15।।

यः शुचि;प्रयतो भूत्वा ,
जुहुयादाज्यमन्वहम्।
सूक्तं पंञ्चदशर्चं च ,
श्रीकामः सतत जपेत्।16।

जो मनुष्य लक्ष्मी जी की कामना करता हो,वह पवित्र और सावधान होकर प्रतिदिन अग्नि में गो घृत का हवन और साथ ही श्रीसूक्त की पन्द्रह ऋचाओं का प्रतिदिन पाठ करे।

सूखे मेवे तथा फल का स्वास्थ्य पर प्रभाव

प्राचीन काल में मानव का आहार केवल फल फूल और प्रकृति द्वारा वृक्षों, पेड़ पौधों से उत्पन्न फल होते थे, सेवन कर लेते थे और सैकड़ों वर्ष की आयु प्राप्त कर लेते थे जिनका उल्लेख हमारे प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। प्रकृति से प्राप्त फल केला, पपीता, संतरा, मौसंबी, आम, जामुन, सीताफल, चीकू, जामफल, अखरोट, खजूर, सेव, बादाम, काजू, अंगूर आदि ऐसे प्राकृतिक फल है जिनकी मौसम के अनुसार ही पैदावार होती है और मौसमी फल का नियमित सेवन स्वास्थ्य लाभदायक रहता है, अर्थात मौसम में होने वाली बीमारियों का नियंत्रण भी उन फलों में रहता है कुछ फलों का संक्षिप्त विवरण निम्नानुसार हैः-

संतरा : यह फल शरीर को शीतलता प्रदान करने वाला, पाचन शक्ति की वृद्धि करने वाला होता है

केला : केले का फल प्रकृति द्वारा प्रदत्त फल है जो कि एक तरह से बना बनाया हलवा की समानता रखता है, इसमें मांसपेशियां मजबूत तथा नेत्र विकार को दूर करता है। दूध के साथ लेने से यह एक सम्पूर्ण आहार है यह पित्त का नाशक औषधि के रूप में भी है।

जामुन : जामुन एक ऐसा फल है जो कि वर्षा ऋतु के पहले ग्रीष्म ऋतु में ही पककर वृक्षों पर उपलब्ध होता है इसका सेवन पाचन शक्तिवर्द्धक है, इसकी गुठली का चूर्ण मधुमेह को कम करता है।

अनार - अनार का फल सब फलों में उत्तम है इसके बारे में कहावत है कि ''एक अनार सौ बीमार'' अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति को लाभप्रद है। पाचन शक्ति बढ़ाता है। इसके छिलके का पाउडर शरीर/चेहरे के दाग और झाइयों को ठीक करता है। महिलाओं के मासिक धर्म के अधिक स्त्राव में छिलके का चूर्ण लाभप्रद माना गया है।

पपीता - पपीता का सेवन स्वास्थ्य के लिए लाभप्रद है लेकिन इसे भोजन के बाद खाना अधिक लाभप्रद माना गया है। पाचन संस्थान के तमाम रोगों की उत्पत्ति इसके नियमित सेवन से नहीं हो पाती। यह फल लिवर को ताकत देता है और पाचन शक्ति बढ़ाता है।

सूखे मेवे - फलों के साथ ही सूखे मेवे जो कि प्रकृति में फल के रूप में ही उत्पन्न होते हैं लेकिन अधिक मात्रा में वृक्षों पर होने से इन्हें सुखाया जाकर संरक्षित किया जाता है और उपयोग में लाया जाता है। विशेषकर बादाम, काजू, अखरोट, किशमिश अंजीर, खजूर आदि है जिन्हें सुखाया जाकर सूखे फल के रूप में तैयार किया जाता है सूखे मेवे में प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, फायबर, विटामिंस फोलिक एसीड आदि पोषक तत्व होते हैं इनके सेवन से मधुमेह, हृदय रोग आदि से बचाव होता है। मूंगफली, बादाम, अखरोट, काजू एवं पिस्ता के 100 ग्राम मात्रा में 500 से अधिक कैलोरी ऊर्जा रहती है जिसमें उपरोक्त पोषक तत्व समाहित रहते हैं। पोटेशियम, कैल्शियम, आयरन और पोटेशियम की मात्रा भी नें अधिक रहती है।

इसके अतिरिक्त किशमिश, अंजीर, खजूर, आलूबुखारा आदि में लगभग 200 से अधिक कैलोरी 100 ग्राम की मात्रा में उपलब्ध होती है। इसी प्रकार पोषक तत्व भी इनमें उपलब्ध होते हैं। कहने का अर्थ है कि यदि इनका नियमित सेवन होता रहे तो रोगों की आक्रामक क्षमता कम हो जाती है और व्यक्ति स्वस्थ रह सकता है।

अखरोट एवं काजू का सेवन मधुमेह के रोगियों के लिए उत्तम रहता है। इसके अतिरिक्त सेवन से शरीर में संतुलित समय बना रहता है उसी प्रकार पिस्ता का सेवन शरीर में विटामिन 'ए' की पूर्ति करता रहता है। इसमें फास्फोरस की उपस्थिति उचित मात्रा में रहती है जिससे शुगर की मात्रा नियंत्रण में रहती है।

सूखे मेवे खाने पहले पूर्व कुछ देर के लिए पानी में भिगो देना चाहिए जिससे कि इनमें उपस्थित पोषक तत्वों का पूरा लाभ मिल सके। इनके सेवन में मसालों का उपयोग अथवा तेल में तलकर सिकाई करना लाभप्रद नहीं है इससे उन सूखे मेवों में रोग निरोधक क्षमता नहीं रहती।

सूखे मेवे का सेवन भी संतुलित मात्रा में करना चाहिए। शरीर को आवश्यकता के अनुसार ही सेवन किया जाए अन्यथा इसके दुष्प्रभाव होने लगते हैं। जैसे पेट में ऐंठन, गैस बढ़ना, कब्ज अथवा दस्त लगना भी संभव हो सकता है।

पांच दिवस की पर्व श्रंखला दीपावली पर्व

दीपावली पर्व 5 दिनों की एक पर्व श्रंखला है जिसमें समाज के सभी महत्व-पूर्ण बिंदुओं पर ध्यान दिया जाता है।

सबसे पहले दीपावली पर्व स्वच्छता के रूप में पूरे घर की साफ सफाई करने से आरंभ होता है जिसके बाद पहला पर्व त्रयोदशी के दिन धनतेरस /धनवंतरी जयन्ती पहला पर्व होता है स्वास्थ्य एवं सुख समृद्धिवर्धक यह पर्व अपनी विशेषता रखता है जिसमें धनवंतरी जोकि स्वास्थ्य के देवता है उनका जन्मोत्सव के रूप में माना जाता है जब समुद्र मंथन हुआ था देवताओं एवं दानवों के द्वारा क्षीरसागर का मंथन किया गया था उस समय भगवान धन्वंतरि का प्राकट्य हुआ था। यह 24 अवतारों में से एक है कार्तिक कृष्ण पक्ष त्रयोदशी के दिन भगवान धन्वंतरी का पूजन किया जाता है। इस दिन सायंकाल में घर के बाहर दरवाजे पर अन्न के एक पात्र में अन्न रहकर उसके ऊपर यम कौण की तरफ दीपक लगाने का विधान है जिससे कि अपमृत्यु का भय नही रहता। तथा परिवार के सदस्य स्वस्थ्य रहते है। धन प्राप्त करने का मुख्य उद्गम जो है उसकी पूजन करके धन केस्वामी कुबेर का पूजन का भी विशेष महत्व है। कृषक क्षेत्र में किसान गोपूजन करते है।

रूप चौदस पर्व - कार्तिक कृष्ण पक्ष चतुर्दशी के दिन रूप चौदस जिसे नरक चतुर्दशी भी कहते है। रूप सुन्दरता के स्वरूप भगवान कृष्ण की पूजन की जाती है। सूर्यादय पूर्व तेल का उबटन लगाकर अपामार्ग का पौधा जल में डालकर स्नान करने के,बादमें दीपदान का महत्व है कहाजाता है कि भगवान श्रीकृष्णने इस दिन नरकासुर का वध किया था दीपदान करने से रोग एवं कष्ट से मुक्ति मिलती है।

लक्ष्मी पूजन का दिन दीपावली पर्व- कार्तिक कृष्ण पक्ष अमावस्या के दिन दीपावली का पर्व मनाया जाता है इस पर्व के बारे में यह मान्यता है कि देवताओं एवं राक्षसों के द्वारा समुद्र मंथन किया गया था तब समुद्र मंथन के समय क्षीरसागर से महालक्ष्मी प्रकट हुई थी इस महालक्ष्मी ने भगवान विष्णु को अपने पति के रूप में स्वीकार किया था इसी कारण दीपावली के दिन सुख समृद्धि की कामना से लक्ष्मी पूजन की जाती है लक्ष्मी को चंचला भी कहते हैं यह स्थिरता से कहीं नहीं रहती है इस कारण से दिवाली के दिन स्थिर लक्ष्मी के लिए स्थिर लग्न में लक्ष्मी पूजन किया जाना चाहिए ।वृषभ सिंह, कुंभ एवं वृश्चिक लग्न स्थिर लग्न कहलाते हैं। विशेषकर प्रदोष काल में वृषभ लग्न रहता है इस कारण से वृषभ लग्न में लक्ष्मी पूजन करना स्थिर लक्ष्मी के लिए शुभ माना गया है। 24 अक्टूबर को पूजन चौघडिया और स्थिर लग्न का मुहूर्त निम्नानुसार हैं-

दीपावली शुभ मुहूर्त
चौघडिया अनुसार
लाभ एवं अमृत सवेरे 9:20 से

दिन में 12:05 तक
शुभ चौघडिया दोपहर 1:28 से
2:52 तक अमृत चौघड़िया
सायं 5:53 से 7:28 सायं तक रहेगा ।

चूंकि अमावस्या सायं 5 बजकर 22 मिनिट से प्रारंभ हो रही है अत एव प्रदोष वेला में ही लक्ष्मीपूजन का समय उत्तम है।

स्थिर वृषभ लग्न और अमृत के चौघडिया का मिश्रित उत्तम समय सायं7.04 से7.28 के बीच का समय है इसमें लक्ष्मी जी केपूजन का उत्तम समय है ।

वृषभ स्थिर लग्न के अनुसार
लक्ष्मी पूजन मुहूर्त

प्रदोष काल में स्थिर वृषभ लग्न का समय उत्तम माना गया है यह समय सायं 7:04 से 9 बजकर 03 मिनिट तक रहेगा ।

सिंह लग्न,के अनुसार,
रात्री 1:28 से 3:42 तक है
महानिशीथ काल रात्री
11:39 से 12:30तक

यह भी मान्यता है कि भगवान रामचंद्र जी 14 वर्ष का वनवास पूर्ण करने के उपरांत राक्षसों का वध करने के पश्चात धर्म प्राण समाज को अभयदान देते हुए वापस अयोध्या आगमन हुआ था इसी कारण समग्र समाज में दीप जलाकर खुशियां मनाई थी ,इसी खुशी में दीपोत्सव मनाया जाता है।.

अन्नकूट महोत्सव ,गोवर्द्धन पूजन - कार्तिक शुक्ल पक्ष प्रतिपदा के दिन सवेरे गोवर्धन पूजा की जाती है गाय के गोबर से घर के द्वार पर गोवर्धन की प्रतिमा बनाई जाती है तथा उसके पूजन की जाती है यह भगवान कृष्ण के गोवर्धन पर्वत अपनी कनिष्ठा उंगली से उठा कर इंद्र के प्रकोप से बचाव के लिए किया गया तभी यह पूजन आरंभ हुई। दिन में सभी प्रकार के छप्पन भोग बनाए जा कर भगवान को प्रसाद के रूपमें भोग लगाकर अन्नकूट किया जाता है। वर्षा के समय से (चतुर्मास में) पत्तीदार सब्जिया,पालक मेथी, मूली बेगन आदि का कई धर्म प्राण व्यक्तियों द्वारा त्याग किया जाता है जिसे अन्नकूट के भोजन में सम्मिलित किया जाकर नियमित सेवन में लिया जाता है। दिनांक 26 अक्टोबर बुधवार को सवेरे 10 :30 से 12:15 के बीच उत्तम समय है

भाई दूज, कलम दवात पूजन - कार्तिक शुक्ल पक्ष द्वितीया को भैया दूज का पर्व मनाया जाता है इस दिन भाई बहन के घर जाकर भोजन करता है । इस पर्व के बारेमें एक पौराणिक मान्यता है कि यम एवं यमुना भगवान सूर्य की संतान हैं ।यमराज की व्यस्तता के कारण यमुना अपने भाई से नहीं मिल पाती थी ,एक दिन वह स्वयं मिलने आई ।इस पर यमराज प्रसन्न हुए एवं बहन को वर मांगने को कहा बहन यमुना ने कहा कि आज के दिन मुझमें जो स्नान करेगा उसे यमलोक नहीं जाना पड़े इस पर यमराज ने तथास्तु कहा एवं उस दिन कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वितीया तिथि थी। इस कारण इस दिन यमुना में स्नान करने का भी विशेष महत्व है ।साथ ही बहन के घर भाई स्वयं जाकर बहन को संतुष्टि पूर्वक द्रव्य दान देकर भोजन करता है इसका विशेष महत्व बताया गया है जिससे भाई एवं बहन को स्वास्थ्य लाभ तथा बहन के सौभाग्य की वृद्धि होती है। इस दिन चित्रगुप्त की पूजन करना भी शुभ माना गया है ।इस कारण दवात कलम अर्थात लेखनी की पूजन करना ज्ञान वृद्धि के लिए माना गया है भाई दूज पर्व दिनाक 27 अक्टोबर गुरुवार को सवेरे 6 से 730 दिनमें 12 35 से 13 40 के बीच उत्तम समय है। इस प्रकार दीपावली का 5 पर्वों की श्रृखला का पर्व है जिसे

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
अक्टूबर से दिसंबर 2022

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

मेष
चू, चे, चो, ला, ली, लू, ले, लो, अ

अक्टूबर 2022

मास के प्रथम सप्ताह मैं कई दिनों की इच्छाओं की पूर्ति होगी स्थाई संपत्ति के योग बन सकते हैं। पत्नी के स्वास्थ्य का ध्यान रखें बच्चों की इच्छित प्रगति हो सकेगी मास के अंतिम 2 सप्ताह उच्च वर्ग के लोगों से संपर्क होगा तथा कार्य के नए आयाम प्राप्त होंगे धन लाभ की संभावना व्यापारी वर्ग के लिए यह शुभ समय है। कृषक वर्ग के लिए अपने प्रयास में सफलता प्राप्त होगी। नौकरी वर्ग वालों के लिए प्रयास में सफलता मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग सचेत रहकर पढ़ाई करें मास के 3, 5, 9, 11, 14, 23, 26 एवं 30 तारीख शुभ है।

नवम्बर 2022

मास का आरंभ व्यस्तता पूर्ण रहेगा। द्रव्य लाभ तथा भावी योजनाएं क्रियान्वित करने के लिए प्रयास में गति मिलेगी। दांपत्य जीवन में तनाव रहेगा। संतान की समुचित प्रगति संभव ।मास के अंतिम 2 सप्ताह चुनौतियों पूर्ण रहेंगे इसमें अपने व्यावसायिक कम्पीटीटर तथा दूरके सम्बन्ध रखने वालों की ओर से कार्य में अप्रत्यक्ष रूप से बाधाएं आ सकती है। अपने संबंध सु मधुर रखने का फिरभी प्रयास करें। व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल। कृषक वर्ग को वांछित सफलता हैं। नौकरी वर्ग को अधिक सजगता से कार्य करना चाहिए। विद्यार्थी वर्ग को अपने कार्य की पुनरावृत्ति करना जरूर आवश्यक है मास की 3 7 11 13 19 26 शुभ है।

दिसम्बर 2022

मास के प्रारंभ पक्ष में आर्थिक रुकावटें दूर होगी। समय पर लाभ होगा अपने पारिवारिक उत्तरदायित्व को सफलता से निर्वहन कर सकेंगे दांपत्य सुख उत्तम रहेगा। व्यर्थ भ्रमण एवं खर्च के योग बनेंगे। मास अंतिम 2 सप्ताह में भ्रमणकी अधिकता रहेगी,तथा अपने किए जाने वाले कार्य का तनाव भी अधिक रहेगा धन लाभ में सामान्य रूप से कमी रहेगी व्यापारी वर्ग को अधिक खर्च से सावधान रहना चाहिए कृषक वर्ग अपनी कृषि कार्य में सावधानी बरतें व्यर्थ खर्च संभव नौकरी करने वालों को समय सामान्य रहेगा विद्यार्थी वर्ग को अपने कार्यों में रुकावटें आना संभव है मास की 2, . 8, 12, 16, 20 ,24 एवं 30 तारीख अनुकूल है।

वृषभ
ई, उ, ए, ओ, वा, वि, वू, वे, वो

अक्टूबर 2022

मास का पूर्वार्द्ध अनुकूल परिस्थिति वाला रहेगा। सफलता, सामजिक यश और पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा। माता-पिता के स्वास्थ्य का ध्यान देना होगा। कार्य बोझ बढ़ा रहेगा लेकिन आपकी मनोशक्ति इसे समय पर पूरा करेगी। मास के उत्तरार्द्ध में व्यर्थ भ्रमण होगा। व्यापारी वर्ग को उत्तम लाभप्रद मास। नौकरी वर्ग वालों कार्य के प्रति सजगता रखना चाहिए। कृषक वर्ग को उत्तम लाभ, विद्यार्थी वर्ग को आर्थिक कठिनाईयां रहेंगी। मास की 3,6,9,12,18,21,27 तारीख शुभ है।

नवंबर 2022

मास में अपने कार्यों की सफलता के लिए नए अवसर मिलेंगे। अपने मन और बुद्धि से कार्यों में सफलता के शुभ अवसर मिलेंगे। समाज में मान-समान प्रतिष्ठा वृद्धि होगी। व्यापारी वर्ग को व्यापार में इच्छित लाभ तथा अपने किए गए कार्यों से यश मिलेगा। कृषक वर्ग को सहयोग और धन लाभप्रद रहेगा। नौकरी वर्ग को अधिकारियों की ओर से संतोष मिलेगा। विद्यार्थीवर्ग को उत्तम लाभ के अवसर मिलेंगे। मास की दि. 2, 3, 4, 7, 9, 12, 21, 24 शुभ रहेंगी।

दिसंबर 2022

यह माह अपने कार्यों में सफलतादायक रहेगा, इसलिये ध्यानपूर्वक कार्य करें। बिना कारण भ्रमण होगा। राजकीय कार्यों में सतर्कता बरतें। अपने नजदीकी मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। किसी समानजनक व्यक्ति का अपने कार्यों में सहयोग मिलेगा। आर्थिक एवं आध्यात्मिक कार्यों में खर्च होगा। व्यापारी वर्ग के लिए उत्तम समय है। नौकरी वर्ग वालों का कार्य की सराहना मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग को अधिक प्रयास की जरूरत है। (1,4,9,11,17,24,26 शुभ हैं)

मिथुन
का, की, कू, घ, ड, छ, के, को, हा

अक्टूबर 2022

मास का आरंभ मानसिक चिंताओं की कमी से होगा, अपने स्वभाव में परिवर्तन लाएं, उग्रता को कम करें, सेहत कमजोर रह सकती है, पारिवारिक चिंताएं तथा तनाव रह सकता है। संतान की चिंताओं को कम करने का प्रयास करें। यदि विद्याध्ययनरत हैं तो उसे योग्य वातावरण उपलब्ध कराएं। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय पर कार्य/अध्ययन नहीं होने से चिंताएं रहेगी। कृषक वर्ग को लाभप्रद समय रहेगा। व्यापारी वर्ग को आर्थिक चिंताएं तथा भ्रमण अधिकता रहेगी। मास के 7, 8, 15, 17, 19 एवं 23 अशुभ हैं।

नवम्बर 2022

मास के पूर्वार्द्ध में दौड़-धूप अधिक रहेगी। मान-समान में वृद्धि होगी किसी विशिष्ट व्यक्ति का सहयोग मिलेगा। चिंताएँ कम होने लगेंगी। स्वास्थ्य में अनुकूलता रहेगी, पत्नी के स्वास्थ्य में कमजोरी रह सकती है। व्यापारी वर्ग को आर्थिक रुकावटें रहेंगी। कृषक वर्ग को विगत माह से कुछ राहत मिलेगी। नौकरी वर्ग को चिताएं अधिक, विद्यार्थी वर्ग को सहयोग मिलेगा। दिनाँक 1, 4, 7, 10, 13, 17, 23 कमजोर हैं यात्राएँ टालें।

दिसम्बर 2022

मास का आरंभ व्यस्तताओं तथा आर्थिक खर्च से परिपूर्ण रहेगा। अधिक परिश्रम से तरक्की संभव है, आय के नए साधन बढ़ने के अवसर मास के उत्तरार्द्ध में मिलेंगे। स्वयं के स्वास्थ्य पर ध्यान देना चाहिए, प ी को वैचारिक तनाव रह सकता है। राजपक्ष में समय पर सफलता मिलेगी। विद्यार्थी वर्ग को अनुकूलता, कृषक वर्ग को समय पर कार्य से संतोष, व्यापारी वर्ग को आर्थिक समस्याएं रहेंगी। सर्विस वालों को अधिकारियों की ओर से तनाव रहेगा। मास के 2, 4, 6, 8, 10, 11, 18, 21 तारीखें शुभ हैं।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
अक्टूबर से दिसंबर 2022

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

कर्क
ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो

अक्टूबर 2022

मास का आरंभ मानसिक चिंताओं की कमी से होगा, अपने स्वभाव में परिवर्तन लाएं, उग्रता को कम करें, सेहत कमजोर रह सकती है, पारिवारिक चिंताएं तथा तनाव रह सकता है। संतान की चिंताओं को कम करने का प्रयास करें। यदि विद्याध्ययनरत हैं तो उसे योग्य वातावरण उपलब्ध कराएं। विद्यार्थी वर्ग के लिए समय पर कार्य/अध्ययन नहीं होने से चिंताएं रहेगी। कृषक वर्ग को लाभप्रद समय रहेगा। व्यापारी वर्ग को आर्थिक चिंताएं तथा भ्रमण अधिकता रहेगी। मास के 7, 8, 15, 17, 19 एवं 23 अशुभ हैं।

नवंबर 2022

मास के प्रारंभ में आर्थिक रुकावटें दूर होंगी। अपने पारिवारिक उत्तरदायित्व को सफलता से निर्वहन कर सकेंगे। दापत्य सुख उत्तम रहेगा। किसी राजकीय कार्य के लिए प्रयास में सफलता मिलेगी। व्यर्थ भ्रमण एवं खर्च की संभावना मास के उत्तरार्द्ध में रहेगी। व्यापारी वर्ग को अपने कार्य से लाभ। नौकरी वर्ग को व्यस्तता अधिक रहेगी। विद्यार्थी वर्ग को समय पर सहयोग मिलेगा। मास की 2, 4, 6, 8, 10, 13, एवं 21 तारीखों में सावधानी बरतें।

दिसंबर 2022

मास के पूर्वार्द्ध में स्वास्थ्य के प्रति सावधानी बरतें। अनावश्यक चिंताए नहीं पालें। अपने पारिवारिक सदस्यों से भावनाओं में आकर संबंध न बिगाड़ें, इसमें सावधानी बरती जाए। अपने नियमित कार्य तथा आय वृद्धि के अवसर बनेंगे। व्यापारी वर्ग को साझेदारी में सावधानी रखनी चाहिए। कृषक वर्ग समय का ध्यान देकर कार्य करें। नौकरी वर्ग वालों को अधिकारियों की अप्रसन्नता विद्यार्थी वर्ग को कठिन यत्न करने पर सफलता। दिनाँक 2, 4, 8, 13, 17, 26 अशुभ हैं।

सिंह
मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, ढू, रे

अक्टूबर 2022

मास का पूर्वार्द्ध आपके लिए अनुकूल प्रतीत होता है। सुख वैभव के संसाधन की वृद्धि होगी। स्थाईत्व प्राप्त होगा तथा मानसिक संतोष रहेगा। मास के उत्तरार्ध में अपने नजदीकी मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा स्वास्थ्य पर ध्यान देना आवश्यक है। व्यापारी वर्ग को समय पर धन लाभ। कृषक वर्ग को अधिक श्रम से धन लाभ। नौकरी करने वालों को समय अनुकूल। विद्यार्थी वर्ग को अपने मेहनत का सही फल प्राप्त होगा मास की नो 11, 17, 22, 24 एवं 29 तारीख शुभ है।

नवम्बर 2022

मास का पूर्वार्द्ध आपको अपने कार्यों में सफलता दायक है ।नए कार्यों की रूपरेखा बनेगी समय को व्यर्थ ना खोंए, सदुपयोग करें। मास का उत्तरार्ध आपके लिए भ्रमण तथा आर्थिक कठिनाईयों का रहेगा। व्यापारी वर्ग को अधिक खर्च। कृषक वर्ग को अपने कार्य से संतुष्टि। नौकरी करने वालों को परिवर्तन संभव. ।विद्यार्थी वर्ग को सामान्य दिक्क तें रहेगी।

दिसम्बर 2022

मास का पूर्वार्ध आपके लिए कुछ चुनौतियों भरा कार्य लेकर आया है। आप अपनी पूरी क्षमता के साथ यदि कार्य में सफल हुए तो यश एव धन लाभ प्राप्त होगा। मास का उत्तरार्ध व्यस्तता पूर्ण रहेगा। सुखद भ्रमण के योग भी बनेंगे तथा पारिवारिक कार्यों में अधिक खर्चके योग बनेगे। व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल। कृषक वर्ग को अधिक भागदौड़ रहेगी ।नौकरी करने वालों को मास सामान्य रहेगा विद्यार्थी वर्ग को समय प्रतिकूल है, अधिक खर्च के योग हैं। मास की 5, 7, 11, 17, 19 ,26 एवं 30 तारीख शुभ है।

कन्या
टे, टो, पा, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो

अक्टूबर 2022

मास के प्रथम दो सप्ताह अधिक दौड़ धूप के रहेंगे। लेकिन पिछले माह की अपेक्षाकृत उत्तरोत्तर सुधार के योग है। व्यर्थ के भ्रमण संभव हैं। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। विरोधी वर्ग के षडयंत्र के शिकार न हो इसका ध्यान रखें। पारिवारिक चिंताएं अधिक रहेंगी। अपनी सेहत का ध्यान रखें। आहार समय पर लें। भ्रमण और खर्च बढ़ेगा। व्यापारी वर्ग को अधिक यत्न से लाभ। कृषक वर्ग को लाभप्रद समय। विद्यार्थी वर्ग को खर्च की अधिकता रहेगी। (मास की 2,4,7,9,13,17 शुभ हैं।)

नवंबर 2022

मास के पूर्वार्द्ध में अपने प्रयास लाभदायक रहेंगे। कुछ रूके हुए कार्यपूर्ण होंगे। धनलाभ भी यथासंभव होगा। पारिवारिक सुख में वृद्धि होगी। कुछ नजदीकी मित्रों से वैचारिक विवाद संभव है। व्यर्थ भ्रमण नहीं हो इसका ध्यान रखें। राजपक्ष के कार्यों को यथासमय निपटाएं। विद्यार्थी वर्ग को समय के दुरुपयोग से बचना चाहिए। कृषक वर्ग को समय पर सफलता तथा धनलाभ मिलेगा। व्यापारी वर्ग समस्याग्रस्त रहेगा, कर्मचारी वर्ग के लिए अपने कार्य से सफलता मिलेगी। मास की 3, 6, 9, 10, 13, 19, 22 एवं 26 शुभ हैं।

दिसंबर 2022

स्वास्थ्य का ध्यान रखें, परिजनों से व्यर्थ विवाद से बचें। व्यर्थ भ्रमण संभव है। अज्ञात शत्रुओं का सामना करना पड़ सकता है। खाद्य पदार्थ के सेवन में ध्यान रखें। व्यापारी वर्ग को खर्च की अधिकता (आपके अनुपात में), नौकरी वर्ग के लिए अधिकारियों एवं सहयोगियों की प्रसन्नता। दिनाँक 2, 4, 6, 8, 10, 18, 20, 22 एवं 26 शुभ हैं।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
अक्टूबर से दिसंबर 2022

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

तुला
रा, री, रु, रे, रो, ता, ती, तू, ते

अक्टूबर 2022

अधिकारियों की अप्रसन्नता। विवाद से दूर रहे। आर्थिक रुकावटें। कोर्ट कचहरी के विवाद में व्यस्तता। उत्तरार्द्ध में चिंताओं में कमी। स्वास्थ्य में कमजोरी। किसी अप्रिय घटना से मन को दुःख। व्यापारी वर्ग को आलस्य के फलस्वरूप कार्यों में लाभ की गुंजाईश कम रहेगी। कृषक वर्ग को भूमि संबंधित विवाद से सावधानी रखना चाहिए। नौकरी वर्ग को व्यस्तता अधिक, जोखिम भरे कार्य में सावधानी बरतें। विद्यार्थी वर्ग को परिस्थितियां अनुकूल। दिनाँक 1, 5, 7, 9, 11, 17 शुभ रहेंगी।

नवंबर 2022

यह मास विगत समय से अनुकूल रहेगा। कठिनाईयों के कार्य आसानी से हल होंगे। पारिवारिक सुख मिलेगा। संतान को अपने कार्य में सफलता से परिवार में सुख-शांति महसूस करेंगे। साझेदारों पर अनावश्यक क्रोध से बचें। अन्यथा विवाद संभव है। मास के उत्तरार्द्ध में भ्रमण यथासंभव टालें। कृषक वर्ग को समय रहते अपने कार्य निपटाने पर लाभ संभव। नौकरी वर्ग को स्थानांतरण। विद्यार्थी वर्ग को सफलता रहेगी। मास की 2,7,11,17,19,24 तारीख शुभ है।

दिसंबर 2022

अधिक कार्य के कारण शारीरिक कमजोरी महसूस करेंगे इसी कारण माह के उत्तरार्द्ध में कार्य में बाधाएं तथा पेंडिंग रह सकता है। कार्यों की सफलता में रूकावट आना संभव है। नियमित कार्यों में सतर्कता रखना आवश्यक है। व्यापारी वर्ग को खर्च पर नियंत्रण, नौकरी वर्ग को अधिक कठिनाई से सफलता, कृषक वर्ग को उत्तरार्द्ध उत्तम रहेगा, विद्यार्थी वर्ग को स्थान परिवर्तन अथवा शिक्षा में बदलाव संभव है। (मास की तारीख 3, 6, 12, 18, 24 शुभ है) रहेगा।

वृश्चिक
तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू

अक्टूबर 2022

मास का प्रारंभ अधिक व्यय कारक है। व्यर्थ भ्रमण भी हो सकता स्वास्थ्य की दृष्टि से भी सावधानी रखना आवश्यक है। पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी राजकार्य समय पर होंगे मास के उत्तरार्ध में किसी मांगलिक कार्य में व्यस्तता रहेगी तथा कार्य दायित्व भी बढ़ेगा पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा व्यापारी वर्ग के लिए मास अनुकूल है। कृषक वर्ग के लिए अधिक व्यस्तता तथा खर्च कारक है। नौकरी करने वालों को भ्रमण अधिक होगा विद्यार्थी वर्ग के लिए समय संतुष्टि प्रद नहीं। मास की 2, 6 ,9 ,12 ,18 ,21 ,24 तथा 30 तारीख शुभ है।

नवम्बर 2022

मास के प्रारंभ में शत्रु पक्ष पराजित होगा अपने कार्यों में गति मिलेगी किंतु पत्नी के स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए पारिवारिक चिंताएं रहेगी। मास के उत्तरार्ध में भ्रमण में सावधानी रखना चाहिए व्यर्थ खर्च पर नियंत्रण रखें व्यापारी वर्ग के लिए समय कमजोर कृषक वर्ग के लिए अनुकूलता नौकरी करने वालों के लिए सामान्य तथा विद्यार्थियों के लिए समय का सदुपयोग करने करना चाहिए माह की 5,7 ,13 ,18 ,21 एवं 29 शुभ फलदायक है।

दिसम्बर 2022

यह माह आपको लाभप्रद सिद्ध होगा। पारिवारिक सुख संतोष तथा अपने कार्यों में धन लाभ प्राप्त होगा राजकीय कार्यों में सफलता मिलेगी मास के उत्तरार्ध में अपने किसी निकटतम व्यक्ति से विवाद ना हो इसका ध्यान रखें व्यर्थ भ्रमण से भी बचे व्यापारी वर्ग को यह मास शुभ है कृषक वर्ग को मास में अधिक खर्च नौकरी वर्ग को अपने कार्यों से संतुष्टि मिलेगी विद्यार्थी वर्ग को अपने अध्ययन में संतुष्टि मिलेगी। इस माह की 3, 6, 9, 12, 16, 21, 24 तथा 29 तारीख शुभ है।

धनु
ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भ

अक्टूबर 2022

यह माह आपके लिए महत्वपूर्ण रहेगा। अपने लाभ का अनुपात व्यय से कम होगा इसलिए संतुलित व्यय करने का प्रयास करना चाहिए। पारिवारिक कार्यों में अधिक व्यस्तता रहेगी। कोर्ट कचहरी के विवाद रहेंगे। दूसरों के विवाद से बचना चाहिए। व्यापारी वर्ग को आय में कमी, नौकरी वर्ग वालों को व्यस्तता अधिक। कृषक वर्ग अपने कार्यों में लाभ, विद्यार्थियों को अनुकूल समय है। (तारीख 5,7,13,17,23,30 शुभ है)

नवंबर 2022

अपने कार्य के विस्तार की ललक इस माह में पूरी होगी। इस समय होने वाले निर्णय अपने भविष्य के लिए अनुकूल रहेंगे। अपने कार्य के लिए अधिक समय देवे ताकि सफलता मिल सके। पत्नी एवं संतान की ओर से स्वास्थ्य की चिंता रह सकती है। व्यापारी वर्ग को समुचित लाभ और अच्छे संपर्क की वृद्धि। नौकरी वर्ग वालों को संतोष, कृषक वर्ग को उत्तमलाभ, विद्यार्थी वर्ग को आर्थिक कष्ट। (तारीख 2, 4, 8 12, 16, 20, 24, 28 उत्तम रहेगी)

दिसंबर 2022

विगत माह की कठिनाईयों से कार्य इस माह के अंत तक सफलता दायक रहेंगे। साझेदारों अथवा विश्वसनीय मित्र के भरोसे छोड़े गए कार्य की पुनः पुनरावृत्ति करनी पड़ेगी। कोर्ट, कचहरी के विवादों में असफलता नहीं हो इसका ध्यान रखें। व्यापारी वर्ग को आर्थिक हानि प्रद। नौकरी वर्ग वालों को सजगता से कार्य करना चाहिए। कृषक वर्ग को ऋणग्रस्तता में कमी करना हितकारक होगा। विद्यार्थी वर्ग का व्यर्थ भ्रमण संभव। मास की 1,3,6,9,11,19,27,29 शुभ है।

त्रैमासिक राशि भविष्य फल
अक्टूबर से दिसंबर 2022

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

मकर
भो, जा, जी, खी, खू, खे, खोग, गा,गी

अक्टूबर 2022

यह मास आपके लिए प्रगति दायक आर्थिक दृष्टि से रुके हुए कार्य पूरे होंगे तथा कुछ नवीन कार्यों को आरंभ करने के लिए मन में उत्साह जागृत होगा। पत्नी के स्वास्थ्य के प्रति सजग रहें संतान सुख उत्तम रहेगा मास के अंतिम 2 सप्ताह मैं व्यर्थ का विरोध रहेगा। अपने विरोधियों के षड्यंत्र कार्य में बाधा पहुंचा सकते हैं संतान को इच्छित प्रगति संभव है। व्यापारी वर्ग को खर्च की अधिकता रहेगी कृषक वर्ग को अपने कार्यों में सुधार लाने का योग है नौकरी करने वालों को अपने वरिष्ठ अधिकारियों की अप्रसन्नता रह सकती है, विद्यार्थी वर्ग अपने कार्यों में संतुष्ट रहेंगे मास की 4, 9, 12, 16, 18, 24 तथा 28 तारीख शुभ है।

नवम्बर 2022

मास के पूर्वार्ध में अपना स्वभाव शांत रखें। अनावश्यकक्रोध आवेश नुकसानदायक रह सकता है। पारिवारिक कार्यों में तनाव रहेगा। व्यर्थ भ्रमण भी संभव है मास के अंतिम 2 सप्ताह अधिक खर्च कारक है। अपने कार्यों में शांति पूर्वक पूर्ण करें ताकि कार्य में क्षति ना हो संतान के लिए खर्च की अधिकता रहेगी व्यापारी वर्ग को अपने कार्यों में अधिक दौड़-धूप करनी होगी कृषक वर्ग को लाभ प्राप्ति में बाधाएं रह सकती है नौकरी वर्ग वालों को अपने समय पर कार्य निष्पादन करना ही उचित होगा विद्यार्थी वर्ग का समय कमजोर है सदुपयोग करें। इस माह की 4, 6, 9, 12 ,17 ,19, 21 एवं 27 तारीख शुभ है।

दिसम्बर 2022

मांस के पूर्वार्ध में अपनी बात को यथोचित ढंग से कहें अन्यथा अर्थ का अनर्थ हो सकता है ध्यान रखें पारिवारिक चिंताएं रहेगी तथा आर्थिक दृष्टि से समय पर लाभ होने में दिक्क त रहेंगी। मास का उत्तरार्द्ध अनुकूल रहेगा समय पर धन लाभ एवं अपनी कही गई बात का यश मिलेगा स्वास्थ्य का ध्यान रखें। व्यापारी वर्ग के लिए समय अनुकूल। कृषक वर्ग को अधिक व्यस्तता। नौकरी करने वालों को कार्य बोझ अधिक। विद्यार्थी वर्ग को समय का सदुपयोग करना हितकर। मास की 5 ,7, 9, 13 ,17 ,22 एवं 29 तारीख शुभ है।

कुंभ
गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा

अक्टूबर 2022

आपके लिए मास का पूर्वार्द्ध लाभप्रद रहेगा। आर्थिक लाभ समय पर होगा तथा पुरानी रुकी हुई समस्या का निराकरण होगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें। मास के अंतिम 2 सप्ताह में कार्य की अधिकता रहेगी लेकिन आर्थिक रुकावटें दूर होगी। मानसिक चिंताएं अधिक रहेगी। व्यापारी वर्ग के लिए समय अनुकूल है ,कृषक वर्ग को अधिक य करने से लाभ मिल पाएगा, नौकरी करने वालों को समय पर लाभ के योग है। विद्यार्थी वर्ग को समय का सदुपयोग करना चाहिए ,इस माह की 2, 5,7, 9,15,19,24 एवं 27 तारीख अनुकूल रहेंगी।

नवम्बर 2022

मास का पूर्वार्ध कार्य की गतिविधियों में वृद्धि करेगा। धन लाभ के योग बनेंगे सरकारी काम में सफलता मिल सकेगी मास के उत्तरार्ध में पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता रहेगी आर्थिक खर्च अधिक होगा भ्रमण यथासंभव टाल दे। व्यापारिक वर्ग को अधिक खर्च कारक समय, कृषक वर्ग को समुचित लाभ, नौकरी वर्ग को अपने कार्य में पूर्ण रूप से यश मिलेगा विद्यार्थी वर्ग के विद्यालय में सामान्य दिक्क तें रह सकती है मास की 3 ,6, 12, 15, 21 ,24 तथा 30 तारीख से शुभ है।

दिसम्बर 2022

मांस का प्रारंभ आपके लिए उत्तम है वर्षभर जो कार्य रुके रहे उनमें गति प्राप्त होगी। साथ ही रुका हुआ द्रव्य प्राप्त होने की उम्मीद लगती है। अपने स्वास्थ्य का ध्यान रखें अधिक भ्रमण हो सकता है मास का उत्तरार्ध व्यस्तताओं से भरा रहेगा। कई कार्यों को करने की आपकी जिज्ञासा के फल स्वरूप दौड़ धूप अधिक रहेगी। व्यापारी वर्ग कोकार्य में व्यस्तता तथा भ्रमण के साथ लाभ, कृषक वर्ग को कार्य का अपेक्षित लाभ , नौकरी करने वालों को समय सामान्य रहेगा। विद्यार्थी वर्ग को भ्रमण अधिक रहेगा। मास में 2 , 5,7, 9, 17, 22 26 एवं 29 तारीख शुभ रहेगी।

मीन
दी, दु, थ, क्ष, ज, दे, दो, चा, ची

अक्टूबर 2022

मास का पूर्वार्द्ध आपको रचनात्मक कार्यक्रमों के करने में सहयोगी रहेगा अधिकारी वर्ग की प्रसन्नता रहेगी पारिवारिक सुख अच्छा रहेगा। मास के अंतिम 2 सप्ताह में खर्च की अधिकता रहेगी । किसी पुराने कार्य को करने में अधिक यत्न करना पड़ेगा। व्यापारी वर्ग को खर्च कारक समय। कृषक वर्ग को लाभप्रद। नौकरी करने वालों को अपने कार्यों से संतुष्टि रहेगी। विद्यार्थी वर्ग समय के सदुपयोग करने का ध्यान रखें इस माह की 4 ,14 ,16 ,19, 21 ,27 एवं 30 तारीख शुभ है।

नवम्बर 2022

मास का पूर्वार्ध आपको अधिक व्यस्तता का है कार्य के पूर्ण होने तक सावधानी एवं सतर्कता रखना आवश्यक है। लाभ के सुअवसर प्राप्त होंगे मास का उत्तरार्ध आपको अपने पारिवारिक कार्यों में व्यस्तता देगा, साथ ही धन लाभ की समुचित व्यवस्था भी करेगा व्यापारी वर्ग को समय अनुकूल। कृषक वर्ग को अपने कार्यों में व्यस्तता अधिक, नौकरी वर्ग को समय संतोषप्रद, विद्यार्थी वर्ग को अधिक य करने से लाभ. मिलेगा मास की 3 ,7, 9 ,11, 16 ,19, 23 एवं 26 तारीख शुभ है।

दिसम्बर 2022

मासका पूर्वार्द्ध रुके हुए कार्य पूर्ण करने में सहयोगी रहेगा। भ्रमण की अधिकता रहेगी तथा राजकीय कार्य समय पर हल होंगें। मास के उत्तरार्ध में आपको अपने नजदीकी मित्रों से सहयोग प्राप्त होगा। सुखद यात्रा भी संभव है अपने कार्यों में विशेष ध्यान देने से सफलता मिलेगी व्यापारी वर्ग को सामान्य समय ।कृषक वर्ग को आर्थिक कठिनाइयां। नौकरी वर्ग को व्यस्तता अधिक। विद्यार्थी वर्ग का समय का ध्यान रखना चाहिए। मास की 3, 6 9 ,12, 18, 21 एवं 27 तारीख शुभ है।

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
अक्टूबर से दिसंबर 2022

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

अक्टूबर 2022 के व्रत पर्व

2 अक्टूबर, रविवार - महात्मा गांधी जी एवं लाल बहादुर शास्त्री जी की जयन्ती

3 अक्टूबर, सोमवार - महाअष्टमी, दुर्गाष्टमी

4 अक्टूबर, मंगलवार, महानवमी, दुर्गानवमी

5 अक्टूबर, बुधवार - विजयादशमी, शस्त्रपूजन, नीलकण्ठ दर्शन

6 अक्टूबर, गुरुवार - पापांकुशा एकादशी व्रत स्मार्त एवं वैष्णव

7 अक्टूबर, शुक्रवार - प्रदोष व्रत

9 अक्टूबर, रविवार - स्नानदान व्रतादि की पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा, वाल्मिकी जयन्ती

13 अक्टूबर, गुरुवार - संकष्टी गणेश चतुर्थी, करवा चौथ

15 अक्टूबर, शनिवार - स्कन्दषष्ठी

17 अक्टूबर, सोमवार - अहोई अष्टमी, कालाष्टमी

21 अक्टूबर, शुक्रवार - रम्भा एकादशी व्रत स्मार्त एवं वैष्णव

22 अक्टूबर, शनिवार - शनि प्रदोष व्रत, धनतेरस, धनवन्तरी जयन्ती, गोवत्स द्वादशी

23 अक्टूबर, रविवार - मास शिवरात्रि व्रत, रूप चौदस, दीपदान

24 अक्टूबर, सोमवार- दीपावली पर्व, महालक्ष्मी पूजन, श्राद्ध की अमावस्या

25 अक्टूबर, मंगलवार - स्नानदान की अमावस्या, सूर्यग्रहण, दिन में 4.54 से 6.42 सायं

26 अक्टूबर, बुधवार - गोवर्धन पूजन, अन्नकूट

27 अक्टूबर, गुरुवार - भ्रातृ द्वितीया

28 अक्टूबर, शुक्रवार - वैनायकी चतुर्थी व्रत

29 अक्टूबर, शनिवार - सौभाग्य पंचमी

शुभ मुहूर्त अक्टूबर 2022

4 अक्टूबर, मंगलवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 11.30 से 13.30 दिन में)

5 अक्टूबर, बुधवार - नामकरण, अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, वाहन क्रय (10.30 से 12.15 दिन में)

6 अक्टूबर, गुरुवार - नामकरण, गृहप्रवेश, कूपारंभ, खेत जोतना, बीज बोना (12.05 से 13.35 के बीच)

7 अक्टूबर, शुक्रवार - नामकरण, अन्नप्राशन, गृहप्रवेश, कूपारंभ, खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 10.20 के बीच)

9 अक्टूबर, रविवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 9.00से 12.15 दिन में)

10 अक्टूबर, सोमवार - नामकरण, खेत जोतना, बीज बोना, वाहन क्रय (सवेरे 9.15 से 10.30 सायं 4.30 से 6.30)

11 अक्टूबर, मंगलवार - प्रसूति का स्नान, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 9.15 से 12.15 दिन में)

14 अक्टूबर, शुक्रवार - नामकरण, अन्नप्राशन, प्रापर्टी क्रय, नवीन व्यापार, वाहन क्रय, गृहप्रवेश, कूपारंभ, खेत जोतना, बीज बोना, वाहन क्रय (सूर्योदय से सवेरे 10.25, दिन में 12.15 से 13.35)

15 अक्टूबर, शनिवार - गृहप्रवेश (सवेरे8.00 से 9.15 दिन में 13.40 से 16.30)

17 अक्टूबर, सोमवार - अन्नप्राशन, खेत जोतना, बीज बोना, वाहन क्रय (सवेरे 9.15 से 10.40 के बीच)

20 अक्टूबर, गुरुवार - प्रापर्टी क्रय (दिन में 12.05 से 13.45 के बीच)

21 अक्टूबर, शुक्रवार - कूपारंभ, खेत जोतना, बीज बोना, प्रापर्टी क्रय (सूर्योदय से सवेरे 10.20 के बीच)

22 अक्टूबर, शनिवार - गृहप्रवेश (सवेरे 7.45 से 9.15दिन में 13.35 से 16.15 के बीच)

24 अक्टूबर, सोमवार - लक्ष्मी पूजन (सवेरे 9.00 से 10.15, दिन में 16.30 से 19.25 सांय)

25 अक्टूबर, मंगलवार - प्रसूति का स्नान (दिन में 11.30 से 12.30)

26 अक्टूबर, बुधवार - खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 10.30 से 12.05)

27 अक्टूबर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, अन्नप्राशन, गृहप्रवेश, कूपारंभ, खेत जोतना, बीज बोना (दिन में 12.15 से 13.35)

28 अक्टूबर, शुक्रवार - नामकरण, अन्नप्राशन, गृहप्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 10.30)

31 अक्टूबर, सोमवार - नामकरण, अन्नप्राशन, गृहप्रवेश, खेत जोतना, बीज बोना, नवीन व्यापार (सवेरे 9.15 से 10.35, सायं 16.30 से 18.30)

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
अक्टूबर से दिसंबर 2022

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

नवम्बर 2022 के व्रत पर्व

2 नवम्बर, बुधवार - अक्षयनवमी

3 नवम्बर, गुरुवार - आशादशमी

4 नवम्बर, शुक्रवार - प्रबोधिनी एकादशी व्रत स्मार्त एवं वैष्णव

5 नवम्बर, शनिवार - शनि प्रदोष व्रत

6 नवम्बर, रविवार - बैकुण्ठ चतुर्दशी

8 नवम्बर, मंगलवार - ग्रस्तोदय खग्रास चन्द्रग्रहण, स्नानदान व्रत की कार्तिक पूर्णिमा, देव दीपावली

11 नवम्बर, शुक्रवार - सौभाग्य सुन्दरी व्रत

12 नवम्बर, शनिवार - संकष्टी गणेश चतुर्थी व्रत

14 नवम्बर, सोमवार - पं.नेहरु जयन्ती/बाल दिवस

16 नवम्बर, बुधवार - कालभैरव अष्टमी, काल भैरव जयन्ती
सूर्य की वृश्चिक संक्रान्ति सायं 19.14

17 नवम्बर, गुरुवार - वृश्चिक संक्रान्ति पुण्यकाल/ नर्मदास्नान का महत्व

20 नवम्बर, रविवार - उत्पत्ति एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)

21 नवम्बर, सोमवार - सोम प्रदोष व्रत

22 नवम्बर, मंगलवार - मास शिवरात्रि व्रत

23 नवम्बर, बुधवार - स्नानदान श्राद्ध की अमावस्या

27 नवम्बर, रविवार - वैनायकी चतुर्थी व्रत

शुभ मुहूर्त नवम्बर 2022

3 नवम्बर, गुरुवार - नामकरण, बालकर्म, अन्नप्राशन, जीर्ण गृहप्रवेश, कूपारंभ, प्रापर्टी क्रय, बीज बोना (दिन में 12.15 से 13.35)

5 नवम्बर, शनिवार - जीर्ण गृहप्रवेश (दिन में 13.30 से 15.30)

6 नवम्बर, रविवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 9.15 से 11.30 दिन में)

10 नवम्बर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, जातकर्म, अन्नप्राशन, जीर्ण गृहप्रवेश, कूपारंभ, नवीन व्यापार, खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 7.35, दिन में 13.30 से 15.15)

11 नवम्बर, शुक्रवार - नामकरण, जातकर्म, अन्नप्राशन, जीर्ण गृहप्रवेश, कूपारंभ, नवीन व्यापार, खेत जोतना, बीज बोना, वाहन क्रय (सूर्योदय से सवेरे 10.35 के बीच दिन में 12.15से 13.35के बीच)

13 नवम्बर, रविवार - वाहन क्रय (सवेरे 9.15 से 12.15 के बीच)

14 नवम्बर, सोमवार - जीर्ण गृहप्रवेश, बीज बोना, खेत जोतना, वाहन क्रय (सवेरे 9.15 से 10.40, सायं 16.30 से 18.15)

15 नवम्बर, मंगलवार - खेत में बीज बोना, खेत जोतना 09.30 से 11.30 के बीच प्रारंभ)

17 नवम्बर, गुरुवार - खेत में बीज बोना, खेत जोतना (सूर्योदय से 7.45)

19 नवम्बर, शनिवार - जीर्ण गृह प्रवेश (दिन में 13.30 से 15.15 के बीच)

20 नवम्बर, रविवार - प्रसूति का स्नान, वाहन क्रय (सवेरे 9.15 से 12.15 दिन में)

21 नवम्बर, सोमवार - नामकरण, जातकर्म, अन्नप्राशन, जीर्ण गृहप्रवेश, नवीन व्यापार, वाहन क्रय (सवेरे 9.15 से 10.40, दिन में 16.15 से 18.30 के बीच)

22 नवम्बर, मंगलवार - प्रसूति का स्नान, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 9.15 से 11.30)

24 नवम्बर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, जातकर्म, खेत जोतना, बीज बोना (सूर्योदय से सवेरे 7.45, दिन में 12.15 से 13.40)

27 नवम्बर, रविवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 9.15 से 11.30)

28 नवम्बर, सोमवार - नामकरण, जातकर्म, अन्नप्राशन, जीर्ण गृहप्रवेश, नवीन व्यापार, वाहन क्रय, खेत जोतना, बीज बोना (सवेरे 9.05, से 10.40 दिन में सायं 15.15 से 18.15 के बीच)

30 नवम्बर, बुधवार - अन्नप्राशन, जीर्ण गृहप्रवेश, कूपारंभ (सूर्योदय से सवेरे 8.58)

त्रैमासिक व्रत पर्व एवं शुभ मुहूर्त
अक्टूबर से दिसंबर 2022

पं. हेमचंद्र पाण्डेय
पं. विनोद जोशी
पं. अरविन्द पाण्डेय

दिसंबर 2022 के व्रत पर्व

3 दिसंबर, शनिवार - मोक्षदा एकादशी व्रत (स्मार्त)

4 दिसंबर, रविवार - मोक्षदा एकादशी व्रत (वैष्णव)

5 दिसंबर, सोमवार - सोम प्रदोष व्रत

6 दिसंबर, मंगलवार - पिशाचमोचन चतुर्दशी

7 दिसंबर, बुधवार - श्रीदत्त जयन्ती/पूर्णिमा व्रत

8 दिसंबर, गुरुवार - स्नानदान की पूर्णिमा

9 दिसंबर, शुक्रवार - पौष कृष्णपक्ष प्रारंभ

11 दिसंबर, रविवार - संकष्टी चतुर्थी व्रत

16 दिसंबर, शुक्रवार - सूर्य की धनु संक्रांति 9/57 से संक्रान्ति पर्वकाल दोपहर 13.20

19 दिसंबर, सोमवार - सफलता एकादशी व्रत (स्मार्त एवं वैष्णव)

20 दिसंबर, मंगलवार - स्वरूप द्वादशी

21 दिसंबर, बुधवार - प्रदोष व्रत, सूर्य मकर राशि में

23 दिसंबर, शुक्रवार - स्नानदान श्राद्ध की अमावस्या

26 दिसंबर, रविवार - वैनायकी चतुर्थी व्रत

29 दिसंबर, गुरुवार - गुरुगोविंद सिंह जयन्ती

30 दिसंबर, शुक्रवार - दुर्गाष्टमी/अन्नपूर्णाष्टमी

31 दिसंबर, शनिवार - सन् 2022 का अंतिम दिवस

शुभ मुहूर्त दिसंबर 2022

2 दिसंबर, शुक्रवार - नामकरण, जातकर्म, अन्नप्राशन, जीर्ण गृहप्रवेश, कूपारंभ, गृहारंभ, नवीन व्यापार (सूर्योदय से सवेरे 10.25, दिन में 12.05 से 13.35 के बीच)

3 दिसंबर, शनिवार - गृहारंभ, भूमिपूजन, जीर्ण गृहप्रवेश (सवेरे 7.35 से 9.15 दिन में 13.30 से 16.30)

4 दिसंबर, रविवार - विद्यारंभ, वाहन क्रय (सवेरे 9.15 से दिन में 12.15)

5 दिसंबर, सोमवार - अन्नप्राशन, कर्णवेध, देवप्रतिष्ठा, जलाशय निर्माण, नवीन व्यापार, उद्यान लगाना (सवेरे 9.15 से 10.35, दिन में 15.15 से 16.45 के बीच)

7 दिसंबर, बुधवार - गृहारंभ (सूर्योदय से सवेरे 9.15 के बीच दिन में 12.05 से 13.40 के बीच)

8 दिसंबर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, नामकरण, जातकर्म, अन्नप्राशन, गृहारंभ, भूमिपूजन, देवप्रतिष्ठा, उद्यान लगाना, कूपारंभ, प्रापर्टी क्रय

9 दिसंबर, शुक्रवार - जातकर्म, नामकरण, अन्नप्राशन, कर्णवेध, विद्यारंभ, जीर्ण गृह प्रवेश, गृहारंभ, देवप्रतिष्ठा, उद्यान लगाना, कूपारंभ, प्रापर्टी क्रय (सूर्योदय से सवेरे 10.15 दिन में 12.05 से 13.40 के बीच)

12 दिसंबर, सोमवार - वाहन क्रय (दिन में 15.30 से 18.30)

15 दिसंबर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान (सवेरे 10.30 से 13.30 दिन में)

18 दिसंबर, रविवार - प्रसूति का स्नान, वाहन क्रय (सवेरे 8.55 से 11.45 के बीच)

19 दिसंबर, सोमवार - जातकर्म, नवीन व्यापार, वाहन क्रय (सवेरे 9.00 से 10.15 दिन में 15.30 से 18.15)

21 दिसंबर, बुधवार - जातकर्म, अन्नप्राशन, नवीन व्यापार (दिन में 10.40 से 12.15)

25 दिसंबर, रविवार - प्रसूति का स्नान, वाहन क्रय (सवेरे 9.15 से 12.05)

28 दिसंबर, बुधवार - जातकर्म (सूर्योदय से सवेरे 9.15)

29 दिसंबर, गुरुवार - प्रसूति का स्नान, जातकर्म, अन्नप्राशन, नवीन व्यापार (दिन में 12.05 से 13.40)

(धनु संक्रान्ति के कारण अन्य मुहूर्त नहीं है)

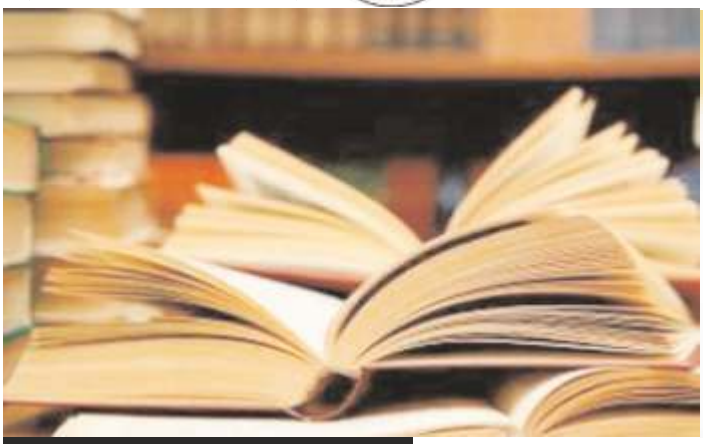

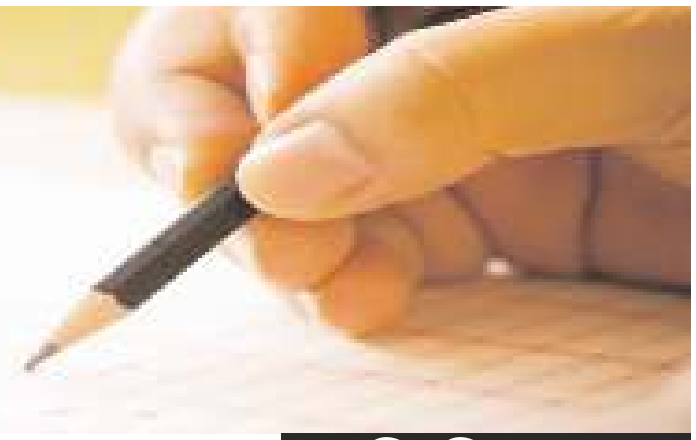

आपके पत्र

प्रतिक्रियाएं

आदरणीय श्री पांडे जी

कुछ दिनों से मेरे परिवार में जीवन वैभव एक पारिवारिक पत्रिका बन चुकी है। मेरी माताजी जीवन वैभव का बेसब्री से इंतजार करती है कुछ दिनों से मुझे पत्रिका प्राप्त नहीं हो रही है यह भी आप ज्ञात करें कि क्या पोस्ट हो रही है या नहीं

विकास पाटोदी, भोपाल

श्री पाटोदी जी आपका परिवार जीवन वैभव पढ़ता है बड़ी प्रसन्नता की बात है उससे यह स्पष्ट हो रहा है कि पत्रिका में प्रस्तुत किए गए आलेख परिवार के सभी सदस्यों के लिए उपयोगी हैं जहां तक पत्रिका नहीं प्राप्त होने का प्रश्न है त्रैमासिक होने के कारण ऐसा प्रतीत हो रहा होगा कि 2 माह व्यतीत हो जाने के बाद पत्रिका नहीं मिल पाना इसकी त्रैमासिक प्रकाशन होने का कारण है आप अपनी डाक को एक बार देख लें पत्रिका नियमित है निश्चित मिलेगी यदि आपका त्रैवार्षिक शुल्क बकाया होगा तो उसे भी नियमित करने का कष्ट करें।

सम्पादक जीवन वैभव संपादक महोदय

जीवन वैभव पत्रिका की सदस्यता के लिए क्या करना होगा कृपया बताएं।

मनीष तिवारी

आनन्द नगर भोपाल

जीवन वैभव पत्रिका को प्राप्त करने के लिए प्रत्येक अंक के पीछे एक आवेदन पत्र लगा है जिसकी पूर्ति करने के पश्चात कार्यालय को उसकी एक प्रति भेज दें तथा आवेदन पत्र में दिए गए इंडियन बैंक के जीवन वैभव खाता नंबर 50159870448 के आय एफ एस सी कोड IDIB 000B796 के अनुसार अपनी सदस्यता शुल्क को जमा करा सकते हैं। जो सदस्यता आप लेना चाहते हो वार्षिक / त्रैवार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता की राशि जमा कर पता सहित बैक की स्लीप की कापी कार्यालय भेजकर सूचित कर दें, ताकि आप को नियमित रूप से पत्रिका भेजी जासकेगी ।

सम्पादक

सम्पादक महोदय

जीवनवैभव पत्रिका देखने को मिली पत्रिका बहुत अच्छी तथा ज्योतिष विषयक जानकारी पठनीय है श्री एसएस लाल और डा पुष्पासिंह चौहान के लेख बहुत ज्ञानवर्द्धक है। मैं अपने रिश्तेदार के साथ त्रैवार्षिक शुल्क भेज रहा हूं कृपया पत्रिका नियमित भेजते रहें।

रामेश्वर शर्मा

बिरला हास्पीटल रोड उज्जैन

श्री शर्मा साहब आपको पत्रिका में प्रकाशित आलेख ज्ञानवर्धक लगे तथा आप की त्रैवार्षिक सदस्यता प्राप्त हुई धन्यवाद। आपको नियमित रूप से पत्रिका प्रेषित की जाती रहेगी इसी प्रकार से आप जीवन वैभव परिवार से कृपया नियमित रूपसे जुड़े रहे ।

सम्पादक

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु क्या करें?

जीवन वैभव पत्रिका आपकी अपनी पत्रिका है, इसे आप जैसे प्रबुद्ध पाठकों ने सराहा और इसकी प्रगति के लिए मार्गदर्शन दिया है। आपसे निवेदन है कि वार्षिक/त्रैवार्षिक/आजीवन सदस्यता की वृद्धि कर प्रचार-प्रसार संख्या बढ़ाने में सहयोग करें। सद्ज्ञान का प्रचार-प्रसार करने से समाज में धनात्मक ऊर्जा का संचार होगा जो कि एक पुण्य कार्य है। अतः पुण्यकार्य मे सहयोगी बनें।

अपने संस्थान का विज्ञापन दें

आप अपने संस्थान का विज्ञापन यदि इस त्रैमासिक एवं संग्रहणीय जीवन वैभव में देंगे तो लगातार तीन माह ही नहीं जब तक यह पत्रिका पाठक के पास सुरक्षित रहेगी, आपके संस्थान का स्मरण होता रहेगा। अतः शीघ्रता करें अपनी विज्ञापन निम्नलिखित पते पर प्रेषित करें।

अपने घर बैठे जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करें

जीवन वैभव पत्रिका प्राप्त करने के लिये आपको जीवन वैभव पत्रिका की सदस्यता हेतु आवेदन पत्र पत्रिका में से निकालकर अपना नाम पता स्पष्ट रूप से उल्लेख कर वार्षिक/त्रैवार्षिक अथवा आजीवन सदस्यता का निर्धारित शुल्क जीवन वैभव नाम से इलाहाबाद बैंक जोकि वर्तमान में इण्डियन बैंक है इसमें जीवन वैभव पत्रिका का

खाता नंबर 50159870448

खाते का नाम – जीवन वैभव

आय एफ एस सी कोड – IDIB000B796

ब्रांच कोड – 4197

MICR code – 462019018

के अनुसार खाते में राशि जमा कराकर उसकी स्लीप तथा अपना पता वाट्सएप कर देवें ताकि पत्रिका नियमित भेजी जा सके।

जीवन वैभव के सदस्यों से आग्रह

जिन सदस्यों के सदस्यता शुल्क राशि समाप्त हो गई है उनसे अनुरोध है कि उपरोक्त दर्शाए अनुसार जीवन वैभव के खाते में राशि जमाकर सदस्यता नियमित कर लें।

संपादक

जीवन वैभव

15-ए,महाराणा प्रताप नगर, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, भोपाल

संपर्क: 9425008662; **ईमेल:** hcp2002@gmail.com

जीवन वैभव की सदस्यता हेतु आवेदन

नाम .....

डाक का पूरा पता .....

.....

.....

दूरभाष/मोबाईल .....

सदस्यता ..... आजीवन/ त्रैवार्षिक/ वार्षिक

सदस्यता शुल्क का विवरण 1800/- 300/- 100/-

बैंक ड्राफ्ट क्रमांक ..... दिनांक .....

चैक क्रमांक ..... दिनांक .....

जीवन वैभव के नाम से इलाहाबाद बैंक अरेरा कॉलोनी शाखा भोपाल के खाता नं. 50159870448 में जमा की गई राशि की बैंक स्लिप की फोटो प्रति।

त्रैमासिक पत्रिका ''जीवन वैभव'' के बारे में आपकी रायः-

.....

.....

.....

.....

.....

पाठक के हस्ताक्षर

पताः

जीवन वैभव

15-ए,महाराणा प्रताप नगर

प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन-1, भोपाल

संपर्कः 9425008662

ईमेलः hcp2002@gmail.com

नोटः उपरोक्त जानकारी डाक/कोरियर/ई-मेल द्वारा प्रेषित करें। ताकि जीवन वैभव की सदस्यता देते हुए आगामी अंक की प्रति प्रेषित की जा सके।

ज्योतिष प्रश्नोत्तरी कूपन

नाम : .....

पता : .....

जन्म तारीख : .....

जन्म समय : .....

जन्म स्थान : .....

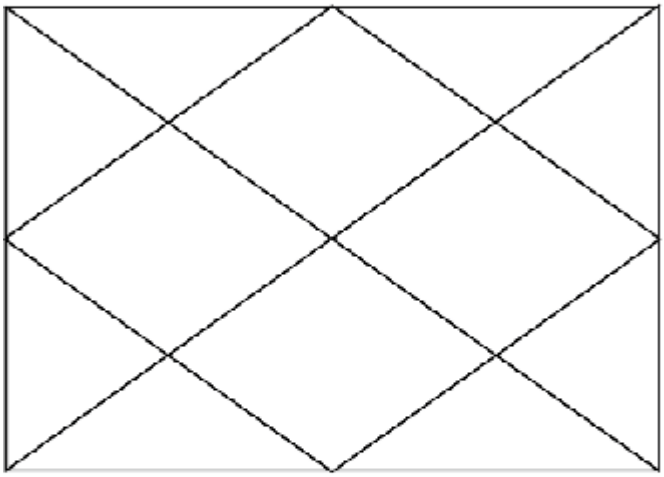

कोई एक प्रश्न .....

.....

.....

भवदीय

.....

नोटः- जीवन वैभव के विद्वान लेखकों और पाठकों के द्वारा ज्योतिष परामर्श पत्रिका के माध्यम से चाहा है हमारे द्वारा ज्योतिष परामर्श कूपन उपरोक्तानुसार दिया गया है इसकी पूर्ति करते हुए हमें प्राप्त होने पर ज्योतिष विद्वानों का एक मण्डल विचार-विमर्श उपरांत परामर्श उत्तर नाम प्रकाशित नहीं करते प्रदाय करेगा।

ज्योतिष प्रश्नोत्तरी
जीवन वैभव
15-ए, महाराणा प्रताप नगर
प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, भोपाल

परिवार के सभी सदस्यों के लिए उपयोगी
एवं मार्गदर्शक पुस्तक

सुप्रभात की अमृतवाणी

मूल्य : 50/- केवल

(शिक्षाप्रद-जीवनोपयोगी
सदुपदेशों पर आधारित पुस्तक)
लेखक - डॉ. पं. हेमचन्द पाण्डेय

नि:शुल्क पुस्तक प्राप्त करने के लिए
जीवन वैभव के त्रैवार्षिक सदस्य बनें ...
पाँच पुस्तकें प्राप्त करने के लिए
डाक खर्च देना आवश्यक नहीं।

व्यवस्थापक :
जीवन वैभव
15 ए, जोन-I, प्रेस कॉम्पलेक्स,
महाराणा प्रताप नगर, भोपाल

संपर्क : 9425008662
ईमेल : hcp2002@gmail.com

With Best Compliment From...

Adarsh Malhotra
Director
See TV
Reliable Electronic Media

Hotel Surendra Vilas

Aperpeet Business Hotel

240, Zone-1 Maharana Pratap Nagar, Bhopal 462011(M.P.)
0755- 272222, E-mail.: surendravilas@hotmail.com

Happy Diwali

Vivek Malhotra
Director
09425012507

Girija Colonisers

1st Floor Hotel Surendra Vilas, 240,
Zone-1, M.P. nagar, bhopal (M.P.)
Tel: 42714030, 4272222, Fex : 0755-2760064

जीवन वैभव ज्योतिष त्रैमासिक पत्रिका जो कि जीवन की समृद्धि के लिए गागर में सागर है–

प्रत्येक अंक में देश के सम्मानित एवं मूर्धन्य विद्वानों के शिक्षाप्रद आलेख समाविष्ट रहते है। इस पत्रिका की सदस्यता निम्नानुसार ले सकते है।

वार्षिक सदस्यता रू.100/–, त्रैवार्षिक रू. 300/–, आजीवन सदस्यता रू. 1800/–

विगत तीन वर्ष के एक साथ सजिल्द अंक 350 रू.।

उपरोक्तानुसार सदस्यता "**जीवन वैभव**" के नाम से अरेरा कॉलोनी की इण्डियन बैंक के **खाता क्र. 50159870448, आईएफएससी कोड** IDIB000B796 के अनुसार जमा कर रसीद की प्रति कार्यालय को प्रेषित करें।

- जीवन वैभव पत्रिका में विविध विषय जो कि परिवार एवं समाज के लिये उपयोगी है, इन विषयों पर सामग्री प्रकाशित की जाती है, ज्योतिष, चरित्र–निर्माण, योग, होम्योपैथी, आहार चिकित्सा, धर्म, अध्यात्म आदि। जीवन वैभव में स्थाई स्तंभ प्रत्येक अंकों में प्रकाशित होते हैं जो कि संग्रहणीय हैं।
- **वंदना', अमृतवाणी , वैभवदर्शन , गीता माता , उचितआहार, चिकित्सा , धर्मिक शिक्षाप्रद जानकारी, ज्योतिष एवं स्वास्थ्य, व्रत पर्व, विविध मुहूर्त, त्रैमासिक भविष्यफल आदि जानकारी प्रत्येक अंक में उपब्ध रहती है।**
- महापुरूषों द्वारा दिए गए आर्शीर्वचन एवं सुखी जीवन के लिए अनमोल सुझाव पृथक से बाक्स के रूप में दिये जाते हैं जो पाठकों को लाभप्रद एवं रोचक लगते हैं।
- **जीवन वैभव का प्रत्येक अंक संग्रहणीय है, तथा जीवन वैभव के उपरोक्त पुराने उपलब्ध अंक कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।**

कार्यालय का पता **व्यवस्थापक जीवन वैभव**

15 ए. प्रेस काम्प्लेक्स, जोन–1 महाराणा प्रताप नगर, भोपाल म.प्र.
संपर्क : 9425008662, ईमेल : *hcp2002@gmail.com*